Hindi: Unlocked Literal Bible for Psalms

Formatted for Translators

©2022 Wycliffe Associates

Released under a Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Bible Text: The English Unlocked Literal Bible (ULB)

©2017 Wycliffe Associates

Available at <https://bibleineverylanguage.org/translations>

The English Unlocked Literal Bible is based on the unfoldingWord® Literal Text, CC BY-SA 4.0. The original work of the unfoldingWord® Literal Text is available at [https://unfoldingword.bible/ult/](https://nam12.safelinks.protection.outlook.com/?url=https%3A%2F%2Funfoldingword.bible%2Fult%2F&data=02%7C01%7Cmarv_lucas%40wycliffeassociates.org%7Cab3b29dbe7fc44554aeb08d8080e8e70%7C7baa11086adb4be299cf00a4872ab1cf%7C0%7C0%7C637268205914531190&sdata=SW2KxVr%2BcxHGAgMpv602NzoYenorfHi9bOs2SNzVpR4%3D&reserved=0).

The ULB is licensed under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

Notes: English ULB Translation Notes

©2017 Wycliffe Associates

Available at <https://bibleineverylanguage.org/translations>

The English ULB Translation Notes is based on the unfoldingWord translationNotes, under CC BY-SA 4.0. The original unfoldingWord work is available at <https://unfoldingword.bible/utn>.

The ULB Notes is licensed under the Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License.

To view a copy of the CC BY-SA 4.0 license visit <http://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/>

Below is a human-readable summary of (and not a substitute for) the license.

**You are free to:**

* **Share**— copy and redistribute the material in any medium or format.
* **Adapt**— remix, transform, and build upon the material for any purpose, even commercially.

The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.

**Under the following conditions:**

* **Attribution**— You must attribute the work as follows: “Original work available at <https://BibleInEveryLanguage.org>.” Attribution statements in derivative works should not in any way suggest that we endorse you or your use of this work.
* **ShareAlike**— If you remix, transform, or build upon the material, you must distribute your contributions under the same license as the original.
* **No additional restrictions**— You may not apply legal terms or technological measures that legally restrict others from doing anything the license permits.

**Notices:**

You do not have to comply with the license for elements of the material in the public domain or where your use is permitted by an applicable exception or limitation.

No warranties are given. The license may not give you all of the permissions necessary for your intended use. For example, other rights such as publicity, privacy, or moral rights may limit how you use the material.

A picture containing text, clipart

Description automatically generated

TOC \o "1-2" \h \z \uRight-click to update field (doing so will insert table of contents).

Page left intentionally blank

## भजन संहिता

Chapter 1  
पहला भागभजन 1—41परमेश्‍वर की व्यवस्था में सच्चा सुख

1क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की योजना पर\* नहीं चलता,और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता;और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है!2परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्‍न रहता;और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन ध्यान करता रहता है।3वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती पानी की धाराओं के किनारे लगाया गया है\*और अपनी ऋतु में फलता है,और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं।और जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।4दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते,वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है।5इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे,और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे;6क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है,परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा।

Chapter 2  
पुत्र का राज्याभिषेक1जाति-जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं,और देश-देश के लोग क्यों षड्‍यंत्र रचते हैं?2यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजागण मिलकर,और हाकिम आपस में षड्‍यंत्र रचकर, कहते हैं, (प्रका. 11:18, प्रेरि. 4:25,26, प्रका. 19:19)3“आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें\*,और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से उतार फेंके।”4वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हँसेगा\*,प्रभु उनको उपहास में उड़ाएगा।5तब वह उनसे क्रोध में बातें करेगा,और क्रोध में यह कहकर उन्हें भयभीत कर देगा,6“मैंने तो अपने चुने हुए राजा को,अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर नियुक्त किया है।”7मैं उस वचन का प्रचार करूँगा:जो यहोवा ने मुझसे कहा, “तू मेरा पुत्र है;आज मैं ही ने तुझे जन्माया है। (मत्ती 3:17, मत्ती 17:5, मर. 1:11, मर. 9:7, लूका 3:22, लूका 9:35, यूह. 1:49, प्रेरि. 13:33, इब्रा. 1:5, इब्रा. 5:5, 2 पत. 1:17)8मुझसे माँग, और मैं जाति-जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये,और दूर-दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिये दे दूँगा\*। (इब्रा. 1:2)9तू उन्हें लोहे के डण्डे से टुकड़े-टुकड़े करेगा।तू कुम्हार के बर्तन के समान उन्हें चकना चूर कर डालेगा।” (प्रका. 2:27, प्रका. 12:5, प्रका. 19:15)  
  
10इसलिए अब, हे राजाओं, बुद्धिमान बनो;हे पृथ्वी के शासकों, सावधान हो जाओ।11डरते हुए यहोवा की उपासना करो,और काँपते हुए मगन हो। (फिलि. 2:12)12पुत्र को चूमो ऐसा न हो कि वह क्रोध करे,और तुम मार्ग ही में नाश हो जाओ,क्योंकि क्षण भर में उसका क्रोध भड़कने को है।धन्य है वे जो उसमें शरण लेते है।

Chapter 3  
संकट के समय आत्मविश्वासदाऊद का भजन। जब वह अपने पुत्र अबशालोम के सामने से भागा जाता था  
  
1हे यहोवा मेरे सतानेवाले कितने बढ़ गए हैं!वे जो मेरे विरुद्ध उठते हैं बहुत हैं।2बहुत से मेरे विषय में कहते हैं,कि उसका बचाव परमेश्‍वर की ओर से नहीं हो सकता\*। (सेला)3परन्तु हे यहोवा, तू तो मेरे चारों ओर मेरी ढाल है,तू मेरी महिमा और मेरे मस्तक का ऊँचा करनेवाला है\*।4मैं ऊँचे शब्द से यहोवा को पुकारता हूँ,और वह अपने पवित्र पर्वत पर से मुझे उत्तर देता है। (सेला)5मैं लेटकर सो गया;फिर जाग उठा, क्योंकि यहोवा मुझे संभालता है।6मैं उस भीड़ से नहीं डरता,जो मेरे विरुद्ध चारों ओर पाँति बाँधे खड़े हैं।7उठ, हे यहोवा! हे मेरे परमेश्‍वर मुझे बचा ले!क्योंकि तूने मेरे सब शत्रुओं के जबड़ों पर मारा है।और तूने दुष्टों के दाँत तोड़ डाले हैं।8उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है\*;हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो।

Chapter 4  
परमेश्‍वर पर भरोसाप्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ। दाऊद का भजन  
  
1हे मेरे धर्ममय परमेश्‍वर, जब मैं पुकारूँ तब तू मुझे उत्तर दे;जब मैं संकट में पड़ा तब तूने मुझे सहारा दिया।मुझ पर अनुग्रह कर और मेरी प्रार्थना सुन ले।2हे मनुष्यों, कब तक मेरी महिमा का अनादर होता रहेगा?तुम कब तक व्यर्थ बातों से प्रीति रखोगे और झूठी युक्ति की खोज में रहोगे? (सेला)3यह जान रखो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये अलग कर रखा है\*;जब मैं यहोवा को पुकारूँगा तब वह सुन लेगा।4काँपते रहो और पाप मत करो;अपने-अपने बिछौने पर मन ही मन में ध्यान करो और चुपचाप रहो। (सेला)(इफि. 4:26)5धार्मिकता के बलिदान चढ़ाओ,और यहोवा पर भरोसा रखो।6बहुत से हैं जो कहते हैं, “कौन हमको कुछ भलाई दिखाएगा?”हे यहोवा, तू अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका!7तूने मेरे मन में उससे कहीं अधिक आनन्द भर दिया है,जो उनको अन्न और दाखमधु की बढ़ती से होता है।8मैं शान्ति से लेट जाऊँगा और सो जाऊँगा;क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को निश्चिन्त रहने देता है।

Chapter 5  
मार्गदर्शन की प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये: बांसुरियों के साथ, दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मेरे वचनों पर कान लगा;मेरे कराहने की ओर ध्यान लगा।2हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्‍वर, मेरी दुहाई पर ध्यान दे,क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूँ।3हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तुझे सुनाई देगी,मैं भोर को प्रार्थना करके तेरी बाट जोहूँगा।4क्योंकि तू ऐसा परमेश्‍वर है, जो दुष्टता से प्रसन्‍न नहीं होता;बुरे लोग तेरे साथ नहीं रह सकते।5घमण्डी तेरे सम्मुख खड़े होने न पाएँगे;तुझे सब अनर्थकारियों से घृणा है।6तू उनको जो झूठ बोलते हैं नाश करेगा;यहोवा तो हत्यारे और छली मनुष्य से घृणा करता है\*।7परन्तु मैं तो तेरी अपार करुणा के कारण तेरे भवन में आऊँगा,मैं तेरा भय मानकर तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूँगा।8हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण अपने धार्मिकता के मार्ग में मेरी अगुआई कर;मेरे आगे-आगे अपने सीधे मार्ग को दिखा।9क्योंकि उनके मुँह में कोई सच्चाई नहीं;उनके मन में निरी दुष्टता है।उनका गला खुली हुई कब्र है\*,वे अपनी जीभ से चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं। (रोम. 3:13)10हे परमेश्‍वर तू उनको दोषी ठहरा;वे अपनी ही युक्तियों से आप ही गिर जाएँ;उनको उनके अपराधों की अधिकाई के कारण निकाल बाहर कर,क्योंकि उन्होंने तुझ से बलवा किया है।11परन्तु जितने तुझ में शरण लेते हैं वे सब आनन्द करें,वे सर्वदा ऊँचे स्वर से गाते रहें; क्योंकि तू उनकी रक्षा करता है,और जो तेरे नाम के प्रेमी हैं तुझ में प्रफुल्लित हों।12क्योंकि तू धर्मी को आशीष देगा; हे यहोवा,तू उसको ढाल के समान अपनी कृपा से घेरे रहेगा।

Chapter 6  
दया के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ। खर्ज की राग में, दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, तू मुझे अपने क्रोध में न डाँट\*,और न रोष में मुझे ताड़ना दे।2हे यहोवा, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं कुम्हला गया हूँ;हे यहोवा, मुझे चंगा कर, क्योंकि मेरी हड्डियों में बेचैनी है।3मेरा प्राण भी बहुत खेदित है।और तू, हे यहोवा, कब तक? (यूह. 12:27)4लौट आ, हे यहोवा\*, और मेरे प्राण बचा;अपनी करुणा के निमित्त मेरा उद्धार कर।5क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता;अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा?6मैं कराहते-कराहते थक गया;मैं अपनी खाट आँसुओं से भिगोता हूँ;प्रति रात मेरा बिछौना भीगता है।7मेरी आँखें शोक से बैठी जाती हैं,और मेरे सब सतानेवालों के कारण वे धुँधला गई हैं।8हे सब अनर्थकारियों मेरे पास से दूर हो;क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है। (मत्ती7:23, लूका 13:27)9यहोवा ने मेरा गिड़गिड़ाना सुना है\*;यहोवा मेरी प्रार्थना को ग्रहण भी करेगा।10मेरे सब शत्रु लज्जित होंगे और बहुत ही घबराएँगे;वे पराजित होकर पीछे हटेंगे, और एकाएक लज्जित होंगे।

Chapter 7  
न्याय के लिये प्रार्थना दाऊद का शिग्गायोन नामक भजनजो बिन्यामीनी कूश की बातों के कारण यहोवा के सामने गाया  
  
1हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा, मैं तुझ में शरण लेता हुँ;सब पीछा करनेवालों से मुझे बचा और छुटकारा दे,2ऐसा न हो कि वे मुझ को सिंह के समानफाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालें;और कोई मेरा छुड़ानेवाला न हो।3हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा, यदि मैंने यह किया हो,यदि मेरे हाथों से कुटिल काम हुआ हो,4यदि मैंने अपने मेल रखनेवालों से भलाई के बदले बुराई की हो,या मैंने उसको जो अकारण मेरा बैरी था लूटा है5तो शत्रु मेरे प्राण का पीछा करके मुझे आ पकड़े\*,और मेरे प्राण को भूमि पर रौंदे,और मुझे अपमानित करके मिट्टी में मिला दे। (सेला)6हे यहोवा अपने क्रोध में उठ;क्रोध से भरे मेरे सतानेवाले के विरुद्ध तू खड़ा हो जा;मेरे लिये जाग! तूने न्याय की आज्ञा दे दी है।7देश-देश के लोग तेरे चारों ओर इकट्ठे हुए है;तू फिर से उनके ऊपर विराजमान हो।8यहोवा जाति-जाति का न्याय करता है;यहोवा मेरी धार्मिकता और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे।9भला हो कि दुष्टों की बुराई का अन्त हो जाए, परन्तु धर्मी को तू स्थिर कर;क्योंकि धर्मी परमेश्‍वर मन और मर्म का ज्ञाता है।10मेरी ढाल परमेश्‍वर के हाथ में है,वह सीधे मनवालों को बचाता है।11परमेश्‍वर धर्मी और न्यायी है\*,वरन् ऐसा परमेश्‍वर है जो प्रतिदिन क्रोध करता है।12यदि मनुष्य मन न फिराए तो वह अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा;और युद्ध के लिए अपना धनुष तैयार करेगा। (लूका 13:3-5)13और उस मनुष्य के लिये उसने मृत्यु के हथियार तैयार कर लिए हैं\*:वह अपने तीरों को अग्निबाण बनाता है।14देख दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़ाएँ हो रही हैं,उसको उत्पात का गर्भ है, और उससे झूठ का जन्म हुआ।15उसने गड्ढे खोदकर उसे गहरा किया,और जो खाई उसने बनाई थी उसमें वह आप ही गिरा।16उसका उत्पात पलटकर उसी के सिर पर पड़ेगा;और उसका उपद्रव उसी के माथे पर पड़ेगा।17मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका धन्यवाद करूँगा,और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊँगा।

Chapter 8  
परमेश्‍वर की महिमा और मनुष्य का गौरवप्रधान बजानेवालों के लिये गित्तीत की राग पर दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है!तूने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है।2तूने अपने बैरियों के कारण बच्चों और शिशुओं के द्वारा अपनी प्रशंसा की है,ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों को रोक रखे। (मत्ती 21:16)3जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है,और चंद्रमा और तरागण को जो तूने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ;4तो फिर मनुष्य क्या है\* कि तू उसका स्मरण रखे,और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?5क्योंकि तूने उसको परमेश्‍वर से थोड़ा ही कम बनाया है,और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है।6तूने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है;तूने उसके पाँव तले सब कुछ कर दिया है\*। (1 कुरि. 15:27, इफि. 1:22, इब्रा. 2:6-8, प्रेरि. 17:31)7सब भेड़-बकरी और गाय-बैलऔर जितने वन पशु हैं,8आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियाँ,और जितने जीव-जन्तु समुद्रों में चलते-फिरते हैं।9हे यहोवा, हे हमारे प्रभु,तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है।

Chapter 9  
विजय के लिये धन्यवादप्रधान बजानेवाले के लिये मुतलबैयन कि राग पर दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा परमेश्‍वर मैं अपने पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा;मैं तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूँगा।2मैं तेरे कारण आनन्दित और प्रफुल्लित होऊँगा,हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊँगा।3मेरे शत्रु पराजित होकर पीछे हटते हैं,वे तेरे सामने से ठोकर खाकर नाश होते हैं।4तूने मेरे मुकद्दमें का न्याय मेरे पक्ष में किया है\*;तूने सिंहासन पर विराजमान होकर धार्मिकता से न्याय किया।5तूने जाति-जाति को झिड़का और दुष्ट को नाश किया है;तूने उनका नाम अनन्तकाल के लिये मिटा दिया है।6शत्रु अनन्तकाल के लिये उजड़ गए हैं;उनके नगरों को तूने ढा दिया,और उनका नाम और निशान भी मिट गया है।7परन्तु यहोवा सदैव सिंहासन पर विराजमान है\*,उसने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है;8और वह जगत का न्याय धर्म से करेगा,वह देश-देश के लोगों का मुकद्दमा खराई से निपटाएगा। (भज. 96:13, प्रेरि. 17:31)9यहोवा पिसे हुओं के लिये ऊँचा गढ़ ठहरेगा,वह संकट के समय के लिये भी ऊँचा गढ़ ठहरेगा।10और तेरे नाम के जाननेवाले तुझ पर भरोसा रखेंगे,क्योंकि हे यहोवा तूने अपने खोजियों को त्याग नहीं दिया।11यहोवा जो सिय्योन में विराजमान है, उसका भजन गाओ!जाति-जाति के लोगों के बीच में उसके महाकर्मों का प्रचार करो!12क्योंकि खून का पलटा लेनेवाला उनको स्मरण करता है;वह पिसे हुओं की दुहाई को नहीं भूलता।13हे यहोवा, मुझ पर दया कर। देख, मेरे बैरी मुझ पर अत्याचार कर रहे है,तू ही मुझे मृत्यु के फाटकों से बचा सकता है;14ताकि मैं सिय्योन के फाटकों के पास तेरे सब गुणों का वर्णन करूँ,और तेरे किए हुए उद्धार से मगन होऊँ।15अन्य जातिवालों ने जो गड्ढा खोदा था, उसी में वे आप गिर पड़े;जो जाल उन्होंने लगाया था, उसमें उन्हीं का पाँव फंस गया।16यहोवा ने अपने को प्रगट किया, उसने न्याय किया है;दुष्ट अपने किए हुए कामों में फंस जाता है। (हिग्गायोन\*, सेला)17दुष्ट अधोलोक में लौट जाएँगे,तथा वे सब जातियाँ भी जो परमेश्‍वर को भूल जाती है।18क्योंकि दरिद्र लोग अनन्तकाल तक बिसरे हुए न रहेंगे,और न तो नम्र लोगों की आशा सर्वदा के लिये नाश होगी।19हे यहोवा, उठ, मनुष्य प्रबल न होने पाए!जातियों का न्याय तेरे सम्मुख किया जाए।20हे यहोवा, उनको भय दिला!जातियाँ अपने को मनुष्यमात्र ही जानें। (सेला)

Chapter 10  
न्याय के लिये प्रार्थना1हे यहोवा तू क्यों दूर खड़ा रहता है?संकट के समय में क्यों छिपा रहता है\*?2दुष्टों के अहंकार के कारण दीन पर अत्याचार होते है;वे अपनी ही निकाली हुई युक्तियों में फंस जाएँ।3क्योंकि दुष्ट अपनी अभिलाषा पर घमण्ड करता है,और लोभी यहोवा को त्याग देता है और उसका तिरस्कार करता है।4दुष्ट अपने अहंकार में परमेश्‍वर को नहीं खोजता;उसका पूरा विचार यही है कि कोई परमेश्‍वर है ही नहीं।5वह अपने मार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है;तेरे धार्मिकता के नियम उसकी दृष्टि से बहुत दूर ऊँचाई पर हैं,जितने उसके विरोधी हैं उन पर वह फुँकारता है।6वह अपने मन में कहता है\* कि “मैं कभी टलने का नहीं;मैं पीढ़ी से पीढ़ी तक दुःख से बचा रहूँगा।”7उसका मुँह श्राप और छल और धमकियों से भरा है;उत्पात और अनर्थ की बातें उसके मुँह में हैं। (रोम. 3:14)8वह गाँवों में घात में बैठा करता है,और गुप्त स्थानों में निर्दोष को घात करता है,उसकी आँखें लाचार की घात में लगी रहती है।9वह सिंह के समान झाड़ी में छिपकर घात में बैठाता है;वह दीन को पकड़ने के लिये घात लगाता है,वह दीन को जाल में फँसाकर पकड़ लेता है।10लाचार लोगों को कुचला और पीटा जाता है,वह उसके मजबूत जाल में गिर जाते हैं।11वह अपने मन में सोचता है, “परमेश्‍वर भूल गया,वह अपना मुँह छिपाता है; वह कभी नहीं देखेगा।”12उठ, हे यहोवा; हे परमेश्‍वर, अपना हाथ बढ़ा और न्याय कर;और दीनों को न भूल।13परमेश्‍वर को दुष्ट क्यों तुच्छ जानता है,और अपने मन में कहता है “तू लेखा न लेगा?”14तूने देख लिया है, क्योंकि तू उत्पात और उत्पीड़न पर दृष्टि रखता है, ताकि उसका पलटा अपने हाथ में रखे;लाचार अपने आप को तुझे सौंपता है;अनाथों का तू ही सहायक रहा है।15दुर्जन और दुष्ट की भूजा को तोड़ डाल;उनकी दुष्‍टता का लेखा ले, जब तक कि सब उसमें से दूर न हो जाए।16यहोवा अनन्तकाल के लिये महाराज है;उसके देश में से जाति-जाति लोग नाश हो गए हैं। (रोम. 11:26,27)17हे यहोवा, तूने नम्र लोगों की अभिलाषा सुनी है;तू उनका मन दृढ़ करेगा, तू कान लगाकर सुनेगा18कि अनाथ और पिसे हुए का न्याय करे,ताकि मनुष्य जो मिट्टी से बना है\* फिर भय दिखाने न पाए।

Chapter 11  
परमेश्‍वर पर भरोसाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1मैं यहोवा में शरण लेता हूँ;तुम क्यों मेरे प्राण से कहते हो“पक्षी के समान अपने पहाड़ पर उड़ जा”\*;2क्योंकि देखो, दुष्ट अपना धनुष चढ़ाते हैं,और अपने तीर धनुष की डोरी पर रखते हैं,कि सीधे मनवालों पर अंधियारे में तीर चलाएँ।3यदि नींवें ढा दी जाएँ\*तो धर्मी क्या कर सकता है?4यहोवा अपने पवित्र भवन में है;यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है;उसकी आँखें मनुष्य की सन्तान को नित देखती रहती हैंऔर उसकी पलकें उनको जाँचती हैं।5यहोवा धर्मी और दुष्ट दोनों को परखता है,परन्तु जो उपद्रव से प्रीति रखते हैंउनसे वह घृणा करता है।6वह दुष्टों पर आग और गन्धक बरसाएगा;और प्रचण्ड लूह उनके कटोरों में बाँट दी जाएँगी।7क्योंकि यहोवा धर्मी है,वह धार्मिकता के ही कामों से प्रसन्‍न रहता है;धर्मीजन उसका दर्शन पाएँगे।

Chapter 12  
दुष्ट द्वारा उत्पीड़न और परमेश्‍वर द्वारा स्थिरप्रधान बजानेवाले के लिये खर्ज की राग में दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा;मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग लुप्त‍ हो गए हैं।2प्रत्येक मनुष्य अपने पड़ोसी से झूठी बातें कहता है;वे चापलूसी के होंठों से दो रंगी बातें करते हैं।3यहोवा सब चापलूस होंठों कोऔर उस जीभ को जिससे बड़ा बोल निकलता है\* काट डालेगा।4वे कहते हैं, “हम अपनी जीभ ही से जीतेंगे,हमारे होंठ हमारे ही वश में हैं; हम पर कौन शासन कर सकेगा?”5दीन लोगों के लुट जाने, और दरिद्रों के कराहने के कारण,यहोवा कहता है, “अब मैं उठूँगा, जिस परवे फुँकारते हैं उसे मैं चैन विश्राम दूँगा।”6यहोवा का वचन पवित्र है,उस चाँदी के समान जो भट्ठी में मिट्टी पर ताई गई,और सात बार निर्मल की गई हो\*।7तू ही हे यहोवा उनकी रक्षा करेगा,उनको इस काल के लोगों से सर्वदा के लिये बचाए रखेगा।8जब मनुष्यों में बुराई का आदर होता है,तब दुष्ट लोग चारों ओर अकड़ते फिरते हैं।

Chapter 13  
उद्धार के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर, तू कब तक? क्या सदैव मुझे भूला रहेगा?तू कब तक अपना मुखड़ा मुझसे छिपाए रखेगा?2मैं कब तक अपने मन ही मन में युक्तियाँ करता रहूँ,और दिन भर अपने हृदय में दुःखित रहा करूँ\*?,कब तक मेरा शत्रु मुझ पर प्रबल रहेगा?3हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे,मेरी आँखों में ज्योति आने दे\*, नहीं तो मुझे मृत्यु की नींद आ जाएगी;4ऐसा न हो कि मेरा शत्रु कहे, “मैं उस पर प्रबल हो गया;”और ऐसा न हो कि जब मैं डगमगाने लगूँ तो मेरे शत्रु मगन हों।5परन्तु मैंने तो तेरी करुणा पर भरोसा रखा है;मेरा हृदय तेरे उद्धार से मगन होगा।6मैं यहोवा के नाम का भजन गाऊँगा,क्योंकि उसने मेरी भलाई की है।

Chapter 14  
पापियों का एक चित्रप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1मूर्ख ने\* अपने मन में कहा है, “कोई परमेश्‍वर है ही नहीं।”वे बिगड़ गए, उन्होंने घिनौने काम किए हैं,कोई सुकर्मी नहीं।2यहोवा ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की हैकि देखे कि कोई बुद्धिमान,कोई यहोवा का खोजी है या नहीं।3वे सब के सब भटक गए, वे सब भ्रष्ट हो गए;कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं। (रोमी. 3:10-11)4क्या किसी अनर्थकारी को कुछ भी ज्ञान नहीं रहता,जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी,और यहोवा का नाम नहीं लेते?5वहाँ उन पर भय छा गया,क्योंकि परमेश्‍वर धर्मी लोगों के बीच में निरन्तर रहता है।6तुम तो दीन की युक्ति की हँसी उड़ाते होपरन्तु यहोवा उसका शरणस्थान है।7भला हो कि इस्राएल का उद्धार सिय्योन से\* प्रगट होता!जब यहोवा अपनी प्रजा को दासत्व से लौटा ले आएगा,तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा। (भज. 53:6, लूका 1:69)

Chapter 15  
धर्मी का विवरणदाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा तेरे तम्बू में कौन रहेगा?तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा?2वह जो सिधाई से चलता और धर्म के काम करता है,और हृदय से सच बोलता है;3जो अपनी जीभ से अपमान नहीं करता,और न अन्य लोगों की बुराई करता,और न अपने पड़ोसी का अपमान सुनता है;4वह जिसकी दृष्टि में निकम्मा मनुष्य तुच्छ है,पर जो यहोवा के डरवैयों का आदर करता है,जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठाना पड़े;5जो अपना रुपया ब्याज पर नहीं देता,और निर्दोष की हानि करने के लिये घूस नहीं लेता है।जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा।

Chapter 16  
परमेश्‍वर मेरा भागदाऊद का मिक्ताम  
  
1हे परमेश्‍वर मेरी रक्षा कर,क्योंकि मैं तेरा ही शरणागत हूँ।2मैंने यहोवा से कहा, “तू ही मेरा प्रभु है;तेरे सिवा मेरी भलाई कहीं नहीं।”3पृथ्वी पर जो पवित्र लोग हैं,वे ही आदर के योग्य हैं,और उन्हीं से मैं प्रसन्‍न हूँ।4जो पराए देवता के पीछे भागते हैं उनका दुःख बढ़ जाएगा;मैं उन्हें लहूवाले अर्घ नहीं चढ़ाऊँगाऔर उनका नाम अपने होंठों से नहीं लूँगा\*।5यहोवा तू मेरा चुना हुआ भाग और मेरा कटोरा है;मेरे भाग को तू स्थिर रखता है।6मेरे लिये माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी,और मेरा भाग मनभावना है।7मैं यहोवा को धन्य कहता हूँ,क्योंकि उसने मुझे सम्मति दी है;वरन् मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है।8मैंने यहोवा को निरन्तर अपने सम्मुख रखा है\*:इसलिए कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है मैं कभी न डगमगाऊँगा।9इस कारण मेरा हृदय आनन्दितऔर मेरी आत्मा मगन हुई;मेरा शरीर भी चैन से रहेगा।10क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा,न अपने पवित्र भक्त को कब्र में सड़ने देगा।11तू मुझे जीवन का रास्ता दिखाएगा;तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है,तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है। (प्रेरि.2:25-28)

Chapter 17  
संरक्षण के लिये प्रार्थनादाऊद की प्रार्थना  
  
1हे यहोवा परमेश्‍वर सच्चाई के वचन सुन, मेरी पुकार की ओर ध्यान देमेरी प्रार्थना की ओर जो निष्कपट मुँह से निकलती है कान लगा!2मेरे मुकद्दमें का निर्णय तेरे सम्मुख हो!तेरी आँखें न्याय पर लगी रहें!3यदि तू मेरे हृदय को जाँचता; यदि तू रात को मेरा परीक्षण करता,यदि तू मुझे परखता तो कुछ भी खोटापन नहीं पाता;मेरे मुँह से अपराध की बात नहीं निकलेगी।4मानवीय कामों में मैंने तेरे मुँह के वचनों के द्वारा\*अधर्मियों के मार्ग से स्वयं को बचाए रखा।5मेरे पाँव तेरे पथों में स्थिर रहे, फिसले नहीं।6हे परमेश्‍वर, मैंने तुझ से प्रार्थना की है, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा।अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी विनती सुन ले।7तू जो अपने दाहिने हाथ के द्वारा अपनेशरणागतों को उनके विरोधियों से बचाता है,अपनी अद्भुत करुणा दिखा।8अपनी आँखों की पुतली के समान सुरक्षित रख\*;अपने पंखों के तले मुझे छिपा रख,9उन दुष्टों से जो मुझ पर अत्याचार करते हैं,मेरे प्राण के शत्रुओं से जो मुझे घेरे हुए हैं।10उन्होंने अपने हृदयों को कठोर किया है;उनके मुँह से घमण्ड की बातें निकलती हैं।11उन्होंने पग-पग पर मुझ को घेरा है;वे मुझ को भूमि पर पटक देने के लियेघात लगाए हुए हैं।12वह उस सिंह के समान है जो अपने शिकार की लालसा करता है,और जवान सिंह के समान घात लगाने के स्थानों में बैठा रहता है।13उठ, हे यहोवा!उसका सामना कर और उसे पटक दे!अपनी तलवार के बल से मेरे प्राण को दुष्ट से बचा ले।14अपना हाथ बढ़ाकर हे यहोवा, मुझे मनुष्यों से बचा,अर्थात् सांसारिक मनुष्यों से जिनका भाग इसी जीवन में है,और जिनका पेट तू अपने भण्डार से भरता है\*।वे बाल-बच्चों से सन्तुष्ट हैं; और शेष सम्पत्ति अपने बच्चों के लिये छोड़ जाते हैं।15परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूँगाजब मैं जागूँगा तब तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट होऊँगा। (भज. 4:6-7,1 यहू. 3:2)

Chapter 18  
दाऊद का मुक्तिगानप्रधान बजानेवाले के लिये। यहोवा के दास दाऊद का गीत, जिसके वचन उसने यहोवा के लिये उस समय गाया जब यहोवा ने उसको उसके सारे शत्रुओं के हाथ से, और शाऊल के हाथ से बचाया था, उसने कहा  
  
1हे यहोवा, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करता हूँ।2यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है;मेरा परमेश्‍वर, मेरी चट्टान है, जिसका मैं शरणागत हूँ,वह मेरी ढाल और मेरी उद्धार का सींग,और मेरा ऊँचा गढ़ है। (इब्रा. 2:13)3मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूँगा;इस प्रकार मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊँगा।4मृत्यु की रस्सियों से मैं चारों ओर से घिर गया हूँ\*,और अधर्म की बाढ़ ने मुझ को भयभीत कर दिया; (भज. 116:3)5अधोलोक की रस्सियाँ मेरे चारों ओर थीं,और मृत्यु के फंदे मुझ पर आए थे।6अपने संकट में मैंने यहोवा परमेश्‍वर को पुकारा;मैंने अपने परमेश्‍वर की दुहाई दी।और उसने अपने मन्दिर\* में से मेरी वाणी सुनी।और मेरी दुहाई उसके पास पहुँचकर उसके कानों में पड़ी।7तब पृथ्वी हिल गई, और काँप उठीऔर पहाड़ों की नींव कँपित होकर हिल गईक्योंकि वह अति क्रोधित हुआ था।8उसके नथनों से धुआँ निकला,और उसके मुँह से आग निकलकर भस्म करने लगी;जिससे कोएले दहक उठे।9वह स्वर्ग को नीचे झुकाकर उतर आया;और उसके पाँवों तले घोर अंधकार था।10और वह करूब पर सवार होकर उड़ा,वरन् पवन के पंखों पर सवारी करके वेग से उड़ा।11उसने अंधियारे को अपने छिपने का स्थानऔर अपने चारों ओर आकाश की काली घटाओं का मण्डप बनाया।12उसके आगे बिजली से,ओले और अंगारे गिर पड़े।13तब यहोवा आकाश में गरजा,परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई और ओले और अंगारों को भेजा।14उसने अपने तीर चला-चलाकर शत्रुओं को तितर-बितर किया;वरन् बिजलियाँ गिरा-गिराकर उनको परास्त किया।15तब जल के नाले देख पड़े, और जगत की नींव प्रगट हुई,यह तो यहोवा तेरी डाँट से\*,और तेरे नथनों की साँस की झोंक से हुआ।16उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया,और गहरे जल में से खींच लिया।17उसने मेरे बलवन्त शत्रु से,और उनसे जो मुझसे घृणा करते थे,मुझे छुड़ाया; क्योंकि वे अधिक सामर्थी थे।18मेरे संकट के दिन वे मेरे विरुद्ध आएपरन्तु यहोवा मेरा आश्रय था।19और उसने मुझे निकालकर चौड़े स्थान में पहुँचाया,उसने मुझ को छुड़ाया, क्योंकि वह मुझसे प्रसन्‍न था।20यहोवा ने मुझसे मेरी धार्मिकता के अनुसार व्यवहार किया;और मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार उसनेमुझे बदला दिया।21क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा,और दुष्टता के कारण अपने परमेश्‍वर से दूर न हुआ।22क्योंकि उसके सारे निर्णय मेरे सम्मुख बने रहेऔर मैंने उसकी विधियों को न त्यागा।23और मैं उसके सम्मुख सिद्ध बना रहा,और अधर्म से अपने को बचाए रहा।24यहोवा ने मुझे मेरी धार्मिकता के अनुसार बदला दिया,और मेरे हाथों की उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था।25विश्वासयोग्य के साथ तू अपने को विश्वासयोग्य दिखाता;और खरे पुरुष के साथ तू अपने को खरा दिखाता है।26शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता,और टेढ़े के साथ तू तिरछा बनता है।27क्योंकि तू दीन लोगों को तो बचाता है;परन्तु घमण्ड भरी आँखों को नीची करता है।28हाँ, तू ही मेरे दीपक को जलाता है;मेरा परमेश्‍वर यहोवा मेरे अंधियारे कोउजियाला कर देता है।29क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूँ;और अपने परमेश्‍वर की सहायता से शहरपनाह को लाँघ जाता हूँ।30परमेश्‍वर का मार्ग सिद्ध है;यहोवा का वचन ताया हुआ है;वह अपने सब शरणागतों की ढाल है।31यहोवा को छोड़ क्या कोई परमेश्‍वर है?हमारे परमेश्‍वर को छोड़ क्या और कोई चट्टान है?32यह वही परमेश्‍वर है, जो सामर्थ्य से मेरा कटिबन्ध बाँधता है,और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है।33वही मेरे पैरों को हिरनी के पैरों के समान बनाता है,और मुझे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है।34वह मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है,इसलिए मेरी बाहों से पीतल का धनुष झुक जाता है।35तूने मुझ को अपने बचाव की ढाल दी है,तू अपने दाहिने हाथ से मुझे सम्भाले हुए है,और तेरी नम्रता ने मुझे महान बनाया है।36तूने मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा कर दिया\*,और मेरे पैर नहीं फिसले।37मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा;और जब तब उनका अन्त न करूँ तब तक न लौटूँगा।38मैं उन्हें ऐसा बेधूँगा कि वे उठ न सकेंगे;वे मेरे पाँवों के नीचे गिर जायेंगे।39क्योंकि तूने युद्ध के लिये मेरी कमर मेंशक्ति का पटुका बाँधा है;और मेरे विरोधियों को मेरे सम्मुख नीचा कर दिया।40तूने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर फेर दी;ताकि मैं उनको काट डालूँ जो मुझसे द्वेष रखते हैं।41उन्होंने दुहाई तो दी परन्तु उन्हें कोई बचानेवाला न मिला,उन्होंने यहोवा की भी दुहाई दी,परन्तु उसने भी उनको उत्तर न दिया।42तब मैंने उनको कूट-कूटकर पवन से उड़ाईहुई धूल के समान कर दिया;मैंने उनको मार्ग के कीचड़ के समान निकाल फेंका।43तूने मुझे प्रजा के झगड़ों से भी छुड़ाया;तूने मुझे अन्यजातियों का प्रधान बनाया है;जिन लोगों को मैं जानता भी न था वे मेरीसेवा करते है।44मेरा नाम सुनते ही वे मेरी आज्ञा का पालन करेंगे;परदेशी मेरे वश में हो जाएँगे।45परदेशी मुर्झा जाएँगे,और अपने किलों में से थरथराते हुए निकलेंगे।46यहोवा परमेश्‍वर जीवित है; मेरी चट्टान धन्य है;और मेरे मुक्तिदाता परमेश्‍वर की बड़ाई हो।47धन्य है मेरा पलटा लेनेवाला परमेश्‍वर!जिसने देश-देश के लोगों को मेरे वश में कर दिया है;48और मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है;तू मुझ को मेरे विरोधियों से ऊँचा करता,और उपद्रवी पुरुष से बचाता है।49इस कारण मैं जाति-जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूँगा,और तेरे नाम का भजन गाऊँगा।50वह अपने ठहराए हुए राजा को महान विजय देता है,वह अपने अभिषिक्त दाऊद परऔर उसके वंश पर युगानुयुग करुणा करता रहेगा।

Chapter 19  
सृष्टि द्वारा सृष्टिकर्ता की महिमा का वर्णनप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1आकाश परमेश्‍वर की महिमा वर्णन करता है;और आकाश मण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट करता है।2दिन से दिन बातें करता है,और रात को रात ज्ञान सिखाती है।3न तो कोई बोली है और न कोई भाषा;जहाँ उनका शब्द सुनाई नहीं देता है।4फिर भी उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूँज गया है,और उनका वचन जगत की छोर तक पहुँच गया है।उनमें उसने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है,5जो दुल्हे के समान अपने कक्ष से निकलता है।वह शूरवीर के समान अपनी दौड़ दौड़ने में हर्षित होता है\*।6वह आकाश की एक छोर से निकलता है,और वह उसकी दूसरी छोर तक चक्कर मारता है;और उसकी गर्मी से कोई नहीं बच पाता।7यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है;यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं,बुद्धिहीन लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं;8यहोवा के उपदेश\* सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं;यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आँखों मेंज्योति ले आती है;9यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है;यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।10वे तो सोने से और बहुत कुन्दन से भी बढ़कर मनोहर हैं;वे मधु से और छत्ते से टपकनेवाले मधु से भी बढ़कर मधुर हैं।11उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है;उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है। (2 यूह. 1:8, भज. 119:11)12अपनी गलतियों को कौन समझ सकता है?मेरे गुप्त पापों से तू मुझे पवित्र कर।13तू अपने दास को ढिठाई के पापों से भी बचाए रख;वह मुझ पर प्रभुता करने न पाएँ!तब मैं सिद्ध हो जाऊँगा, और बड़े अपराधों से बचा रहूँगा\*। (गिन. 15:30)14हे यहोवा परमेश्‍वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले,मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहणयोग्य हों।

Chapter 20  
विजय के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले!याकूब के परमेश्‍वर का नाम तुझेऊँचे स्थान पर नियुक्त करे!2वह पवित्रस्‍थान से तेरी सहायता करे,और सिय्योन से तुझे सम्भाल ले!3वह तेरे सब भेंटों को स्मरण करे,और तेरे होमबलि को ग्रहण करे। (सेला)4वह तेरे मन की इच्छा को पूरी करे,और तेरी सारी युक्ति को सफल करे!5तब हम तेरे उद्धार के कारण ऊँचे स्वर सेहर्षित होकर गाएँगे,और अपने परमेश्‍वर के नाम से झण्डे खड़े करेंगे।यहोवा तेरे सारे निवेदन स्वीकार करे। (भज. 60:4)6अब मैं जान गया कि यहोवा अपने अभिषिक्त को बचाएगा;वह अपने पवित्र स्वर्ग से,अपने दाहिने हाथ के उद्धार के सामर्थ्य से, उसको उत्तर देगा।7किसी को रथों पर, और किसी को घोड़ों पर भरोसा है,परन्तु हम तो अपने परमेश्‍वर यहोवा ही का नाम लेंगे। (भज. 33:16-17)8वे तो झुक गए और गिर पड़े:\*परन्तु हम उठे और सीधे खड़े हैं।9हे यहोवा, राजा को छुड़ा;जब हम तुझे पुकारें तब हमारी सहायता कर।

Chapter 21  
प्रभु के उद्धार में आनन्दप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा तेरी सामर्थ्य से राजा आनन्दित होगा;और तेरे किए हुए उद्धार से वह अति मगन होगा।2तूने उसके मनोरथ को पूरा किया है,और उसके मुँह की विनती को तूने अस्वीकार नहीं किया। (सेला)3क्योंकि तू उत्तम आशीषें देता हुआ उससे मिलता हैऔर तू उसके सिर पर कुन्दन का मुकुट पहनाता है।4उसने तुझ से जीवन माँगा, और तूने जीवनदान दिया;तूने उसको युगानुयुग का जीवन दिया है।5तेरे उद्धार के कारण उसकी महिमा अधिक है;तू उसको वैभव और ऐश्वर्य से आभूषित कर देता है।6क्योंकि तूने उसको सर्वदा के लिये आशीषित किया है\*;तू अपने सम्मुख उसको हर्ष और आनन्द से भर देता है।7क्योंकि राजा का भरोसा यहोवा के ऊपर है;और परमप्रधान की करुणा से वह कभी नहीं टलने का\*।8तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूँढ़ निकालेगा,तेरा दाहिना हाथ तेरे सब बैरियों का पता लगा लेगा।9तू अपने मुख के सम्मुख उन्हें जलते हुए भट्ठेके समान जलाएगा।यहोवा अपने क्रोध में उन्हें निगल जाएगा,और आग उनको भस्म कर डालेगी।10तू उनके फलों को पृथ्वी पर से,और उनके वंश को मनुष्यों में से नष्ट करेगा।11क्योंकि उन्होंने तेरी हानि ठानी है,उन्होंने ऐसी युक्ति निकाली है जिसे वेपूरी न कर सकेंगे।12क्योंकि तू अपना धनुष उनके विरुद्ध चढ़ाएगा,और वे पीठ दिखाकर भागेंगे।13हे यहोवा, अपनी सामर्थ्य में महान हो;और हम गा-गाकर तेरे पराक्रम का भजन सुनाएँगे।

Chapter 22  
मसीह का दुःख, स्तुति और भावी पीढ़ीप्रधान बजानेवाले के लिये अभ्येलेरशर राग में दाऊद का भजन  
  
1हे मेरे परमेश्‍वर, हे मेरे परमेश्‍वर,तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने सेक्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहाँ है?2हे मेरे परमेश्‍वर, मैं दिन को पुकारता हूँपरन्तु तू उत्तर नहीं देता;और रात को भी मैं चुप नहीं रहता।3परन्तु तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है,तू तो पवित्र है।4हमारे पुरखा तुझी पर भरोसा रखते थे;वे भरोसा रखते थे,और तू उन्हें छुड़ाता था।5उन्होंने तेरी दुहाई दी और तूने उनको छुड़ायावे तुझी पर भरोसा रखते थेऔर कभी लज्जित न हुए।6परन्तु मैं तो कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं;मनुष्यों में मेरी नामधराई है,और लोगों में मेरा अपमान होता है।7वह सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं,और होंठ बिचकातेऔर यह कहते हुए सिर हिलाते हैं, (मत्ती 27:39, मर. 15:29)8वे कहते है “वह यहोवा पर भरोसा करता है,यहोवा उसको छुड़ाए,वह उसको उबारे क्योंकि वह उससे प्रसन्‍न है।” (भज. 91:14)9परन्तु तू ही ने मुझे गर्भ से निकाला\*;जब मैं दूध-पीता बच्चा था,तब ही से तूने मुझे भरोसा रखना सिखाया।10मैं जन्मते ही तुझी पर छोड़ दिया गया,माता के गर्भ ही से तू मेरा परमेश्‍वर है।11मुझसे दूर न हो क्योंकि संकट निकट है,और कोई सहायक नहीं।12बहुत से सांडों ने मुझे घेर लिया है,बाशान के बलवन्त सांड मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है।13वे फाड़ने और गरजनेवाले सिंह के समानमुझ पर अपना मुँह पसारे हुए है।14मैं जल के समान बह गया\*,और मेरी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए:मेरा हृदय मोम हो गया,वह मेरी देह के भीतर पिघल गया।15मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया;और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई;और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है। (नीति. 17:22)16क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है;कुकर्मियों की मण्डली मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है;वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं। (मत्ती 27:35 मर. 15:29 लूका 23:33)17मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ;वे मुझे देखते और निहारते हैं;18वे मेरे वस्त्र आपस में बाँटते हैं,और मेरे पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं। (मत्ती 27:35, लूका 23:34, यहू. 19:24-25)19परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह!हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!20मेरे प्राण को तलवार से बचा,मेरे प्राण को कुत्ते के पंजे से बचा ले!21मुझे सिंह के मुँह से बचा,जंगली सांड के सींगों से तू मुझे बचा।22मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का प्रचार करूँगा;सभा के बीच तेरी प्रशंसा करूँगा। (इब्रा. 2:12)23हे यहोवा के डरवैयों, उसकी स्तुति करो!हे याकूब के वंश, तुम सब उसकी महिमा करो!हे इस्राएल के वंश, तुम उसका भय मानो! (भज. 135:19-20)24क्योंकि उसने दुःखी को तुच्छ नहीं जानाऔर न उससे घृणा करता है,यहोवा ने उससे अपना मुख नहीं छिपाया;पर जब उसने उसकी दुहाई दी, तब उसकी सुन ली।25बड़ी सभा में मेरा स्तुति करना तेरी ही ओर से होता है;मैं अपनी मन्नतों को उसके भय रखनेवालों के सामने पूरा करूँगा।26नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे;जो यहोवा के खोजी हैं, वे उसकी स्तुति करेंगे।तुम्हारे प्राण सर्वदा जीवित रहें!27पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों के लोग उसको स्मरण करेंगेऔर उसकी ओर फिरेंगे;और जाति-जाति के सब कुल तेरे सामने दण्डवत् करेंगे।28क्योंकि राज्य यहोवा की का है,और सब जातियों पर वही प्रभुता करता है। (जेके. 14:9)29पृथ्वी के सब हष्ट-पुष्ट लोग भोजन करके दण्डवत् करेंगे;वे सब जितने मिट्टी में मिल जाते हैंऔर अपना-अपना प्राण नहीं बचा सकते,वे सब उसी के सामने घुटने टेकेंगे।30एक वंश उसकी सेवा करेगा;दूसरी पीढ़ी से प्रभु का वर्णन किया जाएगा।31वे आएँगे और उसके धार्मिकता के कामों को एकवंश पर जो उत्‍पन्‍न होगा यह कहकर प्रगटकरेंगे कि उसने ऐसे-ऐसे अद्भुत काम किए।

Chapter 23  
परमेश्‍वर अपने लोगों का चरवाहादाऊद का भजन  
  
1यहोवा मेरा चरवाहा है,मुझे कुछ घटी न होगी। (यह. 40:11)2वह मुझे हरी-हरी चराइयों में बैठाता है;वह मुझे सुखदाई जल\* के झरने के पास ले चलता है;3वह मेरे जी में जी ले आता है।धार्मिकता के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्तमेरी अगुआई करता है।4चाहे मैं घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ,तो भी हानि से न डरूँगा,क्योंकि तू मेरे साथ रहता है;तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।5तू मेरे सतानेवालों के सामने मेरे लिये मेज बिछाता है\*;तूने मेरे सिर पर तेल मला है,मेरा कटोरा उमड़ रहा है।6निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरेसाथ-साथ बनी रहेंगी;और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूँगा।

Chapter 24  
महिमामय राजा और उसके राज्यदाऊद का भजन  
  
1पृथ्वी और जो कुछ उसमें है यहोवा ही का है;जगत और उसमें निवास करनेवाले भी।2क्योंकि उसी ने उसकी नींव समुद्रों के ऊपर दृढ़ करके रखी\*,और महानदों के ऊपर स्थिर किया है।3यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है?और उसके पवित्रस्‍थान में कौन खड़ा हो सकता है?4जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है,जिसने अपने मन को व्यर्थ बात की ओर नहीं लगाया,और न कपट से शपथ खाई है।5वह यहोवा की ओर से आशीष पाएगा,और अपने उद्धार करनेवाले परमेश्‍वर कीओर से धर्मी ठहरेगा।6ऐसे ही लोग उसके खोजी है,वे तेरे दर्शन के खोजी याकूबवंशी हैं। (सेला)7हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो!हे सनातन के द्वारों, ऊँचे हो जाओ!क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।8वह प्रतापी राजा कौन है?यहोवा जो सामर्थी और पराक्रमी है,परमेश्‍वर जो युद्ध में पराक्रमी है!9हे फाटकों, अपने सिर ऊँचे करोहे सनातन के द्वारों तुम भी खुल जाओ!क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा!10वह प्रतापी राजा कौन है?सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है। (सेला)

Chapter 25  
प्रभु पर निर्भरतादाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मैं अपने मन को तेरी ओरउठाता हूँ।2हे मेरे परमेश्‍वर, मैंने तुझी पर भरोसा रखा है,मुझे लज्जित होने न दे;मेरे शत्रु मुझ पर जयजयकार करने न पाएँ।3वरन् जितने तेरी बाट जोहते हैं उनमें से कोईलज्जित न होगा;परन्तु जो अकारण विश्वासघाती हैं वे हीलज्जित होंगे।4हे यहोवा, अपने मार्ग मुझ को दिखा;अपना पथ मुझे बता दे।5मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे,क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला परमेश्‍वर है;मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ।6हे यहोवा, अपनी दया और करुणा के कामों को स्मरण कर;क्योंकि वे तो अनन्तकाल से होते आए हैं।7हे यहोवा, अपनी भलाई के कारणमेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को स्मरण न कर\*;अपनी करुणा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर।8यहोवा भला और सीधा है;इसलिए वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।9वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा,हाँ, वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा।10जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को मानते हैं,उनके लिये उसके सब मार्ग करुणा और सच्चाई हैं। (यूह. 1:17)11हे यहोवा, अपने नाम के निमित्तमेरे अधर्म को जो बहुत हैं क्षमा कर।12वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है?प्रभु उसको उसी मार्ग पर जिससे वहप्रसन्‍न होता है चलाएगा।13वह कुशल से टिका रहेगा,और उसका वंश पृथ्वी पर अधिकारी होगा।14यहोवा के भेद को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं,और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा। (इफि. 1:9, इफि. 1:18)15मेरी आँखें सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं,क्योंकि वही मेरे पाँवों को जाल में से छुड़ाएगा\*। (भज. 141:8)16हे यहोवा, मेरी ओर फिरकर मुझ पर दया कर;क्योंकि मैं अकेला और पीड़ित हूँ।17मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया है,तू मुझ को मेरे दुःखों से छुड़ा ले\*।18तू मेरे दुःख और कष्ट पर दृष्टि कर,और मेरे सब पापों को क्षमा कर।19मेरे शत्रुओं को देख कि वे कैसे बढ़ गए हैं,और मुझसे बड़ा बैर रखते हैं।20मेरे प्राण की रक्षा कर, और मुझे छुड़ा;मुझे लज्जित न होने दे,क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ।21खराई और सिधाई मुझे सुरक्षित रखे,क्योंकि मुझे तेरी ही आशा है।22हे परमेश्‍वर इस्राएल को उसके सारे संकटों से छुड़ा ले।

Chapter 26  
एक खरे व्यक्ति की प्रार्थनादाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मेरा न्याय कर,क्योंकि मैं खराई से चलता रहा हूँ,और मेरा भरोसा यहोवा पर अटल बना है।2हे यहोवा, मुझ को जाँच और परख\*;मेरे मन और हृदय को परख।3क्योंकि तेरी करुणा तो मेरी आँखों के सामने है,और मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलता रहा हूँ।4मैं निकम्मी चाल चलनेवालों के संग नहीं बैठा,और न मैं कपटियों के साथ कहीं जाऊँगा;5मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा रखता हूँ,और दुष्टों के संग न बैठूँगा।6मैं अपने हाथों को निर्दोषता के जल से धोऊँगा\*,तब हे यहोवा मैं तेरी वेदी की प्रदक्षिणा करूँगा, (भज. 73:13)7ताकि तेरा धन्यवाद ऊँचे शब्द से करूँ,और तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूँ।8हे यहोवा, मैं तेरे धाम सेतेरी महिमा के निवास-स्थान से प्रीति रखता हूँ।9मेरे प्राण को पापियों के साथ,और मेरे जीवन को हत्यारों के साथ न मिला\*।10वे तो ओछापन करने में लगे रहते हैं,और उनका दाहिना हाथ घूस से भरा रहता है।11परन्तु मैं तो खराई से चलता रहूँगा।तू मुझे छुड़ा ले, और मुझ पर दया कर।12मेरे पाँव चौरस स्थान में स्थिर है;सभाओं में मैं यहोवा को धन्य कहा करूँगा।

Chapter 27  
विश्वास की घोषणादाऊद का भजन  
  
1यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है;मैं किस से डरूँ\*?यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है,मैं किस का भय खाऊँ?2जब कुकर्मियों ने जो मुझे सताते और मुझी सेबैर रखते थे,मुझे खा डालने के लिये मुझ पर चढ़ाई की,तब वे ही ठोकर खाकर गिर पड़े।3चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले,तो भी मैं न डरूँगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए,उस दशा में भी मैं हियाव बाँधे निश्‍चित रहूँगा।4एक वर मैंने यहोवा से माँगा है,उसी के यत्न में लगा रहूँगा;कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ, जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ,और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूँ। (भज. 6:8, भज. 23:6, फिलि. 3:13)5क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपनेमण्डप में छिपा रखेगा;अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा,और चट्टान पर चढ़ाएगा। (भज. 91:1, भज. 40:2, भज. 138:7)6अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊँचा होगा;और मैं यहोवा के तम्बू में आनन्द के बलिदान चढ़ाऊँगा\*;और मैं गाऊँगा और यहोवा के लिए गीत गाऊँगा। (भज. 3:3)7हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूँ,तू मुझ पर दया कर और मुझे उत्तर दे। (भज. 130:2-4, भज. 13:3)8तूने कहा है, “मेरे दर्शन के खोजी हो।”इसलिए मेरा मन तुझ से कहता है,“हे यहोवा, तेरे दर्शन का मैं खोजी रहूँगा।”9अपना मुख मुझसे न छिपा।अपने दास को क्रोध करके न हटा,तू मेरा सहायक बना है।हे मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्‍वर मुझे त्याग न दे, और मुझे छोड़ न दे!10मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है,परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।11हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे सिखा,और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल। (भज. 5:8)12मुझ को मेरे सतानेवालों की इच्छा पर न छोड़,क्योंकि झूठे साक्षी जो उपद्रव करने की धुनमें हैं\* मेरे विरुद्ध उठे हैं।13यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों कीपृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूँगा,तो मैं मूर्च्छित हो जाता। (भज. 142:5)14यहोवा की बाट जोहता रह;हियाव बाँध और तेरा हृदय दृढ़ रहे;हाँ, यहोवा ही की बाट जोहता रह! (भज. 31:24)

Chapter 28  
विनती और धन्यवाददाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मैं तुझी को पुकारूँगा;हे मेरी चट्टान, मेरी पुकार अनसुनी न कर,ऐसा न हो कि तेरे चुप रहने सेमैं कब्र में पड़े हुओं के समान हो जाऊँ जो पाताल में चले जाते हैं\*।2जब मैं तेरी दुहाई दूँ,और तेरे पवित्रस्‍थान की भीतरी कोठरीकी ओर अपने हाथ उठाऊँ,तब मेरी गिड़गिड़ाहट की बात सुन ले।3उन दुष्टों और अनर्थकारियों के संग मुझे न घसीट;जो अपने पड़ोसियों से बातें तो मेल की बोलते हैं,परन्तु हृदय में बुराई रखते हैं।4उनके कामों के और उनकी करनी की बुराईके अनुसार उनसे बर्ताव कर,उनके हाथों के काम के अनुसार उन्हें बदला दे;उनके कामों का पलटा उन्हें दे। (मत्ती 16:27, प्रका. 18:6,13 प्रका. 22:12)5क्योंकि वे यहोवा के मार्गों कोऔर उसके हाथ के कामों को नहीं समझते,इसलिए वह उन्हें पछाड़ेगा और फिर न उठाएगा\*।6यहोवा धन्य है;क्योंकि उसने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है।7यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है;उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है;इसलिए मेरा हृदय प्रफुल्लित है;और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूँगा।8यहोवा अपने लोगों की सामर्थ्य है,वह अपने अभिषिक्त के लिये उद्धार का दृढ़ गढ़ है।9हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार कर,और अपने निज भाग के लोगों को आशीष दे;और उनकी चरवाही कर और सदैव उन्हें सम्भाले रह।

Chapter 29  
परमेश्‍वर की आवाज़दाऊद का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर के पुत्रों, यहोवा का,हाँ, यहोवा ही का गुणानुवाद करो,यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को सराहो।2यहोवा के नाम की महिमा करो;पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो।3यहोवा की वाणी मेघों के ऊपर सुनाई देती है;प्रतापी परमेश्‍वर गरजता है,यहोवा घने मेघों के ऊपर रहता है। (अय्यूब 37:4-5)4यहोवा की वाणी शक्तिशाली है,यहोवा की वाणी प्रतापमय है।5यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है;यहोवा लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है।6वह लबानोन को बछड़े के समानऔर सिर्योन को सांड के समान उछालता है।7यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है\*।8यहोवा की वाणी वन को हिला देती है,यहोवा कादेश के वन को भी कँपाता है।9यहोवा की वाणी से हिरनियों का गर्भपात हो जाता है।और जंगल में पतझड़ होता है;और उसके मन्दिर में सब कोई“महिमा ही महिमा” बोलते रहते है।10जल-प्रलय के समय यहोवा विराजमान था;और यहोवा सर्वदा के लिये राजा होकरविराजमान रहता है।11यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा;यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशीष देगा\*।

Chapter 30  
धन्यवाद की प्रार्थना भवन की प्रतिष्ठा के लियेदाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मैं तुझे सराहूँगा क्योंकि तूनेमुझे खींचकर निकाला है,और मेरे शत्रुओं को मुझ परआनन्द करने नहीं दिया।2हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा,मैंने तेरी दुहाई दी और तूने मुझे चंगा किया है।3हे यहोवा, तूने मेरा प्राण अधोलोक में से निकाला है,तूने मुझ को जीवित रखाऔर कब्र में पड़ने से बचाया है\*।4तुम जो विश्वासयोग्य हो!यहोवा की स्तुति करो,और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है,उसका धन्यवाद करो।5क्योंकि उसका क्रोध, तो क्षण भर का होता है,परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है\*।कदाचित् रात को रोना पड़े,परन्तु सवेरे आनन्द पहुँचेगा।6मैंने तो अपने चैन के समय कहा था,कि मैं कभी नहीं टलने का।7हे यहोवा, अपनी प्रसन्नता से तूने मेरे पहाड़ को दृढ़और स्थिर किया था;जब तूने अपना मुख फेर लियातब मैं घबरा गया।8हे यहोवा, मैंने तुझी को पुकारा;और प्रभु से गिड़गिड़ाकर यह विनती की, कि9जब मैं कब्र में चला जाऊँगा तब मेरी मृत्यु सेक्या लाभ होगा?क्या मिट्टी तेरा धन्यवाद कर सकती है?क्या वह तेरी विश्वसनीयता का प्रचार कर सकती है?10हे यहोवा, सुन, मुझ पर दया कर;हे यहोवा, तू मेरा सहायक हो।11तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;तूने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनन्दका पटुका बाँधा है\*;12ताकि मेरा मन तेरा भजन गाता रहेऔर कभी चुप न हो।हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा,मैं सर्वदा तेरा धन्यवाद करता रहूँगा।

Chapter 31  
परमेश्‍वर में भरोसे की प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मैं तुझ में शरण लेता हूँ;मुझे कभी लज्जित होना न पड़े;तू अपने धर्मी होने के कारण मुझे छुड़ा ले!2अपना कान मेरी ओर लगाकरतुरन्त मुझे छुड़ा ले! (भज. 102:2)3क्योंकि तू मेरे लिये चट्टान और मेरा गढ़ है;इसलिए अपने नाम के निमित्त मेरी अगुआई कर,और मुझे आगे ले चल।4जो जाल उन्होंने मेरे लिये बिछाया हैउससे तू मुझ को छुड़ा ले,क्योंकि तू ही मेरा दृढ़ गढ़ है।5मैं अपनी आत्मा को तेरे ही हाथ में सौंप देता हूँ;हे यहोवा, हे विश्वासयोग्य परमेश्‍वर,तूने मुझे मोल लेकर मुक्त किया है। (लूका 23:46, प्रेरि. 7:59, 1 पत. 4:19)6जो व्यर्थ मूर्तियों पर मन लगाते हैं,उनसे मैं घृणा करता हूँ;परन्तु मेरा भरोसा यहोवा ही पर है। (भज. 24:4)7मैं तेरी करुणा से मगन और आनन्दित हूँ,क्योंकि तूने मेरे दुःख पर दृष्टि की है,मेरे कष्ट के समय तूने मेरी सुधि ली है,8और तूने मुझे शत्रु के हाथ में पड़ने नहीं दिया;तूने मेरे पाँवों को चौड़े स्थान में खड़ा किया है।9हे यहोवा, मुझ पर दया कर क्योंकि मैं संकट में हूँ;मेरी आँखें वरन् मेरा प्राणऔर शरीर सब शोक के मारे घुले जाते हैं।10मेरा जीवन शोक के मारेऔर मेरी आयु कराहते-कराहते घट चली है;मेरा बल मेरे अधर्म के कारण जाता रहा,ओर मेरी हड्डियाँ घुल गई।11अपने सब विरोधियों के कारण मेरे पड़ोसियोंमें मेरी नामधराई हुई है,अपने जान-पहचानवालों के लिये डर का कारण हूँ;जो मुझ को सड़क पर देखते है वह मुझसे दूर भाग जाते हैं।12मैं मृतक के समान लोगों के मन से बिसर गया;मैं टूटे बर्तन के समान हो गया हूँ।13मैंने बहुतों के मुँह से अपनी निन्दा सुनी,चारों ओर भय ही भय है!जब उन्होंने मेरे विरुद्ध आपस में सम्मति कीतब मेरे प्राण लेने की युक्ति की।14परन्तु हे यहोवा, मैंने तो तुझी पर भरोसा रखा है,मैंने कहा, “तू मेरा परमेश्‍वर है।”15मेरे दिन तेरे हाथ में है;तू मुझे मेरे शत्रुओंऔर मेरे सतानेवालों के हाथ से छुड़ा।16अपने दास पर अपने मुँह का प्रकाश चमका;अपनी करुणा से मेरा उद्धार कर।17हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने देक्योंकि मैंने तुझको पुकारा है;दुष्ट लज्जित होंऔर वे पाताल में चुपचाप पड़े रहें।18जो अहंकार और अपमान से धर्मी की निन्दा करते हैं,उनके झूठ बोलनेवाले मुँह बन्द किए जाएँ। (भज. 94:4, भज. 120:2)19आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी हैजो तूने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी है,और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों केसामने प्रगट भी की है।20तू उन्हें दर्शन देने के गुप्त स्थान में\* मनुष्यों कीबुरी गोष्ठी से गुप्त रखेगा;तू उनको अपने मण्डप में झगड़े-रगड़े सेछिपा रखेगा।21यहोवा धन्य है,क्योंकि उसने मुझे गढ़वाले नगर में रखकरमुझ पर अद्भुत करुणा की है।22मैंने तो घबराकर कहा था कि मैं यहोवा कीदृष्टि से दूर हो गया।तो भी जब मैंने तेरी दुहाई दी, तब तूने मेरीगिड़गिड़ाहट को सुन लिया।23हे यहोवा के सब भक्तों, उससे प्रेम रखो!यहोवा विश्वासयोग्य लोगों की तो रक्षा करता है,परन्तु जो अहंकार करता है,उसको वह भली भाँति बदला देता है\*। (भज. 97:10)24हे यहोवा पर आशा रखनेवालों,हियाव बाँधो और तुम्हारे हृदय दृढ़ रहें! (1 कुरि. 16:13)

Chapter 32  
क्षमा प्राप्ति की आशीषदाऊद का भजन मश्कील  
  
1क्या ही धन्य है वह जिसका अपराधक्षमा किया गया,और जिसका पाप ढाँपा गया हो\*। (रोम. 4:7)2क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्मका यहोवा लेखा न ले,और जिसकी आत्मा में कपट न हो। (रोम. 4:8)3जब मैं चुप रहातब दिन भर कराहते-कराहते मेरी हड्डियाँपिघल गई।4क्योंकि रात-दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा;और मेरी तरावट धूपकाल की सी झुर्राहटबनती गई। (सेला)5जब मैंने अपना पाप तुझ पर प्रगट कियाऔर अपना अधर्म न छिपाया,और कहा, “मैं यहोवा के सामने अपने अपराधों को मान लूँगा;”तब तूने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया। (सेला)(1 यूह.1:9)6इस कारण हर एक भक्त तुझ से ऐसे समयमें प्रार्थना करे जब कि तू मिल सकता है\*।निश्चय जब जल की बड़ी बाढ़ आए तो भीउस भक्त के पास न पहुँचेगी।7तू मेरे छिपने का स्थान है;तू संकट से मेरी रक्षा करेगा;तू मुझे चारों ओर से छुटकारे के गीतों से घेरलेगा। (सेला)8मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझेचलना होगा उसमें तेरी अगुआई करूँगा;मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगाऔर सम्मति दिया करूँगा।9तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते,उनकी उमंग लगाम और रास से रोकनी पड़ती है,नहीं तो वे तेरे वश में नहीं आने के।10दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होगी;परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता हैवह करुणा से घिरा रहेगा।11हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दितऔर मगन हो, और हे सब सीधे मनवालोंआनन्द से जयजयकार करो!

Chapter 33  
परमेश्‍वर की स्तुति का गीत  
  
1हे धर्मियों, यहोवा के कारण जयजयकार करो।क्योंकि धर्मी लोगों को स्तुति करना शोभा देता है।2वीणा बजा-बजाकर यहोवा का धन्यवाद करो,दस तारवाली सारंगी बजा-बजाकरउसका भजन गाओ। (इफि. 5:19)3उसके लिये नया गीत गाओ,जयजयकार के साथ भली भाँति बजाओ। (प्रका.14:3)4क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है\*;और उसका सब काम निष्पक्षता से होता है।5वह धार्मिकता और न्याय से प्रीति रखता है;यहोवा की करुणा से पृथ्वी भरपूर है।6आकाशमण्डल यहोवा के वचन से,और उसके सारे गण उसके मुँह कीश्‍वास से बने। (इब्रा.11:3)7वह समुद्र का जल ढेर के समान इकट्ठा करता\*;वह गहरे सागर को अपने भण्डार में रखता है।8सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें,जगत के सब निवासी उसका भय मानें!9क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया;जब उसने आज्ञा दी,तब वास्तव में वैसा ही हो गया।10यहोवा जाति-जाति की युक्ति कोव्यर्थ कर देता है;वह देश-देश के लोगों की कल्पनाओंको निष्फल करता है।11यहोवा की योजना सर्वदा स्थिर रहेगी,उसके मन की कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ीतक बनी रहेंगी।12क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्‍वरयहोवा है,और वह समाज जिसे उसने अपना निज भागहोने के लिये चुन लिया हो!13यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है,वह सब मनुष्यों को निहारता है;14अपने निवास के स्थान सेवह पृथ्वी के सब रहनेवालों को देखता है,15वही जो उन सभी के हृदयों को गढ़ता,और उनके सब कामों का विचार करता है।16कोई ऐसा राजा नहीं, जो सेना कीबहुतायत के कारण बच सके;वीर अपनी बड़ी शक्ति के कारण छूट नहीं जाता।17विजय पाने के लिए घोड़ा व्यर्थ सुरक्षा है,वह अपने बड़े बल के द्वारा किसी कोनहीं बचा सकता है।18देखो, यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयों परऔर उन पर जो उसकी करुणा की आशा रखते हैं,बनी रहती है,19कि वह उनके प्राण को मृत्यु से बचाए,और अकाल के समय उनको जीवित रखे\*।20हम यहोवा की बाट जोहते हैं;वह हमारा सहायक और हमारी ढाल ठहरा है।21हमारा हृदय उसके कारण आनन्दित होगा,क्योंकि हमने उसके पवित्र नाम का भरोसा रखा है।22हे यहोवा, जैसी तुझ पर हमारी आशा है,वैसी ही तेरी करुणा भी हम पर हो।

Chapter 34  
परमेश्‍वर धर्मी का उद्धारकर्तादाऊद का भजन जब वह अबीमेलेक के सामने बौरहा बना, और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया, और वह चला गया  
  
1मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा;उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।2मैं यहोवा पर घमण्ड करूँगा;नम्र लोग यह सुनकर आनन्दित होंगे।3मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो,और आओ हम मिलकर उसके नाम की स्तुति करें;4मैं यहोवा के पास गया,तब उसने मेरी सुन ली,और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया।5जिन्होंने उसकी ओर दृष्टि की,उन्होंने ज्योति पाई;और उनका मुँह कभी काला न होने पाया।6इस दीन जन ने पुकारा तब यहोवा ने सुन लिया,और उसको उसके सब कष्टों से छुड़ा लिया।7यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूतछावनी किए हुए उनको बचाता है। (इब्रा. 1:14, दान. 6: 22)8चखकर देखो\* कि यहोवा कैसा भला है!क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो उसकी शरण लेता है। (1 पत. 2:3)9हे यहोवा के पवित्र लोगों, उसका भय मानो,क्योंकि उसके डरवैयों को किसी बात की घटी नहीं होती!10जवान सिंहों को तो घटी होतीऔर वे भूखे भी रह जाते हैं;परन्तु यहोवा के खोजियों को किसी भलीवस्तु की घटी न होगी।11हे बच्चों, आओ मेरी सुनो,मैं तुम को यहोवा का भय मानना सिखाऊँगा।12वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता,और दीर्घायु चाहता है ताकि भलाई देखे?13अपनी जीभ को बुराई से रोक रख,और अपने मुँह की चौकसी कर किउससे छल की बात न निकले। (याकू. 1:26)14बुराई को छोड़ और भलाई कर;मेल को ढूँढ़ और उसी का पीछा कर। (इब्रा. 12:14)15यहोवा की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं,और उसके कान भी उनकी दुहाई कीओर लगे रहते हैं। (यूह. 9:31)16यहोवा बुराई करनेवालों के विमुख रहता है,ताकि उनका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले। (1 पत. 3:10-12)17धर्मी दुहाई देते हैं और यहोवा सुनता है,और उनको सब विपत्तियों से छुड़ाता है।18यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है\*,और पिसे हुओं का उद्धार करता है।19धर्मी पर बहुत सी विपत्तियाँ पड़ती तो हैं,परन्तु यहोवा उसको उन सबसेमुक्त करता है। (नीति. 24:16, 2 तीम. 3:11)20वह उसकी हड्डी-हड्डी की रक्षा करता है;और उनमें से एक भी टूटने नहीं पाता। (यूह. 19:36)21दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा जाएगा;और धर्मी के बैरी दोषी ठहरेंगे।22यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता है;और जितने उसके शरणागत हैंउनमें से कोई भी दोषी न ठहरेगा।

Chapter 35  
विजय के लिये प्रार्थनादाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, जो मेरे साथ मुकद्दमा लड़ते हैं,उनके साथ तू भी मुकद्दमा लड़;जो मुझसे युद्ध करते हैं, उनसे तू युद्ध कर।2ढाल और भाला लेकर मेरी सहायता करने कोखड़ा हो।3बर्छी को खींच और मेरा पीछा करनेवालों केसामने आकर उनको रोक;और मुझसे कह,कि मैं तेरा उद्धार हूँ।4जो मेरे प्राण के ग्राहक हैंवे लज्जित और निरादर हों!जो मेरी हानि की कल्पना करते हैं,वे पीछे हटाए जाएँ और उनका मुँह काला हो!5वे वायु से उड़ जानेवाली भूसी के समान हों,और यहोवा का दूत उन्हें हाँकता जाए!6उनका मार्ग अंधियारा और फिसलाहा हो\*,और यहोवा का दूत उनको खदेड़ता जाए।7क्योंकि अकारण उन्होंने मेरे लिये अपनाजाल गड्ढे में बिछाया;अकारण ही उन्होंने मेरा प्राण लेने केलिये गड्ढा खोदा है।8अचानक उन पर विपत्ति आ पड़े!और जो जाल उन्होंने बिछाया हैउसी में वे आप ही फँसे;और उसी विपत्ति में वे आप ही पड़ें! (रोम. 11:9,10, 1 थिस्स. 5:3)9परन्तु मैं यहोवा के कारण अपनेमन में मगन होऊँगा,मैं उसके किए हुए उद्धार से हर्षित होऊँगा।10मेरी हड्डी-हड्डी कहेंगी,“हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन है,जो दीन को बड़े-बड़े बलवन्तों से बचाता है,और लुटेरों से दीन दरिद्र लोगों की रक्षा करता है?”11अधर्मी साक्षी खड़े होते हैं;वे मुझ पर झूठा आरोप लगाते हैं।12वे मुझसे भलाई के बदले बुराई करते हैं,यहाँ तक कि मेरा प्राण ऊब जाता है।13जब वे रोगी थे तब तो मैं टाट पहने रहा\*,और उपवास कर-करके दुःख उठाता रहा;मुझे मेरी प्रार्थना का उत्तर नहीं मिला। (अय्यू. 30:25, रोम. 12:15)14मैं ऐसी भावना रखता था कि मानो वे मेरेसंगी या भाई हैं; जैसा कोई माता के लियेविलाप करता हो, वैसा ही मैंने शोक कापहरावा पहने हुए सिर झुकाकर शोक किया।15परन्तु जब मैं लँगड़ाने लगा तब वेलोग आनन्दित होकर इकट्ठे हुए,नीच लोग और जिन्हें मैं जानता भी न थावे मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए; वे मुझे लगातार फाड़ते रहे;16आदर के बिना वे मुझे ताना मारते है;वे मुझ पर दाँत पीसते हैं। (भज. 37:12)17हे प्रभु, तू कब तक देखता रहेगा?इस विपत्ति से, जिसमें उन्होंने मुझेडाला है मुझ को छुड़ा!जवान सिंहों से मेरे प्राण को बचा ले!18मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूँगा;बहुत लोगों के बीच मैं तेरी स्तुति करूँगा।19मेरे झूठ बोलनेवाले शत्रु मेरे विरुद्धआनन्द न करने पाएँ,जो अकारण मेरे बैरी हैं,वे आपस में आँखों से इशारा न करने पाएँ। (यूह. 15:25, भज. 69:4)20क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते,परन्तु देश में जो चुपचाप रहते हैं,उनके विरुद्ध छल की कल्पनाएँ करते हैं।21और उन्होंने मेरे विरुद्ध मुँह पसार के कहा;“आहा, आहा, हमने अपनी आँखों से देखा है!”22हे यहोवा, तूने तो देखा है; चुप न रह!हे प्रभु, मुझसे दूर न रह!23उठ, मेरे न्याय के लिये जाग,हे मेरे परमेश्‍वर, हे मेरे प्रभु,मेरा मुकद्दमा निपटाने के लिये आ!24हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा,तू अपने धार्मिकता के अनुसार मेरा न्याय चुका;और उन्हें मेरे विरुद्ध आनन्द करने न दे!25वे मन में न कहने पाएँ,“आहा! हमारी तो इच्छा पूरी हुई!”वे यह न कहें, “हम उसे निगल गए हैं।”26जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैंउनके मुँह लज्जा के मारे एक साथ काले हों!जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं\*वह लज्जा और अनादर से ढँप जाएँ!27जो मेरे धर्म से प्रसन्‍न रहते हैं,वे जयजयकार और आनन्द करें,और निरन्तर करते रहें, यहोवा की बड़ाई हो,जो अपने दास के कुशल से प्रसन्‍न होता है!28तब मेरे मुँह से तेरे धर्म की चर्चा होगी,और दिन भर तेरी स्तुति निकलेगी।

Chapter 36  
परमेश्‍वर का प्रेम और मनुष्य की दुष्टताप्रधान बजानेवाले के लिये यहोवा के दास दाऊद का भजन  
  
1दुष्ट जन का अपराध उसके हृदय के भीतर कहता है;परमेश्‍वर का भय उसकी दृष्टि में नहीं है। (रोम. 3:18)2वह अपने अधर्म के प्रगट होनेऔर घृणित ठहरने के विषयअपने मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारता है।3उसकी बातें अनर्थ और छल की हैं;उसने बुद्धि और भलाई के काम करने सेहाथ उठाया है।4वह अपने बिछौने पर पड़े-पड़ेअनर्थ की कल्पना करता है\*;वह अपने कुमार्ग पर दृढ़ता से बना रहता है;बुराई से वह हाथ नहीं उठाता।5हे यहोवा, तेरी करुणा स्वर्ग में है,तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँची है।6तेरा धर्म ऊँचे पर्वतों के समान है,तेरा न्याय अथाह सागर के समान हैं;हे यहोवा, तू मनुष्य और पशु दोनों कीरक्षा करता है।7हे परमेश्‍वर, तेरी करुणा कैसी अनमोल है!मनुष्य तेरे पंखो के तले शरण लेते हैं।8वे तेरे भवन के भोजन कीबहुतायत से तृप्त होंगे,और तू अपनी सुख की नदीमें से उन्हें पिलाएगा।9क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है\*;तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएँगे। (यहू. 4:10, 14, प्रका. 21:6)10अपने जाननेवालों पर करुणा करता रह,और अपने धर्म के काम सीधेमनवालों में करता रह!11अहंकारी मुझ पर लात उठाने न पाए,और न दुष्ट अपने हाथ केबल से मुझे भगाने पाए।12वहाँ अनर्थकारी गिर पड़े हैं;वे ढकेल दिए गए, और फिर उठ न सकेंगे।

Chapter 37  
धर्मी की विरासत और दुष्टों का अन्तदाऊद का भजन  
  
1कुकर्मियों के कारण मत कुढ़,कुटिल काम करनेवालों के विषय डाह न कर!2क्योंकि वे घास के समान झट कट जाएँगे,और हरी घास के समान मुर्झा जाएँगे।3यहोवा पर भरोसा रख,और भला कर; देश में बसा रह,और सच्चाई में मन लगाए रह।4यहोवा को अपने सुख का मूल जान,और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा। (मत्ती 6:33)5अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़\*;और उस पर भरोसा रख,वही पूरा करेगा।6और वह तेरा धर्म ज्योति के समान,और तेरा न्याय दोपहर के उजियाले केसमान प्रगट करेगा।7यहोवा के सामने चुपचाप रह,और धीरज से उसकी प्रतिक्षा कर;उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सफल होते हैं,और वह बुरी युक्तियों को निकालता है!8क्रोध से परे रह,और जलजलाहट को छोड़ दे!मत कुढ़, उससे बुराई ही निकलेगी।9क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएँगे;और जो यहोवा की बाट जोहते हैं,वही पृथ्वी के अधिकारी होंगे।10थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं;और तू उसके स्थान को भलींभाँति देखने पर भी उसको न पाएगा।11परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,और बड़ी शान्ति के कारण आनन्द मनाएँगे। (मत्ती 5:5)12दुष्ट धर्मी के विरुद्ध बुरी युक्ति निकालता है,और उस पर दाँत पीसता है;13परन्तु प्रभु उस पर हँसेगा,क्योंकि वह देखता है कि उसका दिन आनेवाला है।14दुष्ट लोग तलवार खींचेऔर धनुष बढ़ाए हुए हैं,ताकि दीन दरिद्र को गिरा दें,और सीधी चाल चलनेवालों को वध करें।15उनकी तलवारों से उन्हीं के हृदय छिदेंगे,और उनके धनुष तोड़े जाएँगे।16धर्मी का थोड़ा सा धन दुष्टों केबहुत से धन से उत्तम है।17क्योंकि दुष्टों की भुजाएँ तो तोड़ी जाएँगी;परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता है।18यहोवा खरे लोगों की आयु की सुधि रखता है,और उनका भाग सदैव बना रहेगा।19विपत्ति के समय, वे लज्जित न होंगे,और अकाल के दिनों में वे तृप्त रहेंगे।20दुष्ट लोग नाश हो जाएँगे;और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी घासके समान नाश होंगे,वे धुएँ के समान लुप्त‍ हो जाएँगे।21दुष्ट ऋण लेता है,और भरता नहीं परन्तु धर्मीअनुग्रह करके दान देता है;22क्योंकि जो उससे आशीष पाते हैंवे तो पृथ्वी के अधिकारी होंगे,परन्तु जो उससे श्रापित होते हैं,वे नाश हो जाएँगे।23मनुष्य की गति यहोवा कीओर से दृढ़ होती है\*,और उसके चलन से वह प्रसन्‍न रहता है;24चाहे वह गिरे तो भी पड़ा न रह जाएगा,क्योंकि यहोवा उसका हाथ थामे रहता है।25मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापेतक देखता आया हूँ;परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ,और न उसके वंश को टुकड़े माँगते देखा है।26वह तो दिन भर अनुग्रह कर-करके ऋण देता है,और उसके वंश पर आशीष फलती रहती है।27बुराई को छोड़ भलाई कर;और तू सर्वदा बना रहेगा।28क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता;और अपने भक्तों को न तजेगा।उनकी तो रक्षा सदा होती है,परन्तु दुष्टों का वंश काट डाला जाएगा।29धर्मी लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे,और उसमें सदा बसे रहेंगे।30धर्मी अपने मुँह से बुद्धि की बातें करता,और न्याय का वचन कहता है।31उसके परमेश्‍वर की व्यवस्था उसकेहृदय में बनी रहती है,उसके पैर नहीं फिसलते।32दुष्ट धर्मी की ताक में रहता है।और उसके मार डालने का यत्न करता है।33यहोवा उसको उसके हाथ में न छोड़ेगा,और जब उसका विचार किया जाएतब वह उसे दोषी न ठहराएगा।34यहोवा की बाट जोहता रह,और उसके मार्ग पर बना रह,और वह तुझे बढ़ाकर पृथ्वी का अधिकारी कर देगा;जब दुष्ट काट डाले जाएँगे, तब तू देखेगा।35मैंने दुष्ट को बड़ा पराक्रमीऔर ऐसा फैलता हुए देखा,जैसा कोई हरा पेड़\*अपने निज भूमि में फैलता है।36परन्तु जब कोई उधर से गया तोदेखा कि वह वहाँ है ही नहीं;और मैंने भी उसे ढूँढ़ा,परन्तु कहीं न पाया। (भज. 37:10)37खरे मनुष्य पर दृष्टि करऔर धर्मी को देख,क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष काअन्तफल अच्छा है। (यशा. 32:17)38परन्तु अपराधी एक साथ सत्यानाश किए जाएँगे;दुष्टों का अन्तफल सर्वनाश है।39धर्मियों की मुक्ति यहोवा कीओर से होती है;संकट के समय वह उनका दृढ़ गढ़ है।40यहोवा उनकी सहायता करके उनको बचाता है;वह उनको दुष्टों से छुड़ाकर उनका उद्धार करता है,इसलिए कि उन्होंने उसमें अपनी शरण ली है।

Chapter 38  
पीड़ित मनुष्य की प्रार्थना यादगार के लियेदाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा क्रोध में आकर मुझे झिड़क न दे,और न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर!2क्योंकि तेरे तीर मुझ में लगे हैं,और मैं तेरे हाथ के नीचे दबा हूँ।3तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कुछ भीआरोग्यता नहीं;और मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कुछभी चैन नहीं।4क्योंकि मेरे अधर्म के कामों मेंमेरा सिर डूब गया,और वे भारी बोझ के समान मेरे सहने सेबाहर हो गए हैं।5मेरी मूर्खता के पाप के कारण मेरे घाव सड़ गएऔर उनसे दुर्गन्‍ध आती हैं\*।6मैं बहुत दुःखी हूँ और झुक गया हूँ;दिन भर मैं शोक का पहरावापहने हुए चलता-फिरता हूँ।7क्योंकि मेरी कमर में जलन है,और मेरे शरीर में आरोग्यता नहीं।8मैं निर्बल और बहुत ही चूर हो गया हूँ;मैं अपने मन की घबराहट से कराहता हूँ।9हे प्रभु मेरी सारी अभिलाषा तेरे सम्मुख है,और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं।10मेरा हृदय धड़कता है,मेरा बल घटता जाता है;और मेरी आँखों की ज्योति भीमुझसे जाती रही।11मेरे मित्र और मेरे संगीमेरी विपत्ति में अलग हो गए,और मेरे कुटुम्बी भी दूर जा खड़े हुए। (भज. 31:11, लूका 23:49)12मेरे प्राण के गाहक मेरे लिये जाल बिछाते हैं,और मेरी हानि का यत्न करनेवालेदुष्टता की बातें बोलते,और दिन भर छल की युक्ति सोचते हैं।13परन्तु मैं बहरे के समान सुनता ही नहीं,और मैं गूँगे के समान मुँह नहीं खोलता।14वरन् मैं ऐसे मनुष्य के तुल्य हूँजो कुछ नहीं सुनता,और जिसके मुँह से विवाद की कोईबात नहीं निकलती।15परन्तु हे यहोवा,मैंने तुझ ही पर अपनी आशा लगाई है;हे प्रभु, मेरे परमेश्‍वर,तू ही उत्तर देगा।16क्योंकि मैंने कहा,“ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें;जब मेरा पाँव फिसल जाता है,तब मुझ पर अपनी बड़ाई मारते हैं।”17क्योंकि मैं तो अब गिरने ही पर हूँ;और मेरा शोक निरन्तर मेरे सामने है\*।18इसलिए कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करूँगा,और अपने पाप के कारण खेदित रहूँगा।19परन्तु मेरे शत्रु अनगिनत हैं,और मेरे बैरी बहुत हो गए हैं।20जो भलाई के बदले में बुराई करते हैं,वह भी मेरे भलाई के पीछे चलने केकारण मुझसे विरोध करते हैं।21हे यहोवा, मुझे छोड़ न दे!हे मेरे परमेश्‍वर, मुझसे दूर न हो!22हे यहोवा, हे मेरे उद्धारकर्ता,मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!

Chapter 39  
बुद्धि और क्षमा के लिये प्रार्थनायदूतून प्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1मैंने कहा, “मैं अपनी चालचलन में चौकसी करूँगा,ताकि मेरी जीभ से पाप न हो;जब तक दुष्ट मेरे सामने है,तब तक मैं लगाम लगाए अपना मुँह बन्द किए रहूँगा।” (याकू. 1:26)2मैं मौन धारण कर गूँगा बन गया,और भलाई की ओर से भी चुप्पी साधे रहा;और मेरी पीड़ा बढ़ गई,3मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर जल रहा था\*।सोचते-सोचते आग भड़क उठी;तब मैं अपनी जीभ से बोल उठा;4“हे यहोवा, ऐसा कर कि मेरा अन्तमुझे मालूम हो जाए, और यह भीकि मेरी आयु के दिन कितने हैं;जिससे मैं जान लूँ कि कैसा अनित्य हूँ!5देख, तूने मेरी आयु बालिश्त भर की रखी है,और मेरा जीवनकाल तेरी दृष्टि में कुछ है ही नहीं।सचमुच सब मनुष्य कैसे ही स्थिरक्यों न हों तो भी व्यर्थ ठहरे हैं। (सेला)6सचमुच मनुष्य छाया सा चलता-फिरता है;सचमुच वे व्यर्थ घबराते हैं;वह धन का संचय तो करता हैपरन्तु नहीं जानता कि उसे कौन लेगा!7“अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोहूँ?मेरी आशा तो तेरी ओर लगी है।8मुझे मेरे सब अपराधों के बन्धन से छुड़ा ले।मूर्ख मेरी निन्दा न करने पाए।9मैं गूँगा बन गया\* और मुँह न खोला;क्योंकि यह काम तू ही ने किया है।10तूने जो विपत्ति मुझ पर डाली हैउसे मुझसे दूर कर दे,क्योंकि मैं तो तेरे हाथ की मार सेभस्म हुआ जाता हूँ।11जब तू मनुष्य को अधर्म के कारणडाँट-डपटकर ताड़ना देता है;तब तू उसकी सामर्थ्य को पतंगे के समान नाश करता है;सचमुच सब मनुष्य वृथाभिमान करते हैं।12“हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दुहाई पर कान लगा;मेरा रोना सुनकर शान्त न रह!क्योंकि मैं तेरे संग एक परदेशी यात्री के समान रहता हूँ,और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूँ। (इब्रा.11:13)13आह! इससे पहले कि मैं यहाँ से चला जाऊँऔर न रह जाऊँ,मुझे बचा ले जिससे मैं प्रदीप्त जीवन प्राप्त करूँ!”

Chapter 40  
स्तुति का एक गीतप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा;और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दुहाई सुनी।2उसने मुझे सत्यानाश के गड्ढेऔर दलदल की कीच में से उबारा\*,और मुझ को चट्टान पर खड़ा करकेमेरे पैरों को दृढ़ किया है।3उसने मुझे एक नया गीत सिखायाजो हमारे परमेश्‍वर की स्तुति का है।बहुत लोग यह देखेंगे और उसकी महिमा करेंगे,और यहोवा पर भरोसा रखेंगे। (प्रका. 5:9, प्रका. 14:3, भज. 52:6)4क्या ही धन्य है वह पुरुष,जो यहोवा पर भरोसा करता है,और अभिमानियों और मिथ्या कीओर मुड़नेवालों की ओर मुँह न फेरता हो।5हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा, तूने बहुत से काम किए हैं!जो आश्चर्यकर्मों और विचार तू हमारे लिये करता हैवह बहुत सी हैं; तेरे तुल्य कोई नहीं!मैं तो चाहता हूँ कि खोलकर उनकी चर्चा करूँ, परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती।6मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्‍न नहीं होतातूने मेरे कान खोदकर खोले हैं।होमबलि और पापबलि तूने नहीं चाहा\*।7तब मैंने कहा,“देख, मैं आया हूँ; क्योंकि पुस्तक मेंमेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है।8हे मेरे परमेश्‍वर,मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्‍न हूँ;और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में बसी है।” (इब्रा. 10:5-7)9मैंने बड़ी सभा में धार्मिकता के शुभ समाचार का प्रचार किया है;देख, मैंने अपना मुँह बन्द नहीं किया हे यहोवा,तू इसे जानता है।10मैंने तेरी धार्मिकता मन ही में नहीं रखा;मैंने तेरी सच्चाईऔर तेरे किए हुए उद्धार की चर्चा की है;मैंने तेरी करुणा और सत्यता बड़ी सभा से गुप्त नहीं रखी।11हे यहोवा, तू भी अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले,तेरी करुणा और सत्यता से निरन्तरमेरी रक्षा होती रहे!12क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयों से घिरा हुआ हूँ;मेरे अधर्म के कामों ने मुझे आ पकड़ाऔर मैं दृष्टि नहीं उठा सकता;वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं; इसलिए मेरा हृदय टूट गया।13हे यहोवा, कृपा करके मुझे छुड़ा ले!हे यहोवा, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!14जो मेरे प्राण की खोज में हैं,वे सब लज्जित हों; और उनके मुँह काले होंऔर वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएँजो मेरी हानि से प्रसन्‍न होते हैं।15जो मुझसे, “आहा, आहा,” कहते हैं,वे अपनी लज्जा के मारे विस्मित हों।16परन्तु जितने तुझे ढूँढ़ते हैं,वह सब तेरे कारण हर्षितऔर आनन्दित हों; जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं,वे निरन्तर कहते रहें, “यहोवा की बड़ाई हो!”17मैं तो दीन और दरिद्र हूँ,तो भी प्रभु मेरी चिन्ता करता है।तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है;हे मेरे परमेश्‍वर विलम्ब न कर।

Chapter 41  
धर्मीजन की पीड़ा और आशीर्वादप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है!विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा।2यहोवा उसकी रक्षा करके उसको जीवित रखेगा,और वह पृथ्वी पर भाग्यवान होगा।तू उसको शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़।3जब वह व्याधि के मारे शय्या पर पड़ा हो\*,तब यहोवा उसे सम्भालेगा;तू रोग में उसके पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा।4मैंने कहा, “हे यहोवा, मुझ पर दया कर;मुझ को चंगा कर,क्योंकि मैंने तो तेरे विरुद्ध पाप किया है!”5मेरे शत्रु यह कहकर मेरी बुराई करते हैं“वह कब मरेगा, और उसका नाम कब मिटेगा?”6और जब वह मुझसे मिलने को आता है,तब वह व्यर्थ बातें बकता है,जब कि उसका मन अपने अन्दर अधर्म की बातें संचय करता है;और बाहर जाकर उनकी चर्चा करता है।7मेरे सब बैरी मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं;वे मेरे विरुद्ध होकर मेरी हानि की कल्पना करते हैं।8वे कहते हैं कि इसे तो कोई बुरा रोग लग गया है;अब जो यह पड़ा है, तो फिर कभी उठने का नहीं\*।9मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था,जो मेरी रोटी खाता था,उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है। (2 शमू. 15:12, यूह. 13:18, प्रेरि. 1:16)10परन्तु हे यहोवा, तू मुझ पर दया करकेमुझ को उठा ले कि मैं उनको बदला दूँ।11मेरा शत्रु जो मुझ पर जयवन्त नहीं हो पाता,इससे मैंने जान लिया है कि तू मुझसे प्रसन्‍न है।12और मुझे तो तू खराई से सम्भालता,और सर्वदा के लिये अपने सम्मुख स्थिर करता है।13इस्राएल का परमेश्‍वर यहोवाआदि से अनन्तकाल तक धन्य हैआमीन, फिर आमीन। (लूका 1:68, भजन 106:48)

Chapter 42  
दूसरा भागभजन 42—72परमेश्‍वर के लिये लालसाप्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का मश्कील  
  
1जैसे हिरनी नदी के जल के लिये हाँफती है,वैसे ही, हे परमेश्‍वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ।2जीविते परमेश्‍वर, हाँ परमेश्‍वर, का मैं प्यासा हूँ,मैं कब जाकर परमेश्‍वर को अपना मुँह दिखाऊँगा? (भज. 63:1, प्रका. 22:4)3मेरे आँसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं;और लोग दिन भर मुझसे कहते रहते हैं,तेरा परमेश्‍वर कहाँ है?4मैं कैसे भीड़ के संग जाया करता था,मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथउत्सव करनेवाली भीड़ के बीच में परमेश्‍वर के भवन\*को धीरे-धीरे जाया करता था; यह स्मरण करके मेरा प्राण शोकित हो जाता है।5हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है?और तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?परमेश्‍वर पर आशा लगाए रह;क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा। (मत्ती 26:38, मर. 14:34, यूह. 12:27)6हे मेरे परमेश्‍वर; मेरा प्राण मेरे भीतर गिरा जाता है,इसलिए मैं यरदन के पास के देश से और हेर्मोनके पहाड़ों और मिसगार की पहाड़ी के ऊपरसे तुझे स्मरण करता हूँ।7तेरी जलधाराओं का शब्द सुनकर जल,जल को पुकारता है\*; तेरी सारी तरंगोंऔर लहरों में मैं डूब गया हूँ।8तो भी दिन को यहोवा अपनी शक्तिऔर करुणा प्रगट करेगा;और रात को भी मैं उसका गीत गाऊँगा,और अपने जीवनदाता परमेश्‍वर से प्रार्थना करूँगा।9मैं परमेश्‍वर से जो मेरी चट्टान है कहूँगा,“तू मुझे क्यों भूल गया?मैं शत्रु के अत्याचार के मारे क्यों शोक कापहरावा पहने हुए चलता-फिरता हूँ?”10मेरे सतानेवाले जो मेरी निन्दा करते हैं,मानो उससे मेरी हड्डियाँ चूर-चूर होती हैं,मानो कटार से छिदी जाती हैं,क्योंकि वे दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तेरा परमेश्‍वर कहाँ है?11हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?परमेश्‍वर पर भरोसा रख;क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्‍वर है,मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा। (भज. 43:5, मर. 14:34, यूह. 12:27)

Chapter 43  
संकट के समय प्रार्थना  
  
1हे परमेश्‍वर, मेरा न्याय चुका\*और विधर्मी जाति से मेरा मुकद्दमा लड़;मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा।2क्योंकि तू मेरा सामर्थी परमेश्‍वर है,तूने क्यों मुझे त्याग दिया है?मैं शत्रु के अत्याचार के मारे शोक कापहरावा पहने हुए क्यों फिरता रहूँ?3अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज;वे मेरी अगुआई करें,वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत\*पर और तेरे निवास स्थान में पहुँचाए!4तब मैं परमेश्‍वर की वेदी के पास जाऊँगा,उस परमेश्‍वर के पास जो मेरे अतिआनन्द का कुण्ड है; और हे परमेश्‍वर,हे मेरे परमेश्‍वर, मैं वीणा बजा-बजाकर तेरा धन्यवाद करूँगा।5हे मेरे प्राण तू क्यों गिरा जाता है?तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?परमेश्‍वर पर आशा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमकऔर मेरा परमेश्‍वर है; मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।

Chapter 44  
इस्राएल की शिकायतप्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का मश्कील  
  
1हे परमेश्‍वर, हमने अपने कानों से सुना,हमारे बाप-दादों ने हम से वर्णन किया है,कि तूने उनके दिनों मेंऔर प्राचीनकाल में क्या-क्या काम किए हैं।2तूने अपने हाथ से जातियों को निकाल दिया,और इनको बसाया;तूने देश-देश के लोगों को दुःख दिया,और इनको चारों ओर फैला दिया;3क्योंकि वे न तो अपनी तलवार केबल से इस देश के अधिकारी हुए,और न अपने बाहुबल से; परन्तु तेरे दाहिने हाथऔर तेरी भुजा और तेरे प्रसन्‍न मुख के कारण जयवन्त हुए; क्योंकि तू उनको चाहता था।4हे परमेश्‍वर, तू ही हमारा महाराजा है,तू याकूब के उद्धार की आज्ञा देता है।5तेरे सहारे से हम अपने द्रोहियों कोढकेलकर गिरा देंगे;तेरे नाम के प्रताप से हमअपने विरोधियों को रौंदेंगे।6क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूँगा,और न अपनी तलवार के बल से बचूँगा।7परन्तु तू ही ने हमको द्रोहियों से बचाया है,और हमारे बैरियों को निराशऔर लज्जित किया है।8हम परमेश्‍वर की बड़ाईदिन भर करते रहते हैं,और सदैव तेरे नाम काधन्यवाद करते रहेंगे। (सेला)9तो भी तूने अब हमको त्याग दियाऔर हमारा अनादर किया है,और हमारे दलों के साथ आगे नहीं जाता।10तू हमको शत्रु के सामने से हटा देता है,और हमारे बैरी मनमाने लूट मार करते हैं।11तूने हमें कसाई की भेड़ों केसमान कर दिया है,और हमको अन्यजातियों मेंतितर-बितर किया है।12तू अपनी प्रजा को सेंत-मेंत बेच डालता है,परन्तु उनके मोल से तू धनी नहीं होता।13तू हमारे पड़ोसियों से हमारीनामधराई कराता है,और हमारे चारों ओर के रहनेवालेहम से हँसी ठट्ठा करते हैं।14तूने हमको अन्यजातियों के बीचमें अपमान ठहराया है,और देश-देश के लोग हमारेकारण सिर हिलाते हैं।15दिन भर हमें तिरस्कार सहना पड़ता है\*,और कलंक लगानेऔर निन्दा करनेवाले के बोल से,16शत्रु और बदला लेनेवालों के कारण,बुरा-भला कहनेवालोंऔर निन्दा करनेवालों के कारण।17यह सब कुछ हम पर बिता तोभी हम तुझे नहीं भूले,न तेरी वाचा के विषय विश्वासघात किया है।18हमारे मन न बहके,न हमारे पैर तरी राह से मुड़ें;19तो भी तूने हमें गीदड़ों के स्थान में पीस डाला,और हमको घोर अंधकार में छिपा दिया है।20यदि हम अपने परमेश्‍वर का नाम भूल जाते,या किसी पराए देवता की ओर अपने हाथ फैलाते,21तो क्या परमेश्‍वर इसका विचार न करता?क्योंकि वह तो मन की गुप्त बातों को जानता है।22परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्तमार डाले जाते हैं,और उन भेड़ों के समान समझेजाते हैं जो वध होने पर हैं। (रोम. 8:36)23हे प्रभु, जाग! तू क्यों सोता है?उठ! हमको सदा के लिये त्याग न दे!24तू क्यों अपना मुँह छिपा लेता है\*?और हमारा दुःख और सताया जाना भूल जाता है?25हमारा प्राण मिट्टी से लग गया;हमारा शरीर भूमि से सट गया है।26हमारी सहायता के लिये उठ खड़ा हो।और अपनी करुणा के निमित्त हमको छुड़ा ले।

Chapter 45  
विवाह गीतप्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीम में कोरहवंशियों का मश्कील प्रेम प्रीति का गीत  
  
1मेरा हृदय एक सुन्दर विषय की उमंग सेउमड़ रहा है,जो बात मैंने राजा के विषय रची है उसकोसुनाता हूँ; मेरी जीभ निपुण लेखक की लेखनी बनी है।2तू मनुष्य की सन्तानों में परम सुन्दर है;तेरे होंठों में अनुग्रह भरा हुआ है;इसलिए परमेश्‍वर ने तुझे सदा के लिये आशीषदी है। (लूका 4:22, इब्रा. 1:3,4)3हे वीर, तू अपनी तलवार को जो तेरा वैभवऔर प्रताप है अपनी कटि पर बाँध\*!4सत्यता, नम्रता और धार्मिकता के निमित्त अपनेऐश्वर्य और प्रताप पर सफलता से सवार हो;तेरा दाहिना हाथ तुझे भयानक काम सिखाए!5तेरे तीर तो तेज हैं,तेरे सामने देश-देश के लोग गिरेंगे;राजा के शत्रुओं के हृदय उनसे छिदेंगे।6हे परमेश्‍वर, तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बनारहेगा;तेरा राजदण्ड न्याय का है।7तूने धार्मिकता से प्रीति और दुष्टता से बैर रखा है।इस कारण परमेश्‍वर ने हाँ, तेरे परमेश्‍वर नेतुझको तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेलसे अभिषेक किया है। (इब्रा. 1:8,9)8तेरे सारे वस्त्र गन्धरस, अगर, और तेज सेसुगन्धित हैं,तू हाथी दाँत के मन्दिरों में तारवाले बाजों केकारण आनन्दित हुआ है।9तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजकुमारियाँ भी हैं;तेरी दाहिनी ओर पटरानी, ओपीर के कुन्दनसे विभूषित खड़ी है।10हे राजकुमारी सुन, और कान लगाकर ध्यान दे;अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जा;11और राजा तेरे रूप की चाह करेगा।क्योंकि वह तो तेरा प्रभु है, तू उसे दण्डवत् कर।12सोर की राजकुमारी भी भेंट करने के लियेउपस्थित होगी,प्रजा के धनवान लोग तुझे प्रसन्‍न करने कायत्न करेंगे।13राजकुमारी महल में अति शोभायमान है,उसके वस्त्र में सुनहले बूटे कढ़े हुए हैं;14वह बूटेदार वस्त्र पहने हुए राजा के पासपहुँचाई जाएगी।जो कुमारियाँ उसकी सहेलियाँ हैं,वे उसके पीछे-पीछे चलती हुई तेरे पास पहुँचाई जाएँगी।15वे आनन्दित और मगन होकर पहुँचाई जाएँगी\*,और वे राजा के महल में प्रवेश करेंगी।16तेरे पितरों के स्थान पर तेरे सन्तान होंगे;जिनको तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहराएगा।17मैं ऐसा करूँगा, कि तेरे नाम की चर्चा पीढ़ीसे पीढ़ी तक होती रहेगी;इस कारण देश-देश के लोग सदा सर्वदा तेराधन्यवाद करते रहेंगे।

Chapter 46  
परमेश्‍वर हमारा शरणस्थानप्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का, अलामोत की राग पर एक गीत  
  
1परमेश्‍वर हमारा शरणस्थान और बल है,संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक\*।2इस कारण हमको कोई भय नहीं चाहे पृथ्वीउलट जाए,और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएँ;3चाहे समुद्र गरजें और फेन उठाए,और पहाड़ उसकी बाढ़ से काँप उठे। (सेला)(लूका 21:25, मत्ती 7:25)4एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्‍वर केनगर मेंअर्थात् परमप्रधान के पवित्र निवास भवन मेंआनन्द होता है।5परमेश्‍वर उस नगर के बीच में है, वह कभीटलने का नहीं;पौ फटते ही परमेश्‍वर उसकी सहायता करता है।6जाति-जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य-राज्यके लोग डगमगाने लगे;वह बोल उठा, और पृथ्वी पिघल गई। (प्रका. 11:18, भज. 2:1)7सेनाओं का यहोवा हमारे संग है;याकूब का परमेश्‍वर हमारा ऊँचा गढ़ है। (सेला)8आओ, यहोवा के महाकर्म देखो,कि उसने पृथ्वी पर कैसा-कैसा उजाड़किया है।9वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है;वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है,और रथों को आग में झोंक देता है!10“चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्‍वर हूँ।मैं जातियों में महान हूँ,मैं पृथ्वी भर में महान हूँ!”11सेनाओं का यहोवा हमारे संग है;याकूब का परमेश्‍वर हमारा ऊँचा गढ़ है। (सेला)

Chapter 47  
परमेश्‍वर हमारा राजाप्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का भजन  
  
1हे देश-देश के सब लोगों, तालियाँ बजाओ!ऊँचे शब्द से परमेश्‍वर के लिये जयजयकार करो!2क्योंकि यहोवा परमप्रधान और भययोग्य है,वह सारी पृथ्वी के ऊपर महाराजा है।3वह देश-देश के लोगों को हमारे सम्मुखनीचा करता,और जाति-जाति को हमारे पाँवों के नीचे करदेता है।4वह हमारे लिये उत्तम भाग चुन लेगा\*,जो उसके प्रिय याकूब के घमण्ड का कारण है। (सेला)5परमेश्‍वर जयजयकार सहित,यहोवा नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर गया है। (लूका 24:51, यूह. 6:62, प्रेरि. 1:9, भज. 68:1-2)6परमेश्‍वर का भजन गाओ, भजन गाओ!हमारे महाराजा का भजन गाओ, भजन गाओ!7क्योंकि परमेश्‍वर सारी पृथ्वी का महाराजा है;समझ बूझकर बुद्धि से भजन गाओ।8परमेश्‍वर जाति-जाति पर राज्य करता है;परमेश्‍वर अपने पवित्र सिंहासन परविराजमान है\*। (भज. 96:10, प्रका. 19:6)9राज्य-राज्य के रईस अब्राहम के परमेश्‍वरकी प्रजा होने के लिये इकट्ठे हुए हैं।क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्‍वर के वश में हैं,वह तो शिरोमणि है।

Chapter 48  
सिय्योन में परमेश्‍वर की महिमा गीतकोरहवंशियों का भजन  
  
1हमारे परमेश्‍वर के नगर में, और अपनेपवित्र पर्वत परयहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है! (सेला)2सिय्योन पर्वत ऊँचाई में सुन्दर और सारीपृथ्वी के हर्ष का कारण है,राजाधिराज का नगर उत्तरी सिरे पर है। (मत्ती 5:35, यिर्म. 3:19)3उसके महलों में परमेश्‍वर ऊँचा गढ़ मानागया है।4क्योंकि देखो, राजा लोग इकट्ठे हुए,वे एक संग आगे बढ़ गए।5उन्होंने आप ही देखा और देखते ही विस्मित हुए,वे घबराकर भाग गए।6वहाँ कँपकँपी ने उनको आ पकड़ा,और जच्चा की सी पीड़ाएँ उन्हें होने लगीं।7तू पूर्वी वायु सेतर्शीश के जहाजों को तोड़ डालता है\*।8सेनाओं के यहोवा के नगर में,अपने परमेश्‍वर के नगर में, जैसा हमनेसुना था, वैसा देखा भी है;परमेश्‍वर उसको सदा दृढ़ और स्थिर रखेगा।9हे परमेश्‍वर हमने तेरे मन्दिर के भीतरतेरी करुणा पर ध्यान किया है।10हे परमेश्‍वर तेरे नाम के योग्यतेरी स्तुति पृथ्वी की छोर तक होती है।तेरा दाहिना हाथ धार्मिकता से भरा है;11तेरे न्याय के कामों के कारणसिय्योन पर्वत आनन्द करे,और यहूदा के नगर की पुत्रियाँ मगन हों!12सिय्योन के चारों ओर चलो\*, और उसकीपरिक्रमा करो,उसके गुम्मटों को गिन लो,13उसकी शहरपनाह पर दृष्टि लगाओ, उसकेमहलों को ध्यान से देखो;जिससे कि तुम आनेवाली पीढ़ी के लोगों सेइस बात का वर्णन कर सको।14क्योंकि वह परमेश्‍वर सदा सर्वदा हमारापरमेश्‍वर है,वह मृत्यु तक हमारी अगुआई करेगा।

Chapter 49  
धन पर भरोसा रखने की मूर्खताप्रधान बजानेवाले के लिये कोरहवंशियों का भजन  
  
1हे देश-देश के सब लोगों यह सुनो!हे संसार के सब निवासियों, कान लगाओ!2क्या ऊँच, क्या नीचक्या धनी, क्या दरिद्र, कान लगाओ!3मेरे मुँह से बुद्धि की बातें निकलेंगी;और मेरे हृदय की बातें समझ की होंगी।4मैं नीतिवचन की ओर अपना कान लगाऊँगा,मैं वीणा बजाते हुए अपनी गुप्त बातप्रकाशित करूँगा।5विपत्ति के दिनों में मैं क्यों डरूँ जब अधर्म मुझे आ घेरे?6जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते,और अपने धन की बहुतायत पर फूलते हैं,7उनमें से कोई अपने भाई को किसी भाँतिछुड़ा नहीं सकता है;और न परमेश्‍वर को उसके बदले प्रायश्चितमें कुछ दे सकता है8क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती भारी हैवह अन्त तक कभी न चुका सकेंगे9कोई ऐसा नहीं जो सदैव जीवित रहे,और कब्र को न देखे।10क्योंकि देखने में आता है कि बुद्धिमान भी मरते हैं,और मूर्ख और पशु सरीखे मनुष्य भी दोनों नाश होते हैं,और अपनी सम्पत्ति दूसरों के लिये छोड़ जाते हैं।11वे मन ही मन यह सोचते हैं, कि उनका घरसदा स्थिर रहेगा,और उनके निवास पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे;इसलिए वे अपनी-अपनी भूमि का नाम अपने-अपने नाम पर रखते हैं।12परन्तु मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी स्थिर नहीं रहता,वह पशुओं के समान होता है, जो मर मिटते हैं।13उनकी यह चाल उनकी मूर्खता है,तो भी उनके बाद लोग उनकी बातों सेप्रसन्‍न होते हैं। (सेला)14वे अधोलोक की मानो भेड़ों का झुण्ड ठहराए गए हैं;मृत्यु उनका गड़रिया ठहरेगा;और भोर को\* सीधे लोग उन पर प्रभुता करेंगे;और उनका सुन्दर रूप अधोलोक का कौर हो जाएगा और उनका कोई आधार न रहेगा।15परन्तु परमेश्‍वर मेरे प्राण को अधोलोक केवश से छुड़ा लेगा,वह मुझे ग्रहण करके अपनाएगा।16जब कोई धनी हो जाए और उसके घर कावैभव बढ़ जाए,तब तू भय न खाना।17क्योंकि वह मर कर कुछ भी साथ न ले जाएगा;न उसका वैभव उसके साथ कब्र में जाएगा।18चाहे वह जीते जी अपने आप को धन्य कहता रहे।जब तू अपनी भलाई करता है, तब वे लोगतेरी प्रशंसा करते हैं19तो भी वह अपने पुरखाओं के समाज में मिलाया जाएगा,जो कभी उजियाला न देखेंगे।20मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों परन्तु यदि वेसमझ नहीं रखते तोवे पशुओं के समान हैं, जो मर मिटते हैं।

Chapter 50  
परमेश्‍वर धर्मी न्यायाधीशआसाप का भजन  
  
1सर्वशक्तिमान परमेश्‍वर यहोवा ने कहा है,और उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक पृथ्वीके लोगों को बुलाया है।2सिय्योन से, जो परम सुन्दर है,परमेश्‍वर ने अपना तेज दिखाया है।3हमारा परमेश्‍वर आएगा और चुपचाप न रहेगा,आग उसके आगे-आगे भस्म करती जाएगी;और उसके चारों ओर बड़ी आँधी चलेगी।4वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लियेऊपर के आकाश को और पृथ्वी को भी पुकारेगा\*:5“मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो,जिन्होंने बलिदान चढ़ाकर मुझसे वाचा बाँधी है!”6और स्वर्ग उसके धर्मी होने का प्रचार करेगाक्योंकि परमेश्‍वर तो आप ही न्यायी है। (सेला)(भज. 97:6, इब्रा. 12:23)7“हे मेरी प्रजा, सुन, मैं बोलता हूँ,और हे इस्राएल, मैं तेरे विषय साक्षी देता हूँ।परमेश्‍वर तेरा परमेश्‍वर मैं ही हूँ।8मैं तुझ पर तेरे बलियों के विषय दोष नहीं लगाता,तेरे होमबलि तो नित्य मेरे लिये चढ़ते हैं।9मैं न तो तेरे घर से बैलन तेरे पशुशालाओं से बकरे ले लूँगा।10क्योंकि वन के सारे जीव-जन्तुऔर हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे ही हैं।11पहाड़ों के सब पक्षियों को मैं जानता हूँ,और मैदान पर चलने-फिरनेवाले जानवर मेरे ही हैं।12“यदि मैं भूखा होता तो तुझ से न कहता;क्योंकि जगत और जो कुछ उसमें है वह मेरा है\*। (प्रेरि.17:25, 1 कुरि. 10:26)13क्या मैं बैल का माँस खाऊँ,या बकरों का लहू पीऊँ?14परमेश्‍वर को धन्यवाद ही का बलिदान चढ़ा,और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी कर; (इब्रा. 13:15, सभो. 5:4-5)15और संकट के दिन मुझे पुकार;मैं तुझे छुड़ाऊँगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।”16परन्तु दुष्ट से परमेश्‍वर कहता है:“तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने से क्या काम?तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है?17तू तो शिक्षा से बैर करता,और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है।18जब तूने चोर को देखा, तब उसकी संगति से प्रसन्‍न हुआ;और परस्त्रीगामियों के साथ भागी हुआ।19“तूने अपना मुँह बुराई करने के लिये खोला,और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है।20तू बैठा हुआ अपने भाई के विरुद्ध बोलता;और अपने सगे भाई की चुगली खाता है।21यह काम तूने किया, और मैं चुप रहा;इसलिए तूने समझ लिया कि परमेश्‍वर बिल्कुल मेरे समान है।परन्तु मैं तुझे समझाऊँगा, और तेरी आँखों केसामने सब कुछ अलग-अलग दिखाऊँगा।”22“हे परमेश्‍वर को भूलनेवालो\* यह बात भली भाँति समझ लो,कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूँ,और कोई छुड़ानेवाला न हो।23धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है;और जो अपना चरित्र उत्तम रखता हैउसको मैं परमेश्‍वर का उद्धार दिखाऊँगा!” (इब्रा. 13:15)

Chapter 51  
पाप क्षमा के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन जब नातान नबी उसके पास इसलिए आया कि वह बतशेबा के पास गया था  
  
1हे परमेश्‍वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर;अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे। (लूका 18:13, यह. 43:25)2मुझे भलीं भाँति धोकर मेरा अधर्म दूर कर,और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध कर!3मैं तो अपने अपराधों को जानता हूँ,और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।4मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया,और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है,ताकि तू बोलने में धर्मीऔर न्याय करने में निष्कलंक ठहरे। (लूका 15:18,21, रोम. 3:4)5देख, मैं अधर्म के साथ उत्‍पन्‍न हुआ,और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा। (यूह. 3:6, रोमि 5:12, इफि 2:3)6देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्‍न होता है;और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।7जूफा से मुझे शुद्ध कर\*, तो मैं पवित्र हो जाऊँगा;मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूँगा।8मुझे हर्ष और आनन्द की बातें सुना,जिससे जो हड्डियाँ तूने तोड़ डाली हैं, वेमगन हो जाएँ।9अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले,और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा डाल।10हे परमेश्‍वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्‍पन्‍न कर\*,और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्‍पन्‍न कर।11मुझे अपने सामने से निकाल न दे,और अपने पवित्र आत्मा को मुझसे अलग न कर।12अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे,और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल।13जब मैं अपराधी को तेरा मार्ग सिखाऊँगा,और पापी तेरी ओर फिरेंगे।14हे परमेश्‍वर, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्‍वर,मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले,तब मैं तेरी धार्मिकता का जयजयकार करने पाऊँगा।15हे प्रभु, मेरा मुँह खोल देतब मैं तेरा गुणानुवाद कर सकूँगा।16क्योंकि तू बलि से प्रसन्‍न नहीं होता,नहीं तो मैं देता;होमबलि से भी तू प्रसन्‍न नहीं होता।17टूटा मन\* परमेश्‍वर के योग्य बलिदान है;हे परमेश्‍वर, तू टूटे और पिसे हुए मन कोतुच्छ नहीं जानता।18प्रसन्‍न होकर सिय्योन की भलाई कर,यरूशलेम की शहरपनाह को तू बना,19तब तू धार्मिकता के बलिदानों से अर्थात् सर्वांगपशुओं के होमबलि से प्रसन्‍न होगा;तब लोग तेरी वेदी पर पवित्र बलिदान चढ़ाएँगे।

Chapter 52  
दुष्ट का अन्त और धर्मी की शान्तिप्रधान बजानेवाले के लिये मश्कील पर दाऊद का भजन जब दोएग एदोमी ने शाऊल को बताया कि दाऊद अहीमेलेक के घर गया था

1हे वीर, तू बुराई करने पर क्यों घमण्ड करता है?परमेश्‍वर की करुणा तो अनन्त है।2तेरी जीभ केवल दुष्टता गढ़ती है\*;सान धरे हुए उस्तरे के समान वह छलका काम करती है।3तू भलाई से बढ़कर बुराई में,और धार्मिकता की बात से बढ़कर झूठ से प्रीति रखता है। (सेला)4हे छली जीभ,तू सब विनाश करनेवाली बातों से प्रसन्‍न रहती है।5निश्चय परमेश्‍वर तुझे सदा के लिये नाश कर देगा;वह तुझे पकड़कर तेरे डेरे से निकाल देगा;और जीवितों के लोक से तुझे उखाड़ डालेगा। (सेला)6तब धर्मी लोग इस घटना को देखकर डर जाएँगे,और यह कहकर उस पर हँसेंगे,7“देखो, यह वही पुरुष है जिसने परमेश्‍वर कोअपनी शरण नहीं माना,परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता था,और अपने को दुष्टता में दृढ़ करता रहा!”8परन्तु मैं तो परमेश्‍वर के भवन में हरे जैतून केवृक्ष के समान हूँ\*।मैंने परमेश्‍वर की करुणा पर सदा सर्वदा केलिये भरोसा रखा है।9मैं तेरा धन्यवाद सर्वदा करता रहूँगा, क्योंकितू ही ने यह काम किया है।मैं तेरे नाम पर आशा रखता हूँ, क्योंकियह तेरे पवित्र भक्तों के सामने उत्तम है।

Chapter 53  
मनुष्य की मूर्खता और दुष्टताप्रधान बजानेवाले के लिये महलत की राग पर दाऊद का मश्कील  
  
1मूर्ख ने अपने मन में कहा, “कोई परमेश्‍वर है ही नहीं।”वे बिगड़ गए, उन्होंने कुटिलता के घिनौने काम किए हैं;कोई सुकर्मी नहीं।2परमेश्‍वर ने स्वर्ग पर से मनुष्यों के ऊपर दृष्टि कीताकि देखे कि कोई बुद्धि से चलनेवालाया परमेश्‍वर को खोजनेवाला है कि नहीं।3वे सब के सब हट गए; सब एक साथ बिगड़ गए;कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं। (भज. 14:1-3, रोम. 3:10-12)4क्या उन सब अनर्थकारियों को कुछ भी ज्ञान नहीं,जो मेरे लोगों को रोटी के समान खाते हैपर परमेश्‍वर का नाम नहीं लेते है?5वहाँ उन पर भय छा गया जहाँ भय का कोई कारण न था।क्योंकि यहोवा ने उनकी हड्डियों को, जो तेरे विरुद्ध छावनी डाले पड़े थे, तितर-बितर कर दिया;तूने तो उन्हें लज्जित कर दिया\* इसलिए किपरमेश्‍वर ने उनको त्याग दिया है।6भला होता कि इस्राएल का पूरा उद्धार सिय्योन से निकलता!जब परमेश्‍वर अपनी प्रजा को बन्धुवाई से लौटा ले आएगा।तब याकूब मगन और इस्राएल आनन्दित होगा।

Chapter 54  
उद्धार के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये, दाऊद का तारकले बाजों के साथ मश्कील जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा, “क्या दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता?”  
  
1हे परमेश्‍वर अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर\*,और अपने पराक्रम से मेरा न्याय कर।2हे परमेश्‍वर, मेरी प्रार्थना सुन ले;मेरे मुँह के वचनों की ओर कान लगा।3क्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे हैं,और कुकर्मी मेरे प्राण के गाहक हुए हैं;उन्होंने परमेश्‍वर को अपने सम्मुख नहीं जाना। (सेला)4देखो, परमेश्‍वर मेरा सहायक है;प्रभु मेरे प्राण को सम्भालनेवाला है।5वह मेरे द्रोहियों की बुराई को उन्हीं पर लौटा देगा;हे परमेश्‍वर, अपनी सच्चाई के कारण उनका विनाश कर।6मैं तुझे स्वेच्छाबलि चढ़ाऊँगा\*;हे यहोवा, मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा,क्योंकि यह उत्तम है।7क्योंकि तूने मुझे सब दुःखों से छुड़ाया है,और मैंने अपने शत्रुओं पर विजयपूर्ण दृष्टि डाली है।

Chapter 55  
विश्वासघाती के विनाश के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये, तारवाले बाजों के साथ। दाऊद का मश्कील  
  
1हे परमेश्‍वर, मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा;और मेरी गिड़गिड़ाहट से मुँह न मोड़!2मेरी ओर ध्यान देकर, मुझे उत्तर दे;विपत्तियों के कारण मैं व्याकुल होता हूँ।3क्योंकि शत्रु कोलाहलऔर दुष्ट उपद्रव कर रहें हैं;वे मुझ पर दोषारोपण करते हैं,और क्रोध में आकर सताते हैं।4मेरा मन भीतर ही भीतर संकट में है\*,और मृत्यु का भय मुझ में समा गया है।5भय और कंपन ने मुझे पकड़ लिया है,और भय ने मुझे जकड़ लिया है।6तब मैंने कहा, “भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होतेतो मैं उड़ जाता और विश्राम पाता!7देखो, फिर तो मैं उड़ते-उड़ते दूर निकल जाताऔर जंगल में बसेरा लेता, (सेला)8मैं प्रचण्ड बयार और आँधी के झोंके सेबचकर किसी शरणस्थान में भाग जाता।”9हे प्रभु, उनका सत्यानाश कर,और उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दे;क्योंकि मैंने नगर में उपद्रव और झगड़ा देखा है।10रात-दिन वे उसकी शहरपनाह पर चढ़कर चारों ओर घूमते हैं;और उसके भीतर दुष्टता और उत्पात होता है।11उसके भीतर दुष्टता ने बसेरा डाला है;और अत्याचार और छल उसके चौक से दूर नहीं होते।12जो मेरी नामधराई करता है वह शत्रु नहीं था,नहीं तो मैं उसको सह लेता;जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता है वह मेरा बैरी नहीं है,नहीं तो मैं उससे छिप जाता।13परन्तु वह तो तू ही था जो मेरी बराबरी का मनुष्यमेरा परम मित्र और मेरी जान-पहचान का था।14हम दोनों आपस में कैसी मीठी-मीठी बातें करते थे;हम भीड़ के साथ परमेश्‍वर के भवन को जाते थे।15उनको मृत्यु अचानक आ दबाए; वे जीवित ही अधोलोक में उतर जाएँ;क्योंकि उनके घर और मन दोनों में बुराइयाँ और उत्पात भरा है\*।16परन्तु मैं तो परमेश्‍वर को पुकारूँगा;और यहोवा मुझे बचा लेगा।17सांझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों पहरमैं दुहाई दूँगा और कराहता रहूँगाऔर वह मेरा शब्द सुन लेगा।18जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी उससे उसने मुझे कुशल के साथ बचा लिया है।उन्होंने तो बहुतों को संग लेकर मेरा सामना किया था।19परमेश्‍वर जो आदि से विराजमान है यह सुनकर उनको उत्तर देगा। (सेला)ये वे है जिनमें कोई परिवर्तन नहीं, और उनमें परमेश्‍वर का भय है ही नहीं।20उसने अपने मेल रखनेवालों पर भी हाथ उठाया है,उसने अपनी वाचा को तोड़ दिया है।21उसके मुँह की बातें तो मक्खन सी चिकनी थीपरन्तु उसके मन में लड़ाई की बातें थीं;उसके वचन तेल से अधिक नरम तो थेपरन्तु नंगी तलवारें थीं।22अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा;वह धर्मी को कभी टलने न देगा। (1 पत. 5:7, भज. 37:24)23परन्तु हे परमेश्‍वर, तू उन लोगों को विनाश के गड्ढे में गिरा देगा;हत्यारे और छली मनुष्य अपनी आधी आयु तक भी जीवित न रहेंगे।परन्तु मैं तुझ पर भरोसा रखे रहूँगा।

Chapter 56  
उत्पीड़कों से राहत के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये योनतेलेखद्दोकीम में दाऊद का मिक्ताम जब पलिश्तियों ने उसको गत नगर में पकड़ा था  
  
1हे परमेश्‍वर, मुझ पर दया कर, क्योंकि मनुष्य मुझे निगलना चाहते हैं;वे दिन भर लड़कर मुझे सताते हैं।2मेरे द्रोही दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं,क्योंकि जो लोग अभिमान करके मुझसे लड़ते हैं वे बहुत हैं।3जिस समय मुझे डर लगेगा,मैं तुझ पर भरोसा रखूँगा।4परमेश्‍वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा,परमेश्‍वर पर मैंने भरोसा रखा है, मैं नहीं डरूँगा।कोई प्राणी मेरा क्या कर सकता है?5वे दिन भर मेरे वचनों को, उलटा अर्थ लगा-लगाकर मरोड़ते रहते हैं;उनकी सारी कल्पनाएँ मेरी ही बुराई करने की होती है\*।6वे सब मिलकर इकट्ठे होते हैं और छिपकर बैठते हैं;वे मेरे कदमों को देखते भालते हैंमानो वे मेरे प्राणों की घात में ताक लगाए बैठे हों।7क्या वे बुराई करके भी बच जाएँगे?हे परमेश्‍वर, अपने क्रोध से देश-देश के लोगों को गिरा दे!8तू मेरे मारे-मारे फिरने का हिसाब रखता है;तू मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले!क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है\*?9तब जिस समय मैं पुकारूँगा, उसी समय मेरे शत्रु उलटे फिरेंगे।यह मैं जानता हूँ, कि परमेश्‍वर मेरी ओर है।10परमेश्‍वर की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा,यहोवा की सहायता से मैं उसके वचन की प्रशंसा करूँगा।11मैंने परमेश्‍वर पर भरोसा रखा है, मैं न डरूँगा।मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?12हे परमेश्‍वर, तेरी मन्नतों का भार मुझ पर बना है;मैं तुझको धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा।13क्योंकि तूने मुझ को मृत्यु से बचाया है;तूने मेरे पैरों को भी फिसलने से बचाया है,ताकि मैं परमेश्‍वर के सामने जीवितों के उजियाले में चलूँ फिरूँ\*।

Chapter 57  
शत्रुओं से सुरक्षा के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मिक्ताम जब वह शाऊल से भागकर गुफा में छिप गया था  
  
1हे परमेश्‍वर, मुझ पर दया कर, मुझ पर दया कर,क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ;और जब तक ये विपत्तियाँ निकल न जाएँ,तब तक मैं तेरे पंखों के तले शरण लिए रहूँगा।2मैं परमप्रधान परमेश्‍वर को पुकारूँगा,परमेश्‍वर को जो मेरे लिये सब कुछ सिद्ध करता है।3परमेश्‍वर स्वर्ग से भेजकर मुझे बचा लेगा,जब मेरा निगलनेवाला निन्दा कर रहा हो। (सेला)परमेश्‍वर अपनी करुणा और सच्चाई प्रगट करेगा।4मेरा प्राण सिंहों के बीच में है\*,मुझे जलते हुओं के बीच में लेटना पड़ता है,अर्थात् ऐसे मनुष्यों के बीच में जिनके दाँत बर्छी और तीर हैं,और जिनकी जीभ तेज तलवार है।5हे परमेश्‍वर तू स्वर्ग के ऊपर अति महान और तेजोमय है,तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!6उन्होंने मेरे पैरों के लिये जाल बिछाया है;मेरा प्राण ढला जाता है।उन्होंने मेरे आगे गड्ढा खोदा,परन्तु आप ही उसमें गिर पड़े। (सेला)7हे परमेश्‍वर, मेरा मन स्थिर है, मेरा मन स्थिर है;मैं गाऊँगा वरन् भजन कीर्तन करूँगा।8हे मेरे मन जाग जा! हे सारंगी और वीणा जाग जाओ;मैं भी पौ फटते ही जाग उठूँगा\*।9हे प्रभु, मैं देश-देश के लोगों के बीच तेरा धन्यवाद करूँगा;मैं राज्य-राज्य के लोगों के बीच में तेरा भजन गाऊँगा।10क्योंकि तेरी करुणा स्वर्ग तक बड़ी है,और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुँचती है।11हे परमेश्‍वर, तू स्वर्ग के ऊपर अति महान है!तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर फैल जाए!

Chapter 58  
अन्याय के खिलाफ प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मिक्ताम  
  
1हे मनुष्यों, क्या तुम सचमुच धार्मिकता की बात बोलते हो?और हे मनुष्य वंशियों क्या तुम सिधाई से न्याय करते हो?2नहीं, तुम मन ही मन में कुटिल काम करते हो;तुम देश भर में उपद्रव करते जाते हो।3दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते हैं,वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं।4उनमें सर्प का सा विष है;वे उस नाग के समान है, जो सुनना नहीं चाहता\*;5और सपेरा कितनी ही निपुणता से क्यों न मंत्र पढ़े,तो भी उसकी नहीं सुनता।6हे परमेश्‍वर, उनके मुँह में से दाँतों को तोड़ दे;हे यहोवा, उन जवान सिंहों की दाढ़ों को उखाड़ डाल!7वे घुलकर बहते हुए पानी के समान हो जाएँ;जब वे अपने तीर चढ़ाएँ, तब तीर मानो दो टुकड़े हो जाएँ।8वे घोंघे के समान हो जाएँ जो घुलकर नाश हो जाता है,और स्त्री के गिरे हुए गर्भ के समान हो जिस ने सूरज को देखा ही नहीं।9इससे पहले कि तुम्हारी हाँड़ियों में काँटों की आँच लगे,हरे व जले, दोनों को वह बवण्डर से उड़ा ले जाएगा।10परमेश्‍वर का ऐसा पलटा देखकर आनन्दित होगा;वह अपने पाँव दुष्ट के लहू में धोएगा\*।11तब मनुष्य कहने लगेंगे, निश्चय धर्मी के लिये फल है;निश्चय परमेश्‍वर है, जो पृथ्वी पर न्याय करता है।

Chapter 59  
सुरक्षा के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये अल-तशहेत राग में दाऊद का मिक्ताम; जब शाऊल के भेजे हुए लोगों ने घर का पहरा दिया कि उसको मार डाले  
  
1हे मेरे परमेश्‍वर, मुझ को शत्रुओं से बचा,मुझे ऊँचे स्थान पर रखकर मेरे विरोधियों से बचा,2मुझ को बुराई करनेवालों के हाथ से बचा,और हत्यारों से मेरा उद्धार कर।3क्योंकि देख, वे मेरी घात में लगे हैं;हे यहोवा, मेरा कोई दोष या पाप नहीं है\*,तो भी बलवन्त लोग मेरे विरुद्ध इकट्ठे होते हैं।4मैं निर्दोष हूँ तो भी वे मुझसे लड़ने को मेरी ओर दौड़ते है;जाग और मेरी मदद कर, और यह देख!5हे सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा,हे इस्राएल के परमेश्‍वर सब अन्यजातियों को दण्ड देने के लिये जाग;किसी विश्वासघाती अत्याचारी पर अनुग्रह न कर। (सेला)6वे लोग सांझ को लौटकर कुत्ते के समान गुर्राते हैं,और नगर के चारों ओर घूमते हैं।7देख वे डकारते हैं, उनके मुँह के भीतर तलवारें हैं,क्योंकि वे कहते हैं, “कौन हमें सुनता है?”8परन्तु हे यहोवा, तू उन पर हँसेगा;तू सब अन्यजातियों को उपहास में उड़ाएगा।9हे परमेश्‍वर, मेरे बल, मैं तुझ पर ध्यान दूँगा,तू मेरा ऊँचा गढ़ है।10परमेश्‍वर करुणा करता हुआ मुझसे मिलेगा;परमेश्‍वर मेरे शत्रुओं के विषय मेरी इच्छा पूरी कर देगा\*।11उन्हें घात न कर, ऐसा न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए;हे प्रभु, हे हमारी ढाल!अपनी शक्ति से उन्हें तितर-बितर कर, उन्हें दबा दे।12वह अपने मुँह के पाप, और होंठों के वचन,और श्राप देने, और झूठ बोलने के कारण,अभिमान में फँसे हुए पकड़े जाएँ।13जलजलाहट में आकर उनका अन्त कर,उनका अन्त कर दे ताकि वे नष्ट हो जाएँतब लोग जानेंगे कि परमेश्‍वर याकूब पर,वरन् पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करता है। (सेला)14वे सांझ को लौटकर कुत्ते के समान गुर्राते,और नगर के चारों ओर घूमते है।15वे टुकड़े के लिये मारे-मारे फिरते,और तृप्त न होने पर रात भर गुर्राते है।16परन्तु मैं तेरी सामर्थ्य का यश गाऊँगा\*,और भोर को तेरी करुणा का जयजयकार करूँगा।क्योंकि तू मेरा ऊँचा गढ़ है,और संकट के समय मेरा शरणस्थान ठहरा है।17हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाऊँगा,क्योंकि हे परमेश्‍वर, तू मेरा ऊँचा गढ़और मेरा करुणामय परमेश्‍वर है।

Chapter 60  
छुटकारे के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का मिक्ताम शूशनेदूत राग में। शिक्षादायक। जब वह अरम्नहरैम और अरमसोबा से लड़ता था। और योआब ने लौटकर नमक की तराई में एदोमियों में से बारह हजार पुरुष मार लिये  
  
1हे परमेश्‍वर, तूने हमको त्याग दिया,और हमको तोड़ डाला है;तू क्रोधित हुआ; फिर हमको ज्यों का त्यों कर दे।2तूने भूमि को कँपाया और फाड़ डाला है;उसके दरारों को भर दे, क्योंकि वह डगमगा रही है।3तूने अपनी प्रजा को कठिन समय दिखाया;तूने हमें लड़खड़ा देनेवाला दाखमधु पिलाया है\*।4तूने अपने डरवैयों को झण्डा दिया है,कि वह सच्चाई के कारण फहराया जाए। (सेला)5तू अपने दाहिने हाथ से बचा, और हमारी सुन लेकि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएँ।6परमेश्‍वर पवित्रता के साथ बोला है, “मैं प्रफुल्लित हूँगा;मैं शेकेम को बाँट लूँगा, और सुक्कोत की तराई को नपवाऊँगा।7गिलाद मेरा है; मनश्शे भी मेरा है;और एप्रैम मेरे सिर का टोप,यहूदा मेरा राजदण्ड है।8मोआब मेरे धोने का पात्र है;मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूँगा;हे पलिश्तीन, मेरे ही कारण जयजयकार कर।”9मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुँचाएगा?एदोम तक मेरी अगुआई किसने की है?10हे परमेश्‍वर, क्या तूने हमको त्याग नहीं दिया?हे परमेश्‍वर, तू हमारी सेना के साथ नहीं जाता।11शत्रु के विरुद्ध हमारी सहायता कर,क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है\*।12परमेश्‍वर की सहायता से हम वीरता दिखाएँगे,क्योंकि हमारे शत्रुओं को वही रौंदेगा।

Chapter 61  
रक्षा के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजे के साथ दाऊद का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर, मेरा चिल्लाना सुन,मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दे।2मूर्छा खाते समय मैं पृथ्वी की छोर से भी तुझे पुकारूँगा,जो चट्टान मेरे लिये ऊँची है, उस पर मुझ को ले चल\*;3क्योंकि तू मेरा शरणस्थान है,और शत्रु से बचने के लिये ऊँचा गढ़ है।4मैं तेरे तम्बू में युगानुयुग बना रहूँगा।मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लिए रहूँगा। (सेला)5क्योंकि हे परमेश्‍वर, तूने मेरी मन्नतें सुनीं,जो तेरे नाम के डरवैये हैं, उनका सा भाग तूने मुझे दिया है।6तू राजा की आयु को बहुत बढ़ाएगा;उसके वर्ष पीढ़ी-पीढ़ी के बराबर होंगे।7वह परमेश्‍वर के सम्मुख सदा बना रहेगा;तू अपनी करुणा और सच्चाई को उसकी रक्षा के लिये ठहरा रख।8इस प्रकार मैं सर्वदा तेरे नाम का भजन गा-गाकरअपनी मन्नतें हर दिन पूरी किया करूँगा।

Chapter 62  
परमेश्‍वर के उद्धार के लिये प्रतिक्षाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन। यदूतून की राग पर  
  
1सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्‍वर की ओर मन लगाए हूँमेरा उद्धार उसी से होता है।2सचमुच वही, मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है,वह मेरा गढ़ है मैं अधिक न डिगूँगा।3तुम कब तक एक पुरुष पर धावा करते रहोगे,कि सब मिलकर उसका घात करो?वह तो झुकी हुई दीवार या गिरते हुए बाड़े के समान है।4सचमुच वे उसको, उसके ऊँचे पद से गिराने की सम्मति करते हैं;वे झूठ से प्रसन्‍न रहते हैं।मुँह से तो वे आशीर्वाद देते पर मन में कोसते हैं। (सेला)5हे मेरे मन, परमेश्‍वर के सामने चुपचाप रह,क्योंकि मेरी आशा उसी से है।6सचमुच वही मेरी चट्टान, और मेरा उद्धार है,वह मेरा गढ़ है; इसलिए मैं न डिगूँगा।7मेरे उद्धार और मेरी महिमा का आधार परमेश्‍वर है;मेरी दृढ़ चट्टान, और मेरा शरणस्थान परमेश्‍वर है।8हे लोगों, हर समय उस पर भरोसा रखो;उससे अपने-अपने मन की बातें खोलकर कहो\*;परमेश्‍वर हमारा शरणस्थान है। (सेला)9सचमुच नीच लोग तो अस्थाई, और बड़े लोग मिथ्या ही हैं;तौल में वे हलके निकलते हैं;वे सब के सब साँस से भी हलके हैं।10अत्याचार करने पर भरोसा मत रखो,और लूट पाट करने पर मत फूलो;चाहे धन सम्पत्ति बढ़े, तो भी उस पर मन न लगाना। (मत्ती 19:21-22, 1 तीमु. 6:17)11परमेश्‍वर ने एक बार कहा है;और दो बार मैंने यह सुना है:कि सामर्थ्य परमेश्‍वर का है\*12और हे प्रभु, करुणा भी तेरी है।क्योंकि तू एक-एक जन को उसके काम के अनुसार फल देता है। (दानि. 9:9, मत्ती 16:27, रोम. 2:6, प्रका. 22:12)

Chapter 63  
प्यासा मन परमेश्‍वर में तृप्तदाऊद का भजन; जब वह यहूदा के जंगल में था।  
  
1हे परमेश्‍वर, तू मेरा परमेश्‍वर है,मैं तुझे यत्न से ढूँढ़ूगा;सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर\*,मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।2इस प्रकार से मैंने पवित्रस्‍थान में तुझ पर दृष्टि की,कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूँ।3क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है,मैं तेरी प्रशंसा करूँगा।4इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूँगा;और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा।5मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा,और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूँगा।6जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूँगा,तब रात के एक-एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा;7क्योंकि तू मेरा सहायक बना है,इसलिए मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करूँगा\*।8मेरा मन तेरे पीछे-पीछे लगा चलता है;और मुझे तो तू अपने दाहिने हाथ से थाम रखता है।9परन्तु जो मेरे प्राण के खोजी हैं,वे पृथ्वी के नीचे स्थानों में जा पड़ेंगे;10वे तलवार से मारे जाएँगे,और गीदड़ों का आहार हो जाएँगे।11परन्तु राजा परमेश्‍वर के कारण आनन्दित होगा;जो कोई परमेश्‍वर की शपथ खाए, वह बड़ाई करने पाएगा;परन्तु झूठ बोलनेवालों का मुँह बन्द किया जाएगा।

Chapter 64  
अनर्थकारियों से संरक्षणप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर, जब मैं तेरी दुहाई दूँ, तब मेरी सुन;शत्रु के उपजाए हुए भय के समय मेरे प्राण की रक्षा कर।2कुकर्मियों की गोष्ठी से,और अनर्थकारियों के हुल्लड़ से मेरी आड़ हो।3उन्होंने अपनी जीभ को तलवार के समान तेज किया है,और अपने कड़वे वचनों के तीरों को चढ़ाया है;4ताकि छिपकर खरे मनुष्य को मारें;वे निडर होकर उसको अचानक मारते भी हैं।5वे बुरे काम करने को हियाव बाँधते हैं;वे फंदे लगाने के विषय बातचीत करते हैं;और कहते हैं, “हमको कौन देखेगा?”6वे कुटिलता की युक्ति निकालते हैं;और कहते हैं, “हमने पक्की युक्ति खोजकर निकाली है।”क्योंकि मनुष्य के मन और हृदय के विचार गहरे है।7परन्तु परमेश्‍वर उन पर तीर चलाएगा\*;वे अचानक घायल हो जाएँगे।8वे अपने ही वचनों के कारण ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे;जितने उन पर दृष्टि करेंगे वे सब अपने-अपने सिर हिलाएँगे9तब सारे लोग डर जाएँगे;और परमेश्‍वर के कामों का बखान करेंगे,और उसके कार्यक्रम को भली भाँति समझेंगे।10धर्मी तो यहोवा के कारण आनन्दित होकर उसका शरणागत होगा,और सब सीधे मनवाले बड़ाई करेंगे।

Chapter 65  
परमेश्‍वर की स्तुति और धन्यवादप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन, गीत  
  
1हे परमेश्‍वर, सिय्योन में स्तुति तेरी बाट जोहती है;और तेरे लिये मन्नतें पूरी की जाएँगी\*।2हे प्रार्थना के सुननेवाले!सब प्राणी तेरे ही पास आएँगे। (प्रेरि. 10:34-35, यह 66:23)3अधर्म के काम मुझ पर प्रबल हुए हैं;हमारे अपराधों को तू क्षमा करेगा।4क्या ही धन्य है वह, जिसको तू चुनकर अपने समीप आने देता है,कि वह तेरे आँगनों में वास करे!हम तेरे भवन के, अर्थात् तेरे पवित्र मन्दिर के उत्तम-उत्तम पदार्थों से तृप्त होंगे।5हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्‍वर,हे पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों के और दूर के समुद्र पर के रहनेवालों के आधार,तू धार्मिकता से किए हुए अद्भुत कार्यों द्वारा हमें उत्तर देगा;6तू जो पराक्रम का फेंटा कसे हुए,अपनी सामर्थ्य के पर्वतों को स्थिर करता है;7तू जो समुद्र का महाशब्द, उसकी तरंगों का महाशब्द,और देश-देश के लोगों का कोलाहल शान्त करता है\*; (मत्ती 8:26, यह. 17:12-13)8इसलिए दूर-दूर देशों के रहनेवाले तेरे चिन्ह देखकर डर गए हैं;तू उदयाचल और अस्ताचल दोनों से जयजयकार कराता है।9तू भूमि की सुधि लेकर उसको सींचता है,तू उसको बहुत फलदायक करता है;परमेश्‍वर की नदी जल से भरी रहती है;तू पृथ्वी को तैयार करके मनुष्यों के लिये अन्न को तैयार करता है।10तू रेघारियों को भली भाँति सींचता है,और उनके बीच की मिट्टी को बैठाता है,तू भूमि को मेंह से नरम करता है,और उसकी उपज पर आशीष देता है।11तेरी भलाइयों से, तू वर्ष को मुकुट पहनता है;तेरे मार्गों में उत्तम-उत्तम पदार्थ पाए जाते हैं।12वे जंगल की चराइयों में हरियाली फूट पड़ती हैं;और पहाड़ियाँ हर्ष का फेंटा बाँधे हुए है।13चराइयाँ भेड़-बकरियों से भरी हुई हैं;और तराइयाँ अन्न से ढँपी हुई हैं,वे जयजयकार करती और गाती भी हैं।

Chapter 66  
पराक्रम के कामों के लिये परमेश्‍वर की स्तुतिप्रधान बजानेवाले के लिये गीत, भजन  
  
1हे सारी पृथ्वी के लोगों, परमेश्‍वर के लिये जयजयकार करो;2उसके नाम की महिमा का भजन गाओ;उसकी स्तुति करते हुए, उसकी महिमा करो।3परमेश्‍वर से कहो, “तेरे काम कितने भयानक हैं\*!तेरी महासामर्थ्य के कारण तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे।4सारी पृथ्वी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे,और तेरा भजन गाएँगे;वे तेरे नाम का भजन गाएँगे।” (सेला)5आओ परमेश्‍वर के कामों को देखो;वह अपने कार्यों के कारण मनुष्यों को भययोग्य देख पड़ता है।6उसने समुद्र को सूखी भूमि कर डाला;वे महानद में से पाँव-पाँव पार उतरे।वहाँ हम उसके कारण आनन्दित हुए,7जो अपने पराक्रम से सर्वदा प्रभुता करता है,और अपनी आँखों से जाति-जाति को ताकता है।विद्रोही अपने सिर न उठाए। (सेला)8हे देश-देश के लोगों, हमारे परमेश्‍वर को धन्य कहो,और उसकी स्तुति में राग उठाओ,9जो हमको जीवित रखता है;और हमारे पाँव को टलने नहीं देता।10क्योंकि हे परमेश्‍वर तूने हमको जाँचा;तूने हमें चाँदी के समान ताया था\*। (1 पत. 1:7, यह. 48:10)11तूने हमको जाल में फँसाया;और हमारी कमर पर भारी बोझ बाँधा था;12तूने घुड़चढ़ों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया,हम आग और जल से होकर गए;परन्तु तूने हमको उबार के सुख से भर दिया है।13मैं होमबलि लेकर तेरे भवन में आऊँगामैं उन मन्नतों को तेरे लिये पूरी करूँगा\*,14जो मैंने मुँह खोलकर मानीं,और संकट के समय कही थीं।15मैं तुझे मोटे पशुओं की होमबलि,मेढ़ों की चर्बी की धूप समेत चढ़ाऊँगा;मैं बकरों समेत बैल चढ़ाऊँगा। (सेला)16हे परमेश्‍वर के सब डरवैयों, आकर सुनो,मैं बताऊँगा कि उसने मेरे लिये क्या-क्या किया है।17मैंने उसको पुकारा,और उसी का गुणानुवाद मुझसे हुआ।18यदि मैं मन में अनर्थ की बात सोचता,तो प्रभु मेरी न सुनता। (यूह. 9:31, नीति. 15:29)19परन्तु परमेश्‍वर ने तो सुना है;उसने मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दिया है।20धन्य है परमेश्‍वर,जिसने न तो मेरी प्रार्थना अनसुनी की,और न मुझसे अपनी करुणा दूर कर दी है!

Chapter 67  
धन्यवाद का भजनप्रधान बजानेवाले के लिये तारवाले बाजों के साथ भजन, गीत  
  
1परमेश्‍वर हम पर अनुग्रह करे और हमको आशीष दे;वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, (सेला)2जिससे तेरी गति पृथ्वी पर,और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना जाए। (लूका 2:30-31, तीतु. 2:11)3हे परमेश्‍वर, देश-देश के लोग तेरा धन्यवाद करें;देश-देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें।4राज्य-राज्य के लोग आनन्द करें,और जयजयकार करें,क्योंकि तू देश-देश के लोंगों का न्याय धर्म से करेगा,और पृथ्वी के राज्य-राज्य के लोगों की अगुआई करेगा\*। (सेला)5हे परमेश्‍वर, देश-देश के लोग तेरा धन्यवाद करें;देश-देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें।6भूमि ने अपनी उपज दी है,परमेश्‍वर जो हमारा परमेश्‍वर है, उसने हमें आशीष दी है।7परमेश्‍वर हमको आशीष देगा;और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग उसका भय मानेंगे।

Chapter 68  
इस्राएल का विजयगानप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन, गीत  
  
1परमेश्‍वर उठे, उसके शत्रु तितर-बितर हों;और उसके बैरी उसके सामने से भाग जाएँ!2जैसे धुआँ उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे;जैसे मोम आग की आँच से पिघल जाता है,वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्‍वर की उपस्थिति से नाश हों।3परन्तु धर्मी आनन्दित हों; वे परमेश्‍वर के सामने प्रफुल्लित हों;वे आनन्द में मगन हों!4परमेश्‍वर का गीत गाओ, उसके नाम का भजन गाओ;जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है,उसके लिये सड़क बनाओ;उसका नाम यहोवा है, इसलिए तुम उसके सामने प्रफुल्लित हो!5परमेश्‍वर अपने पवित्र धाम में,अनाथों का पिता और विधवाओं का न्यायी है\*।6परमेश्‍वर अनाथों का घर बसाता है;और बन्दियों को छुड़ाकर सम्पन्न करता है;परन्तु विद्रोहियों को सूखी भूमि पर रहना पड़ता है।7हे परमेश्‍वर, जब तू अपनी प्रजा के आगे-आगे चलता था,जब तू निर्जल भूमि में सेना समेत चला, (सेला)8तब पृथ्वी काँप उठी,और आकाश भी परमेश्‍वर के सामने टपकने लगा,उधर सीनै पर्वत परमेश्‍वर, हाँ इस्राएल के परमेश्‍वर के सामने काँप उठा। (इब्रा. 12:26, न्या 5:4-5)9हे परमेश्‍वर, तूने बहुतायत की वर्षा की;तेरा निज भाग तो बहुत सूखा था, परन्तु तूने उसको हरा-भरा किया है;10तेरा झुण्ड उसमें बसने लगा;हे परमेश्‍वर तूने अपनी भलाई से दीन जन के लिये तैयारी की है।11प्रभु आज्ञा देता है,तब शुभ समाचार सुनानेवालियों की बड़ी सेना हो जाती है।12अपनी-अपनी सेना समेत राजा भागे चले जाते हैं,और गृहस्थिन लूट को बाँट लेती है।13क्या तुम भेड़शालों के बीच लेट जाओगे?और ऐसी कबूतरी के समान होंगे जिसके पंख चाँदी सेऔर जिसके पर पीले सोने से मढ़े हुए हों?14जब सर्वशक्तिमान ने उसमें राजाओं को तितर-बितर किया,तब मानो सल्मोन पर्वत पर हिम पड़ा।15बाशान का पहाड़ परमेश्‍वर का पहाड़ है;बाशान का पहाड़ बहुत शिखरवाला पहाड़ है।16परन्तु हे शिखरवाले पहाड़ों, तुम क्यों उस पर्वत को घूरते हो,जिसे परमेश्‍वर ने अपने वास के लिये चाहा है,और जहाँ यहोवा सदा वास किए रहेगा?17परमेश्‍वर के रथ बीस हजार, वरन् हजारों हजार हैं;प्रभु उनके बीच में है,जैसे वह सीनै पवित्रस्‍थान में है।18तू ऊँचे पर चढ़ा, तू लोगों को बँधुवाई में ले गया;तूने मनुष्यों से, वरन् हठीले मनुष्यों से भी भेंटें लीं,जिससे यहोवा परमेश्‍वर उनमें वास करे। (इफि. 4:8)19धन्य है प्रभु, जो प्रतिदिन हमारा बोझ उठाता है;वही हमारा उद्धारकर्ता परमेश्‍वर है। (सेला)20वही हमारे लिये बचानेवाला परमेश्‍वर ठहरा;यहोवा प्रभु मृत्यु से भी बचाता है\*।21निश्चय परमेश्‍वर अपने शत्रुओं के सिर पर,और जो अधर्म के मार्ग पर चलता रहता है,उसका बाल भरी खोपड़ी पर मार-मार के उसे चूर करेगा।22प्रभु ने कहा है, “मैं उन्हें बाशान से निकाल लाऊँगा,मैं उनको गहरे सागर के तल से भी फेर ले आऊँगा,23कि तू अपने पाँव को लहू में डुबोए,और तेरे शत्रु तेरे कुत्तों का भाग ठहरें।”24हे परमेश्‍वर तेरी शोभा-यात्राएँ देखी गई,मेरे परमेश्‍वर और राजा की शोभा यात्रा पवित्रस्‍थान में जाते हुए देखी गई।25गानेवाले आगे-आगे और तारवाले बाजों के बजानेवाले पीछे-पीछे गए,चारों ओर कुमारियाँ डफ बजाती थीं।26सभाओं में परमेश्‍वर का,हे इस्राएल के सोते से निकले हुए लोगों,प्रभु का धन्यवाद करो।27पहला बिन्यामीन जो सबसे छोटा गोत्र है,फिर यहूदा के हाकिम और उनकी सभाऔर जबूलून और नप्ताली के हाकिम हैं।28तेरे परमेश्‍वर ने तेरी सामर्थ्य को बनाया है,हे परमेश्‍वर, अपनी सामर्थ्य को हम पर प्रकट कर, जैसा तूने पहले प्रकट किया है।29तेरे मन्दिर के कारण जो यरूशलेम में हैं,राजा तेरे लिये भेंट ले आएँगे।30नरकटों में रहनेवाले जंगली पशुओं को,सांडों के झुण्ड को और देश-देश के बछड़ों को झिड़क दे।वे चाँदी के टुकड़े लिये हुए प्रणाम करेंगे;जो लोगे युद्ध से प्रसन्‍न रहते हैं, उनको उसने तितर-बितर किया है।31मिस्र से अधिकारी आएँगे;कूशी अपने हाथों को परमेश्‍वर की ओर फुर्ती से फैलाएँगे।32हे पृथ्वी पर के राज्य-राज्य के लोगों परमेश्‍वर का गीत गाओ;प्रभु का भजन गाओ, (सेला)33जो सबसे ऊँचे सनातन स्वर्ग में सवार होकर चलता है;देखो वह अपनी वाणी सुनाता है, वह गम्भीर वाणी शक्तिशाली है।34परमेश्‍वर की सामर्थ्य की स्तुति करो\*,उसका प्रताप इस्राएल पर छाया हुआ है,और उसकी सामर्थ्य आकाशमण्डल में है।35हे परमेश्‍वर, तू अपने पवित्रस्थानों में भययोग्य है,इस्राएल का परमेश्‍वर ही अपनी प्रजा को सामर्थ्य और शक्ति का देनेवाला है।परमेश्‍वर धन्य है।

Chapter 69  
संकट में सहायता के लिये पुकारप्रधान बजानेवाले के लिये शोशन्नीम राग में दाऊद का गीत  
  
1हे परमेश्‍वर, मेरा उद्धार कर, मैं जल में डूबा जाता हूँ।2मैं बड़े दलदल में धँसा जाता हूँ, और मेरे पैर कहीं नहीं रूकते;मैं गहरे जल में आ गया, और धारा में डूबा जाता हूँ।3मैं पुकारते-पुकारते थक गया, मेरा गला सूख गया है;अपने परमेश्‍वर की बाट जोहते-जोहते, मेरी आँखें धुँधली पड़ गई हैं।4जो अकारण मेरे बैरी हैं, वे गिनती में मेरे सिर के बालों से अधिक हैं;मेरे विनाश करनेवाले जो व्यर्थ मेरे शत्रु हैं, वे सामर्थीं हैं,इसलिए जो मैंने लूटा नहीं वह भी मुझ को देना पड़ा। (यूह. 15:25, भजन 35:19)5हे परमेश्‍वर, तू तो मेरी मूर्खता को जानता है,और मेरे दोष तुझ से छिपे नहीं हैं।6हे प्रभु, हे सेनाओं के यहोवा, जो तेरी बाट जोहते हैं, वे मेरे कारण लज्जित न हो;हे इस्राएल के परमेश्‍वर, जो तुझे ढूँढ़ते हैं, वह मेरे कारण अपमानित न हो।7तेरे ही कारण मेरी निन्दा हुई है\*,और मेरा मुँह लज्जा से ढपा है।8मैं अपने भाइयों के सामने अजनबी हुआ,और अपने सगे भाइयों की दृष्टि में परदेशी ठहरा हूँ।9क्योंकि मैं तेरे भवन के निमित्त जलते-जलते भस्म हुआ,और जो निन्दा वे तेरी करते हैं, वही निन्दा मुझ को सहनी पड़ी है। (यूह. 2:17, रोम. 15:3, इब्रा. 11:26)10जब मैं रोकर और उपवास करके दुःख उठाता था,तब उससे भी मेरी नामधराई ही हुई।11जब मैं टाट का वस्त्र पहने था,तब मेरा दृष्टान्त उनमें चलता था।12फाटक के पास बैठनेवाले मेरे विषय बातचीत करते हैं,और मदिरा पीनेवाले मुझ पर लगता हुआ गीत गाते हैं।13परन्तु हे यहोवा, मेरी प्रार्थना तो तेरी प्रसन्नता के समय में हो रही है;हे परमेश्‍वर अपनी करुणा की बहुतायात से,और बचाने की अपनी सच्ची प्रतिज्ञा के अनुसार मेरी सुन ले।14मुझ को दलदल में से उबार, कि मैं धँस न जाऊँ;मैं अपने बैरियों से, और गहरे जल में से बच जाऊँ।15मैं धारा में डूब न जाऊँ,और न मैं गहरे जल में डूब मरूँ,और न पाताल का मुँह मेरे ऊपर बन्द हो।16हे यहोवा, मेरी सुन ले, क्योंकि तेरी करुणा उत्तम है;अपनी दया की बहुतायत के अनुसार मेरी ओर ध्यान दे।17अपने दास से अपना मुँह न मोड़;क्योंकि मैं संकट में हूँ, फुर्ती से मेरी सुन ले।18मेरे निकट आकर मुझे छुड़ा ले,मेरे शत्रुओं से मुझ को छुटकारा दे।19मेरी नामधराई और लज्जा और अनादर को तू जानता है:मेरे सब द्रोही तेरे सामने हैं।20मेरा हृदय नामधराई के कारण फट गया, और मैं बहुत उदास हूँ।मैंने किसी तरस खानेवाले की आशा तो की,परन्तु किसी को न पाया,और शान्ति देनेवाले ढूँढ़ता तो रहा, परन्तु कोई न मिला।21लोगों ने मेरे खाने के लिये विष दिया,और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया\*। (मर. 15:23,36, लूका 23:36, यूह. 19:28-29)22उनका भोजन उनके लिये फंदा हो जाए;और उनके सुख के समय जाल बन जाए।23उनकी आँखों पर अंधेरा छा जाए, ताकि वे देख न सके;और तू उनकी कटि को निरन्तर कँपाता रह। (रोम. 11:9-10)24उनके ऊपर अपना रोष भड़का,और तेरे क्रोध की आँच उनको लगे। (प्रका. 16:1)25उनकी छावनी उजड़ जाए,उनके डेरों में कोई न रहे। (प्रेरि. 1:20)26क्योंकि जिसको तूने मारा, वे उसके पीछे पड़े हैं,और जिनको तूने घायल किया, वे उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं। (यह. 53:4)27उनके अधर्म पर अधर्म बढ़ा;और वे तेरे धर्म को प्राप्त न करें।28उनका नाम जीवन की पुस्तक में से काटा जाए,और धर्मियों के संग लिखा न जाए। (लूका 10:20, प्रका. 3:5, प्रका. 20:12,15, प्रका. 21:27)29परन्तु मैं तो दुःखी और पीड़ित हूँ,इसलिए हे परमेश्‍वर, तू मेरा उद्धार करके मुझे ऊँचे स्थान पर बैठा।30मैं गीत गाकर तेरे नाम की स्तुति करूँगा,और धन्यवाद करता हुआ तेरी बड़ाई करूँगा।31यह यहोवा को बैल से अधिक,वरन् सींग और खुरवाले बैल से भी अधिक भाएगा।32नम्र लोग इसे देखकर आनन्दित होंगे,हे परमेश्‍वर के खोजियों, तुम्हारा मन हरा हो जाए\*।33क्योंकि यहोवा दरिद्रों की ओर कान लगाता है,और अपने लोगों को जो बन्दी हैं तुच्छ नहीं जानता।34स्वर्ग और पृथ्वी उसकी स्तुति करें,और समुद्र अपने सब जीवजन्तुओं समेत उसकी स्तुति करे।35क्योंकि परमेश्‍वर सिय्योन का उद्धार करेगा,और यहूदा के नगरों को फिर बसाएगा;और लोग फिर वहाँ बसकर उसके अधिकारी हो जाएँगे।36उसके दासों को वंश उसको अपने भाग में पाएगा,और उसके नाम के प्रेमी उसमें वास करेंगे।

Chapter 70  
सहायता के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये: स्मरण कराने के लिये दाऊद का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर, मुझे छुड़ाने के लिये, हे यहोवा, मेरी सहायता करने के लिये फुर्ती कर!2जो मेरे प्राण के खोजी हैं,वे लज्जित और अपमानित हो जाए\*!जो मेरी हानि से प्रसन्‍न होते हैं,वे पीछे हटाए और निरादर किए जाएँ।3जो कहते हैं, “आहा, आहा!”वे अपनी लज्जा के मारे उलटे फेरे जाएँ।4जितने तुझे ढूँढ़ते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों!और जो तेरा उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, “परमेश्‍वर की बड़ाई हो!”5मैं तो दीन और दरिद्र हूँ;हे परमेश्‍वर मेरे लिये फुर्ती कर!तू मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है;हे यहोवा विलम्ब न कर!

Chapter 71  
एक वृद्ध की प्रार्थना

1हे यहोवा, मैं तेरा शरणागत हूँ;मुझे लज्जित न होने दे।2तू तो धर्मी है, मुझे छुड़ा और मेरा उद्धार कर;मेरी ओर कान लगा, और मेरा उद्धार कर।3मेरे लिये सनातन काल की चट्टान का धाम बन, जिसमें मैं नित्य जा सकूँ;तूने मेरे उद्धार की आज्ञा तो दी है,क्योंकि तू मेरी चट्टान और मेरा गढ़ ठहरा है।4हे मेरे परमेश्‍वर, दुष्ट केऔर कुटिल और क्रूर मनुष्य के हाथ से मेरी रक्षा कर।5क्योंकि हे प्रभु यहोवा, मैं तेरी ही बाट जोहता आया हूँ;बचपन से मेरा आधार तू है।6मैं गर्भ से निकलते ही, तेरे द्वारा सम्भाला गया;मुझे माँ की कोख से तू ही ने निकाला\*;इसलिए मैं नित्य तेरी स्तुति करता रहूँगा।7मैं बहुतों के लिये चमत्कार बना हूँ;परन्तु तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है।8मेरे मुँह से तेरे गुणानुवाद,और दिन भर तेरी शोभा का वर्णन बहुत हुआ करे।9बुढ़ापे के समय मेरा त्याग न कर;जब मेरा बल घटे तब मुझ को छोड़ न दे।10क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विषय बातें करते हैं,और जो मेरे प्राण की ताक में हैं,वे आपस में यह सम्मति करते हैं कि11परमेश्‍वर ने उसको छोड़ दिया है;उसका पीछा करके उसे पकड़ लो, क्योंकि उसका कोई छुड़ानेवाला नहीं।12हे परमेश्‍वर, मुझसे दूर न रह;हे मेरे परमेश्‍वर, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर!13जो मेरे प्राण के विरोधी हैं, वे लज्जित होऔर उनका अन्त हो जाए;जो मेरी हानि के अभिलाषी हैं, वे नामधराईऔर अनादर में गड़ जाएँ।14मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूँगा,और तेरी स्तुति अधिकाधिक करता जाऊँगा।15मैं अपने मुँह से तेरी धार्मिकता का,और तेरे किए हुए उद्धार का वर्णन दिन भर करता रहूँगा,क्योंकि उनका पूरा ब्योरा मेरी समझ से परे है।16मैं प्रभु यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन करता हुआ आऊँगा,मैं केवल तेरी ही धार्मिकता की चर्चा किया करूँगा।17हे परमेश्‍वर, तू तो मुझ को बचपन ही से सिखाता आया है,और अब तक मैं तेरे आश्चर्यकर्मों का प्रचार करता आया हूँ।18इसलिए हे परमेश्‍वर जब मैं बूढ़ा हो जाऊँऔर मेरे बाल पक जाएँ, तब भी तू मुझे न छोड़,जब तक मैं आनेवाली पीढ़ी के लोगों कोतेरा बाहुबल और सब उत्‍पन्‍न होनेवालों को तेरा पराक्रम सुनाऊँ।19हे परमेश्‍वर, तेरी धार्मिकता अति महान है।तू जिस ने महाकार्य किए हैं,हे परमेश्‍वर तेरे तुल्य कौन है?20तूने तो हमको बहुत से कठिन कष्ट दिखाए हैंपरन्तु अब तू फिर से हमको जिलाएगा;और पृथ्वी के गहरे गड्ढे में से उबार लेगा\*।21तू मेरे सम्मान को बढ़ाएगा\*,और फिरकर मुझे शान्ति देगा।22हे मेरे परमेश्‍वर,मैं भी तेरी सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर गाऊँगा;हे इस्राएल के पवित्र मैं वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊँगा।23जब मैं तेरा भजन गाऊँगा, तब अपने मुँह सेऔर अपने प्राण से भी जो तूने बचा लिया है, जयजयकार करूँगा।24और मैं तेरे धार्मिकता की चर्चा दिन भर करता रहूँगा;क्योंकि जो मेरी हानि के अभिलाषी थे,वे लज्जित और अपमानित हुए।

Chapter 72  
मसीह के शासनकाल की महिमा और सार्वभौमिकतासुलैमान का गीत  
  
1हे परमेश्‍वर, राजा को अपना नियम बता,राजपुत्र को अपनी धार्मिकता सिखला!2वह तेरी प्रजा का न्याय धार्मिकता से,और तेरे दीन लोगों का न्याय ठीक-ठीक चुकाएगा। (मत्ती25:31-34, प्रेरि. 17:31, रोम. 14:10, 2 कुरि. 5:10)3पहाड़ों और पहाड़ियों से प्रजा के लिये,धार्मिकता के द्वारा शान्ति मिला करेगी4वह प्रजा के दीन लोगों का न्याय करेगा, और दरिद्र लोगों को बचाएगा;और अत्याचार करनेवालों को चूर करेगा\*। (यह. 11:4)5जब तक सूर्य और चन्द्रमा बने रहेंगेतब तक लोग पीढ़ी-पीढ़ी तेरा भय मानते रहेंगे।6वह घास की खूँटी पर बरसने वाले मेंह,और भूमि सींचने वाली झड़ियों के समान होगा।7उसके दिनों में धर्मी फूले फलेंगे,और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा, तब तक शान्ति बहुत रहेगी।8वह समुद्र से समुद्र तकऔर महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा।9उसके सामने जंगल के रहनेवाले घुटने टेकेंगे,और उसके शत्रु मिट्टी चाटेंगे।10तर्शीश और द्वीप-द्वीप के राजा भेंट ले आएँगे,शेबा और सबा दोनों के राजा उपहार पहुँचाएगे।11सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे,जाति-जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे। (प्रका. 21:26, मत्ती 2:11)12क्योंकि वह दुहाई देनेवाले दरिद्र का,और दुःखी और असहाय मनुष्य का उद्धार करेगा।13वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाएगा,और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा।14वह उनके प्राणों को अत्याचार और उपद्रव से छुड़ा लेगा;और उनका लहू उसकी दृष्टि में अनमोल ठहरेगा\*। (तीतु. 2:14)15वह तो जीवित रहेगा और शेबा के सोने में से उसको दिया जाएगा।लोग उसके लिये नित्य प्रार्थना करेंगे;और दिन भर उसको धन्य कहते रहेंगे।16देश में पहाड़ों की चोटियों पर बहुत सा अन्न होगा;जिसकी बालें लबानोन के देवदारों के समान झूमेंगी;और नगर के लोग घास के समान लहलहाएँगे।17उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा;जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा,और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे,सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी।18धन्य है यहोवा परमेश्‍वर, जो इस्राएल का परमेश्‍वर है;आश्चर्यकर्म केवल वही करता है। (भज. 136:4)19उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा;और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी।आमीन फिर आमीन।20यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थना समाप्त हुई।

Chapter 73  
तीसरा भागभजन 73—89परमेश्‍वर का न्यायआसाप का भजन  
  
1सचमुच इस्राएल के लिये अर्थात् शुद्ध मनवालों के लिये परमेश्‍वर भला है।2मेरे डग तो उखड़ना चाहते थे,मेरे डग फिसलने ही पर थे।3क्योंकि जब मैं दुष्टों का कुशल देखता था,तब उन घमण्डियों के विषय डाह करता था।4क्योंकि उनकी मृत्यु में वेदनाएँ नहीं होतीं,परन्तु उनका बल अटूट रहता है।5उनको दूसरे मनुष्यों के समान कष्ट नहीं होता;और अन्य मनुष्यों के समान उन पर विपत्ति नहीं पड़ती।6इस कारण अहंकार उनके गले का हार बना है;उनका ओढ़ना उपद्रव है।7उनकी आँखें चर्बी से झलकती हैं,उनके मन की भवनाएँ उमड़ती हैं।8वे ठट्ठा मारते हैं, और दुष्टता से हिंसा की बात बोलते हैं;वे डींग मारते हैं।9वे मानो स्वर्ग में बैठे हुए बोलते हैं\*,और वे पृथ्वी में बोलते फिरते हैं।10इसलिए उसकी प्रजा इधर लौट आएगी,और उनको भरे हुए प्याले का जल मिलेगा।11फिर वे कहते हैं, “परमेश्‍वर कैसे जानता है?क्या परमप्रधान को कुछ ज्ञान है?”12देखो, ये तो दुष्ट लोग हैं;तो भी सदा आराम से रहकर, धन सम्पत्ति बटोरते रहते हैं।13निश्चय, मैंने अपने हृदय को व्यर्थ शुद्ध कियाऔर अपने हाथों को निर्दोषता में धोया है;14क्योंकि मैं दिन भर मार खाता आया हूँऔर प्रति भोर को मेरी ताड़ना होती आई है।15यदि मैंने कहा होता, “मैं ऐसा कहूँगा”,तो देख मैं तेरे सन्तानों की पीढ़ी के साथ छल करता,16जब मैं सोचने लगा कि इसे मैं कैसे समझूँ,तो यह मेरी दृष्टि में अति कठिन समस्या थी,17जब तक कि मैंने परमेश्‍वर के पवित्रस्‍थान में जाकरउन लोगों के परिणाम को न सोचा।18निश्चय तू उन्हें फिसलनेवाले स्थानों में रखता है;और गिराकर सत्यानाश कर देता है।19वे क्षण भर में कैसे उजड़ गए हैं!वे मिट गए, वे घबराते-घबराते नाश हो गए हैं।20जैसे जागनेवाला स्वप्न को तुच्छ जानता है,वैसे ही हे प्रभु जब तू उठेगा, तब उनको छाया सा समझकर तुच्छ जानेगा।21मेरा मन तो कड़ुवा हो गया था,मेरा अन्तःकरण छिद गया था,22मैं अबोध और नासमझ था,मैं तेरे सम्‍मुख मूर्ख पशु के समान था।\*23तो भी मैं निरन्तर तेरे संग ही था;तूने मेरे दाहिने हाथ को पकड़ रखा।24तू सम्मति देता हुआ, मेरी अगुआई करेगा,और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा।25स्वर्ग में मेरा और कौन है?तेरे संग रहते हुए मैं पृथ्वी पर और कुछ नहीं चाहता।26मेरे हृदय और मन दोनों तो हार गए हैं,परन्तु परमेश्‍वर सर्वदा के लिये मेरा भागऔर मेरे हृदय की चट्टान बना है।27जो तुझ से दूर रहते हैं वे तो नाश होंगे;जो कोई तेरे विरुद्ध व्यभिचार करता है, उसको तू विनाश करता है।28परन्तु परमेश्‍वर के समीप रहना, यही मेरे लिये भला है;मैंने प्रभु यहोवा को अपना शरणस्थान माना है,जिससे मैं तेरे सब कामों को वर्णन करूँ।

Chapter 74  
उत्पीड़कों से राहत के लिए प्रार्थनाआसाप का मश्कील  
  
1हे परमेश्‍वर, तूने हमें क्यों सदा के लिये छोड़ दिया है?तेरी कोपाग्नि का धुआँ तेरी चराई की भेड़ों के विरुद्ध क्यों उठ रहा है?2अपनी मण्डली को जिसे तूने प्राचीनकाल में मोल लिया था\*,और अपने निज भाग का गोत्र होने के लिये छुड़ा लिया था,और इस सिय्योन पर्वत को भी, जिस पर तूने वास किया था, स्मरण कर! (व्य. 32:9, यिर्म. 10;16, प्रेरि. 20:28)3अपने डग अनन्त खण्डहरों की ओर बढ़ा;अर्थात् उन सब बुराइयों की ओर जो शत्रु ने पवित्रस्‍थान में की हैं।4तेरे द्रोही तेरे पवित्रस्‍थान के बीच गर्जते रहे हैं;उन्होंने अपनी ही ध्वजाओं को चिन्ह ठहराया है।5जो घने वन के पेड़ों पर कुल्हाड़े चलाते हैं;6और अब वे उस भवन की नक्काशी को,कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से बिल्कुल तोड़े डालते हैं।7उन्होंने तेरे पवित्रस्‍थान को आग में झोंक दिया है,और तेरे नाम के निवास को गिराकर अशुद्ध कर डाला है।8उन्होंने मन में कहा है, “हम इनको एकदम दबा दें।”उन्होंने इस देश में परमेश्‍वर के सब सभास्थानों को फूँक दिया है।9हमको अब परमेश्‍वर के कोई अद्भुत चिन्ह दिखाई नहीं देते;अब कोई नबी नहीं रहा,न हमारे बीच कोई जानता है कि कब तक यह दशा रहेगी।10हे परमेश्‍वर द्रोही कब तक नामधराई करता रहेगा?क्या शत्रु, तेरे नाम की निन्दा सदा करता रहेगा?11तू अपना दाहिना हाथ क्यों रोके रहता है?उसे अपने पंजर से निकालकर उनका अन्त कर दे।12परमेश्‍वर तो प्राचीनकाल से मेरा राजा है,वह पृथ्वी पर उद्धार के काम करता आया है।13तूने तो अपनी शक्ति से समुद्र को दो भाग कर दिया;तूने तो समुद्री अजगरों के सिरों को फोड़ दिया\*।14तूने तो लिव्यातान के सिरों को टुकड़े-टुकड़े करके जंगली जन्तुओं को खिला दिए।15तूने तो सोता खोलकर जल की धारा बहाई,तूने तो बारहमासी नदियों को सूखा डाला।16दिन तेरा है रात भी तेरी है;सूर्य और चन्द्रमा को तूने स्थिर किया है।17तूने तो पृथ्वी की सब सीमाओं को ठहराया;धूपकाल और सर्दी दोनों तूने ठहराए हैं।18हे यहोवा, स्मरण कर कि शत्रु ने नामधराई की है,और मूर्ख लोगों ने तेरे नाम की निन्दा की है।19अपनी पिंडुकी के प्राण को वन पशु के वश में न कर;अपने दीन जनों को सदा के लिये न भूल20अपनी वाचा की सुधि ले;क्योंकि देश के अंधेरे स्थान अत्याचार के घरों से भरपूर हैं।21पिसे हुए जन को निरादर होकर लौटना न पड़े;दीन और दरिद्र लोग तेरे नाम की स्तुति करने पाएँ। (भज. 103:6)22हे परमेश्‍वर, उठ, अपना मुकद्दमा आप ही लड़;तेरी जो नामधराई मूर्ख द्वारा दिन भर होती रहती है, उसे स्मरण कर।23अपने द्रोहियों का बड़ा बोल न भूल,तेरे विरोधियों का कोलाहल तो निरन्तर उठता रहता है।

Chapter 75  
न्याय के लिए परमेश्‍वर का धन्यवादप्रधान बजानेवाले के लिये : अलतशहेत राग में आसाप का भजन । गीत ।  
  
1हे परमेश्‍वर हम तेरा धन्यवाद करते, हम तेरा नाम धन्यवाद करते हैं;क्योंकि तेरे नाम प्रगट हुआ है\*, तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन हो रहा है।2जब ठीक समय आएगातब मैं आप ही ठीक-ठीक न्याय करूँगा।3जब पृथ्वी अपने सब रहनेवालों समेत डोल रही है,तब मैं ही उसके खम्भों को स्थिर करता हूँ। (सेला)4मैंने घमण्डियों से कहा, “घमण्ड मत करो,”और दुष्टों से, “सींग ऊँचा मत करो;5अपना सींग बहुत ऊँचा मत करो,न सिर उठाकर ढिठाई की बात बोलो।”6क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पश्चिम से,और न जंगल की ओर से आती है;7परन्तु परमेश्‍वर ही न्यायी है,वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।8यहोवा के हाथ में एक कटोरा है, जिसमें का दाखमधु झागवाला है;उसमें मसाला मिला है\*, और वह उसमें से उण्डेलता है,निश्चय उसकी तलछट तक पृथ्वी के सब दुष्ट लोग पी जाएँगे। (यिर्म. 25:15, प्रका. 14:10, प्रका. 16:19)9परन्तु मैं तो सदा प्रचार करता रहूँगा,मैं याकूब के परमेश्‍वर का भजन गाऊँगा।10दुष्टों के सब सींगों को मैं काट डालूँगा,परन्तु धर्मी के सींग ऊँचे किए जाएँगे।

Chapter 76  
जयवन्त परमेश्‍वरप्रधान बजानेवाले के लिये: तारवाले बाजों के साथ, आसाप का भजन, गीत  
  
1परमेश्‍वर यहूदा में जाना गया है,उसका नाम इस्राएल में महान हुआ है।2और उसका मण्डप शालेम में,और उसका धाम सिय्योन में है।3वहाँ उसने तीरों को,ढाल, तलवार को और युद्ध के अन्य हथियारों को तोड़ डाला। (सेला)4हे परमेश्‍वर, तू तो ज्योतिर्मय है:तू अहेर से भरे हुए पहाड़ों से अधिक उत्तम और महान है।5दृढ़ मनवाले लुट गए, और भरी नींद में पड़े हैं;और शूरवीरों में से किसी का हाथ न चला।6हे याकूब के परमेश्‍वर, तेरी घुड़की से,रथों समेत घोड़े भारी नींद में पड़े हैं।7केवल तू ही भययोग्य है;और जब तू क्रोध करने लगे, तब तेरे सामने कौन खड़ा रह सकेगा?8तूने स्वर्ग से निर्णय सुनाया है;पृथ्वी उस समय सुनकर डर गई, और चुप रही,9जब परमेश्‍वर न्याय करने को,और पृथ्वी के सब नम्र लोगों का उद्धार करने को उठा\*। (सेला)10निश्चय मनुष्य की जलजलाहट तेरी स्तुति का कारण हो जाएगी,और जो जलजलाहट रह जाए, उसको तू रोकेगा।11अपने परमेश्‍वर यहोवा की मन्नत मानो, और पूरी भी करो;वह जो भय के योग्य है\*, उसके आस-पास के सब उसके लिये भेंट ले आएँ।12वह तो प्रधानों का अभिमान मिटा देगा;वह पृथ्वी के राजाओं को भययोग्य जान पड़ता है।

Chapter 77  
संकट के समय में सांत्वनाप्रधान बजानेवाले के लिये: यदूतून की राग पर, आसाप का भजन  
  
1मैं परमेश्‍वर की दुहाई चिल्ला चिल्लाकर दूँगा,मैं परमेश्‍वर की दुहाई दूँगा, और वह मेरी ओर कान लगाएगा।2संकट के दिन मैं प्रभु की खोज में लगा रहा;रात को मेरा हाथ फैला रहा, और ढीला न हुआ,मुझ में शान्ति आई ही नहीं\*।3मैं परमेश्‍वर का स्मरण कर-करके कराहता हूँ;मैं चिन्ता करते-करते मूर्च्छित हो चला हूँ। (सेला)4तू मुझे झपकी लगने नहीं देता;मैं ऐसा घबराया हूँ कि मेरे मुँह से बात नहीं निकलती।5मैंने प्राचीनकाल के दिनों को,और युग-युग के वर्षों को सोचा है।6मैं रात के समय अपने गीत को स्मरण करता;और मन में ध्यान करता हूँ,और मन में भली भाँति विचार करता हूँ:7“क्या प्रभु युग-युग के लिये मुझे छोड़ देगा;और फिर कभी प्रसन्‍न न होगा?8क्या उसकी करुणा सदा के लिये जाती रही?क्या उसका वचन पीढ़ी-पीढ़ी के लिये निष्फल हो गया है?9क्या परमेश्‍वर अनुग्रह करना भूल गया?क्या उसने क्रोध करके अपनी सब दया को रोक रखा है?” (सेला)10मैंने कहा, “यह तो मेरा दुःख है, कि परमप्रधान का दाहिना हाथ बदल गया है।”11मैं यहोवा के बड़े कामों की चर्चा करूँगा;निश्चय मैं तेरे प्राचीनकालवाले अद्भुत कामों को स्मरण करूँगा।12मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूँगा,और तेरे बड़े कामों को सोचूँगा।13हे परमेश्‍वर तेरी गति पवित्रता की है।कौन सा देवता परमेश्‍वर के तुल्य बड़ा है?14अद्भुत काम करनेवाला परमेश्‍वर तू ही है,तूने देश-देश के लोगों पर अपनी शक्ति प्रगट की है।15तूने अपने भुजबल से अपनी प्रजा,याकूब और यूसुफ के वंश को छुड़ा लिया है। (सेला)16हे परमेश्‍वर, समुद्र ने तुझे देखा\*,समुद्र तुझे देखकर डर गया,गहरा सागर भी काँप उठा।17मेघों से बड़ी वर्षा हुई;आकाश से शब्द हुआ;फिर तेरे तीर इधर-उधर चले।18बवंडर में तेरे गरजने का शब्द सुन पड़ा था;जगत बिजली से प्रकाशित हुआ;पृथ्वी काँपी और हिल गई।19तेरा मार्ग समुद्र में है,और तेरा रास्ता गहरे जल में हुआ;और तेरे पाँवों के चिन्ह मालूम नहीं होते।20तूने मूसा और हारून के द्वारा,अपनी प्रजा की अगुआई भेड़ों की सी की।

Chapter 78  
परमेश्‍वर और उसके लोगआसाप का मश्कील  
  
1हे मेरे लोगों, मेरी शिक्षा सुनो;मेरे वचनों की ओर कान लगाओ!2मैं अपना मुँह नीतिवचन कहने के लिये खोलूँगा\*;मैं प्राचीनकाल की गुप्त बातें कहूँगा, (मत्ती 13:35)3जिन बातों को हमने सुना, और जान लिया,और हमारे बाप दादों ने हम से वर्णन किया है।4उन्हें हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे,परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से,यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ्यऔर आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगे। (व्य. 4:9, यहो. 4:6-7, इफि. 6:4)5उसने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई,और इस्राएल में एक व्यवस्था चलाई,जिसके विषय उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी,कि तुम इन्हें अपने-अपने बाल-बच्चों को बताना;6कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात् जो बच्चे उत्‍पन्‍न होनेवाले हैं, वे इन्हें जानें;और अपने-अपने बाल-बच्चों से इनका बखान करने में उद्यत हों,7जिससे वे परमेश्‍वर का भरोसा रखें, परमेश्‍वर के बड़े कामों को भूल न जाएँ,परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें;8और अपने पितरों के समान न हों,क्योंकि उस पीढ़ी के लोग तो हठीले और झगड़ालू थे,और उन्होंने अपना मन स्थिर न किया था,और न उनकी आत्मा परमेश्‍वर की ओर सच्ची रही। (2 राजा. 17:14-15)9एप्रैमियों ने तो शस्त्रधारी और धनुर्धारी होने पर भी,युद्ध के समय पीठ दिखा दी।10उन्होंने परमेश्‍वर की वाचा पूरी नहीं की,और उसकी व्यवस्था पर चलने से इन्कार किया।11उन्होंने उसके बड़े कामों को और जो आश्चर्यकर्म उसने उनके सामने किए थे,उनको भुला दिया।12उसने तो उनके बाप-दादों के सम्मुख मिस्र देश के सोअन के मैदान में अद्भुत कर्म किए थे।13उसने समुद्र को दो भाग करके उन्हें पार कर दिया,और जल को ढेर के समान खड़ा कर दिया।14उसने दिन को बादल के खम्भे सेऔर रात भर अग्नि के प्रकाश के द्वारा उनकी अगुआई की।15वह जंगल में चट्टानें फाड़कर,उनको मानो गहरे जलाशयों से मनमाना पिलाता था। (निर्ग. 17:6, गिन. 20:11, 1 कुरि. 10:4)16उसने चट्टान से भी धाराएँ निकालींऔर नदियों का सा जल बहाया।17तो भी वे फिर उसके विरुद्ध अधिक पाप करते गए,और निर्जल देश में परमप्रधान के विरुद्ध उठते रहे।18और अपनी चाह के अनुसार भोजन माँगकर मन ही मन परमेश्‍वर की परीक्षा की\*।19वे परमेश्‍वर के विरुद्ध बोले,और कहने लगे, “क्या परमेश्‍वर जंगल में मेज लगा सकता है?20उसने चट्टान पर मारके जल बहा तो दिया,और धाराएँ उमण्ड चली,परन्तु क्या वह रोटी भी दे सकता है?क्या वह अपनी प्रजा के लिये माँस भी तैयार कर सकता?”21यहोवा सुनकर क्रोध से भर गया,तब याकूब के विरुद्ध उसकी आग भड़क उठी,और इस्राएल के विरुद्ध क्रोध भड़का;22इसलिए कि उन्होंने परमेश्‍वर पर विश्वास नहीं रखा था,न उसकी उद्धार करने की शक्ति पर भरोसा किया।23तो भी उसने आकाश को आज्ञा दी,और स्वर्ग के द्वारों को खोला;24और उनके लिये खाने को मन्ना बरसाया,और उन्हें स्वर्ग का अन्न दिया। (निर्ग. 16:4, यूह. 6:31)25मनुष्यों को स्वर्गदूतों की रोटी मिली;उसने उनको मनमाना भोजन दिया।26उसने आकाश में पुरवाई को चलाया,और अपनी शक्ति से दक्षिणी बहाई;27और उनके लिये माँस धूलि के समान बहुत बरसाया,और समुद्र के रेत के समान अनगिनत पक्षी भेजे;28और उनकी छावनी के बीच में,उनके निवासों के चारों ओर गिराए।29और वे खाकर अति तृप्त हुए,और उसने उनकी कामना पूरी की।30उनकी कामना बनी ही रही,उनका भोजन उनके मुँह ही में था,31कि परमेश्‍वर का क्रोध उन पर भड़का,और उसने उनके हष्टपुष्टों को घात किया,और इस्राएल के जवानों को गिरा दिया। (1 कुरि. 10:5)32इतने पर भी वे और अधिक पाप करते गए;और परमेश्‍वर के आश्चर्यकर्मों पर विश्वास न किया।33तब उसने उनके दिनों को व्यर्थ श्रम में,और उनके वर्षों को घबराहट में कटवाया।34जब वह उन्हें घात करने लगता\*, तब वे उसको पूछते थे;और फिरकर परमेश्‍वर को यत्न से खोजते थे।35उनको स्मरण होता था कि परमेश्‍वर हमारी चट्टान है,और परमप्रधान परमेश्‍वर हमारा छुड़ानेवाला है।36तो भी उन्होंने उसकी चापलूसी की;वे उससे झूठ बोले।37क्योंकि उनका हृदय उसकी ओर दृढ़ न था;न वे उसकी वाचा के विषय सच्चे थे। (प्रेरि. 8:21)38परन्तु वह जो दयालु है, वह अधर्म को ढाँपता, और नाश नहीं करता;वह बार-बार अपने क्रोध को ठण्डा करता है,और अपनी जलजलाहट को पूरी रीति से भड़कने नहीं देता।39उसको स्मरण हुआ कि ये नाशवान हैं,ये वायु के समान हैं जो चली जाती और लौट नहीं आती।40उन्होंने कितनी ही बार जंगल में उससे बलवा किया,और निर्जल देश में उसको उदास किया!41वे बार-बार परमेश्‍वर की परीक्षा करते थे,और इस्राएल के पवित्र को खेदित करते थे।42उन्होंने न तो उसका भुजबल स्मरण किया,न वह दिन जब उसने उनको द्रोही के वश से छुड़ाया था;43कि उसने कैसे अपने चिन्ह मिस्र में,और अपने चमत्कार सोअन के मैदान में किए थे।44उसने तो मिस्रियों की नदियों को लहू बना डाला,और वे अपनी नदियों का जल पी न सके। (प्रका. 16:4)45उसने उनके बीच में डांस भेजे जिन्होंने उन्हें काट खाया,और मेंढ़क भी भेजे, जिन्होंने उनका बिगाड़ किया।46उसने उनकी भूमि की उपज कीड़ों को,और उनकी खेतीबारी टिड्डियों को खिला दी थी।47उसने उनकी दाखलताओं को ओेलों से,और उनके गूलर के पेड़ों को ओले बरसाकर नाश किया।48उसने उनके पशुओं को ओलों से,और उनके ढोरों को बिजलियों से मिटा दिया।49उसने उनके ऊपर अपना प्रचण्ड क्रोध और रोष भड़काया,और उन्हें संकट में डाला,और दुःखदाई दूतों का दल भेजा।50उसने अपने क्रोध का मार्ग खोला,और उनके प्राणों को मृत्यु से न बचाया,परन्तु उनको मरी के वश में कर दिया।51उसने मिस्र के सब पहलौठों को मारा,जो हाम के डेरों में पौरूष के पहले फल थे;52परन्तु अपनी प्रजा को भेड़-बकरियों के समान प्रस्थान कराया,और जंगल में उनकी अगुआई पशुओं के झुण्ड की सी की।53तब वे उसके चलाने से बेखटके चले और उनको कुछ भय न हुआ,परन्तु उनके शत्रु समुद्र में डूब गए।54और उसने उनको अपने पवित्र देश की सीमा तक,इसी पहाड़ी देश में पहुँचाया, जो उसने अपने दाहिने हाथ से प्राप्त किया था।55उसने उनके सामने से अन्यजातियों को भगा दिया;और उनकी भूमि को डोरी से माप-मापकर बाँट दिया;और इस्राएल के गोत्रों को उनके डेरों में बसाया।56तो भी उन्होंने परमप्रधान परमेश्‍वर की परीक्षा की और उससे बलवा किया,और उसकी चितौनियों को न माना,57और मुड़कर अपने पुरखाओं के समान विश्वासघात किया;उन्होंने निकम्मे धनुष के समान धोखा दिया।58क्योंकि उन्होंने ऊँचे स्थान बनाकर उसको रिस दिलाई,और खुदी हुई मूर्तियों के द्वारा उसमें से जलन उपजाई।59परमेश्‍वर सुनकर रोष से भर गया,और उसने इस्राएल को बिल्कुल तज दिया।60उसने शीलो के निवास,अर्थात् उस तम्बू को जो उसने मनुष्यों के बीच खड़ा किया था, त्याग दिया,61और अपनी सामर्थ्य को बँधुवाई में जाने दिया,और अपनी शोभा को द्रोही के वश में कर दिया।62उसने अपनी प्रजा को तलवार से मरवा दिया,और अपने निज भाग के विरुद्ध रोष से भर गया।63उनके जवान आग से भस्म हुए,और उनकी कुमारियों के विवाह के गीत न गाएँ गए।64उनके याजक तलवार से मारे गए,और उनकी विधवाएँ रोने न पाई।65तब प्रभु मानो नींद से चौंक उठा\*,और ऐसे वीर के समान उठा जो दाखमधु पीकर ललकारता हो।66उसने अपने द्रोहियों को मारकर पीछे हटा दिया;और उनकी सदा की नामधराई कराई।67फिर उसने यूसुफ के तम्बू को तज दिया;और एप्रैम के गोत्र को न चुना;68परन्तु यहूदा ही के गोत्र को,और अपने प्रिय सिय्योन पर्वत को चुन लिया।69उसने अपने पवित्रस्‍थान को बहुत ऊँचा बना दिया,और पृथ्वी के समान स्थिर बनाया, जिसकी नींव उसने सदा के लिये डाली है।70फिर उसने अपने दास दाऊद को चुनकर भेड़शालाओं में से ले लिया;71वह उसको बच्चेवाली भेड़ों के पीछे-पीछे फिरने से ले आयाकि वह उसकी प्रजा याकूब की अर्थात् उसके निज भाग इस्राएल की चरवाही करे।72तब उसने खरे मन से उनकी चरवाही की,और अपने हाथ की कुशलता से उनकी अगुआई की।

Chapter 79  
इस्राएल के छुटकारे लिए प्रार्थनाआसाप का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर, अन्यजातियाँ तेरे निभागज भाग में घुस आईं;उन्होंने तेरे पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया;और यरूशलेम को खण्डहर कर दिया है। (लूका 21:24, प्रका. 11:2)2उन्होंने तेरे दासों की शवों को आकाश के पक्षियों का आहार कर दिया,और तेरे भक्तों का माँस पृथ्‍वी के वन-पशुओं को खिला दिया है।3उन्होंने उनका लहू यरूशलेम के चारों ओर जल के समान बहाया,और उनको मिट्टी देनेवाला कोई न था। (प्रका.16:6)4पड़ोसियों के बीच हमारी नामधराई हुई;चारों ओर के रहनेवाले हम पर हँसते, और ठट्ठा करते हैं।5हे यहोवा, कब तक\*? क्या तू सदा के लिए क्रोधित रहेगा?तुझ में आग की सी जलन कब तक भड़कती रहेगी?6जो जातियाँ तुझको नहीं जानती,और जिन राज्यों के लोग तुझ से प्रार्थना नहीं करते,उन्हीं पर अपनी सब जलजलाहट भड़का! (1 थिस्सलु. 4:5, 2 थिस्सलु. 1:8)7क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल लिया,और उसके वासस्थान को उजाड़ दिया है।8हमारी हानि के लिये हमारे पुरखाओं के अधर्म के कामों को स्मरण न कर;तेरी दया हम पर शीघ्र हो, क्योंकि हम बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं।9हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्‍वर, अपने नाम की महिमा के निमित्त हमारी सहायता कर;और अपने नाम के निमित्त हमको छुड़ाकर हमारे पापों को ढाँप दे।10अन्यजातियाँ क्यों कहने पाएँ कि उनका परमेश्‍वर कहाँ रहा?तेरे दासों के खून का पलटा अन्यजातियों पर हमारी आँखों के सामने लिया जाए। (प्रका. 6:10, प्रका. 19:2)11बन्दियों का कराहना तेरे कान तक पहुँचे\*;घात होनेवालों को अपने भुजबल के द्वारा बचा।12हे प्रभु, हमारे पड़ोसियों ने जो तेरी निन्दा की है,उसका सात गुणा बदला उनको दे!13तब हम जो तेरी प्रजा और तेरी चराई की भेड़ें हैं,तेरा धन्यवाद सदा करते रहेंगे;और पीढ़ी से पीढ़ी तक तेरा गुणानुवाद करते रहेंगे।

Chapter 80  
इस्राएली जाति के लिये प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये: शोशत्रीमेदूत राग में आसाप का भजन  
  
1हे इस्राएल के चरवाहे,तू जो यूसुफ की अगुआई भेड़ों की सी करता है, कान लगा!तू जो करूबों पर विराजमान है, अपना तेज दिखा!2एप्रैम, बिन्यामीन, और मनश्शे के सामने अपना पराक्रम दिखाकर,हमारा उद्धार करने को आ!3हे परमेश्‍वर, हमको ज्यों के त्यों कर दे;और अपने मुख का प्रकाश चमका, तब हमारा उद्धार हो जाएगा!4हे सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा,तू कब तक अपनी प्रजा की प्रार्थना पर क्रोधित रहेगा\*?5तूने आँसुओं को उनका आहार बना दिया,और मटके भर-भरके उन्हें आँसू पिलाए हैं।6तू हमें हमारे पड़ोसियों के झगड़ने का कारण बना देता है;और हमारे शत्रु मनमाना ठट्ठा करते हैं।7हे सेनाओं के परमेश्‍वर, हमको ज्यों के त्यों कर दे;और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका,तब हमारा उद्धार हो जाएगा।8तू मिस्र से एक दाखलता ले आया;और अन्यजातियों को निकालकर उसे लगा दिया।9तूने उसके लिये स्थान तैयार किया है;और उसने जड़ पकड़ी और फैलकर देश को भर दिया।10उसकी छाया पहाड़ों पर फैल गई,और उसकी डालियाँ महा देवदारों के समान हुई;11उसकी शाखाएँ समुद्र तक बढ़ गई,और उसके अंकुर फरात तक फैल गए।12फिर तूने उसके बाड़ों को क्यों गिरा दिया,कि सब बटोही उसके फलों को तोड़ते है?13जंगली सूअर उसको नाश किए डालता है,और मैदान के सब पशु उसे चर जाते हैं।14हे सेनाओं के परमेश्‍वर, फिर आ\*!स्वर्ग से ध्यान देकर देख, और इस दाखलता की सुधि ले,15ये पौधा तूने अपने दाहिने हाथ से लगाया,और जो लता की शाखा तूने अपने लिये दृढ़ की है।16वह जल गई, वह कट गई है;तेरी घुड़की से तेरे शत्रु नाश हो जाए।17तेरे दाहिने हाथ के सम्भाले हुए पुरुष पर तेरा हाथ रखा रहे,उस आदमी पर, जिसे तूने अपने लिये दृढ़ किया है।18तब हम लोग तुझ से न मुड़ेंगे:तू हमको जिला, और हम तुझ से प्रार्थना कर सकेंगे।19हे सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा, हमको ज्यों का त्यों कर दे!और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका,तब हमारा उद्धार हो जाएगा!

Chapter 81  
आज्ञाकारिता के लिये बुलाहटप्रधान बजानेवाले के लिये : गित्तीथ राग में आसाप का भजन  
  
1परमेश्‍वर जो हमारा बल है, उसका गीत आनन्द से गाओ;याकूब के परमेश्‍वर का जयजयकार करो! (भज. 67:4)2गीत गाओ, डफ और मधुर बजनेवाली वीणा और सारंगी को ले आओ।3नये चाँद के दिन,और पूर्णमासी को हमारे पर्व के दिन नरसिंगा फूँको।4क्योंकि यह इस्राएल के लिये विधि,और याकूब के परमेश्‍वर का ठहराया हुआ नियम है।5इसको उसने यूसुफ में चितौनी की रीति पर उस समय चलाया,जब वह मिस्र देश के विरुद्ध चला।वहाँ मैंने एक अनजानी भाषा सुनी6“मैंने उनके कंधों पर से बोझ को उतार दिया;उनका टोकरी ढोना छूट गया।7तूने संकट में पड़कर पुकारा, तब मैंने तुझे छुड़ाया;बादल गरजने के गुप्त स्थान में से मैंने तेरी सुनी,और मरीबा नामक सोते के पास\* तेरी परीक्षा की। (सेला)8हे मेरी प्रजा, सुन, मैं तुझे चिता देता हूँ!हे इस्राएल भला हो कि तू मेरी सुने!9तेरे बीच में पराया ईश्वर न हो;और न तू किसी पराए देवता को दण्डवत् करना!10तेरा परमेश्‍वर यहोवा मैं हूँ,जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है।तू अपना मुँह पसार, मैं उसे भर दूँगा\*। (भज. 37:3-4)11“परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी न सुनी;इस्राएल ने मुझ को न चाहा।12इसलिए मैंने उसको उसके मन के हठ पर छोड़ दिया,कि वह अपनी ही युक्तियों के अनुसार चले। (प्रेरि. 14:16,)13यदि मेरी प्रजा मेरी सुने,यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले,14तो मैं क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊँ,और अपना हाथ उनके द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊँ।15यहोवा के बैरी उसके आगे भय में दण्डवत् करे!उन्हें हमेशा के लिए अपमानित किया जाएगा।16मैं उनको उत्तम से उत्तम गेहूँ खिलाता,और मैं चट्टान के मधु से उनको तृप्त करता।”

Chapter 82  
सच्चे न्याय के लिए दलीलआसाप का भजन  
  
1परमेश्‍वर दिव्य सभा में खड़ा है:वह ईश्वरों के बीच में न्याय करता है।2“तुम लोग कब तक टेढ़ा न्याय करतेऔर दुष्टों का पक्ष लेते रहोगे\*? (सेला)3कंगाल और अनाथों का न्याय चुकाओ,दीन-दरिद्र का विचार धर्म से करो।4कंगाल और निर्धन को बचा लो;दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ।”5वे न तो कुछ समझते और न कुछ जानते हैं,परन्तु अंधेरे में चलते-फिरते रहते हैं\*;पृथ्वी की पूरी नींव हिल जाती है।6मैंने कहा था “तुम ईश्वर हो,और सब के सब परमप्रधान के पुत्र हो; (यूह. 10:34)7तो भी तुम मनुष्यों के समान मरोगे,और किसी प्रधान के समान गिर जाओगे।”8हे परमेश्‍वर उठ, पृथ्वी का न्याय कर;क्योंकि तू ही सब जातियों को अपने भाग में लेगा!

Chapter 83  
शत्रुओं के विरुद्ध प्रार्थना गीतआसाप का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर मौन न रह;हे परमेश्‍वर चुप न रह, और न शान्त रह!2क्योंकि देख तेरे शत्रु धूम मचा रहे हैं;और तेरे बैरियों ने सिर उठाया है।3वे चतुराई से तेरी प्रजा की हानि की सम्मति करते,और तेरे रक्षित लोगों के विरुद्ध युक्तियाँ निकालते हैं।4उन्होंने कहा, “आओ, हम उनका ऐसा नाश करें कि राज्य भी मिट जाए;और इस्राएल का नाम आगे को स्मरण न रहे।”5उन्होंने एक मन होकर युक्ति निकाली है\*,और तेरे ही विरुद्ध वाचा बाँधी है।6ये तो एदोम के तम्बूवालेऔर इश्माएली, मोआबी और हग्री,7गबाली, अम्मोनी, अमालेकी,और सोर समेत पलिश्ती हैं।8इनके संग अश्शूरी भी मिल गए हैं;उनसे भी लूतवंशियों को सहारा मिला है। (सेला)9इनसे ऐसा कर जैसा मिद्यानियों से\*,और कीशोन नाले में सीसरा और याबीन से किया\* था,10वे एनदोर में नाश हुए,और भूमि के लिये खाद बन गए।11इनके रईसों को ओरेब और जेब सरीखे,और इनके सब प्रधानों को जेबह और सल्मुन्ना के समान कर दे,12जिन्होंने कहा था,“हम परमेश्‍वर की चराइयों के अधिकारी आप ही हो जाएँ।”13हे मेरे परमेश्‍वर इनको बवंडर की धूलि,या पवन से उड़ाए हुए भूसे के समान कर दे।14उस आग के समान जो वन को भस्म करती है,और उस लौ के समान जो पहाड़ों को जला देती है,15तू इन्हें अपनी आँधी से भगा दे,और अपने बवंडर से घबरा दे!16इनके मुँह को अति लज्जित कर,कि हे यहोवा ये तेरे नाम को ढूँढ़ें।17ये सदा के लिये लज्जित और घबराए रहें,इनके मुँह काले हों, और इनका नाश हो जाए,18जिससे ये जानें कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है,सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है।

Chapter 84  
परमेश्‍वर के भवन की चाहतप्रधान बजानेवाले के लिये गित्तीथ में कोरहवंशियों का भजन  
  
1हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवास क्या ही प्रिय हैं!2मेरा प्राण यहोवा के आँगनों की अभिलाषा करते-करते मूर्छित हो चला;मेरा तन मन दोनों\* जीविते परमेश्‍वर को पुकार रहे।3हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा, और मेरे परमेश्‍वर, तेरी वेदियों में गौरैया ने अपना बसेराऔर शूपाबेनी ने घोंसला बना लिया है जिसमें वह अपने बच्चे रखे।4क्या ही धन्य हैं वे, जो तेरे भवन में रहते हैं;वे तेरी स्तुति निरन्तर करते रहेंगे। (सेला)5क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जो तुझ से शक्ति पाता है,और वे जिनको सिय्योन की सड़क की सुधि रहती है।6वे रोने की तराई में जाते हुए उसको सोतों का स्थान बनाते हैं;फिर बरसात की अगली वृष्टि उसमें आशीष ही आशीष उपजाती है।7वे बल पर बल पाते जाते हैं\*;उनमें से हर एक जन सिय्योन में परमेश्‍वर को अपना मुँह दिखाएगा।8हे सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन,हे याकूब के परमेश्‍वर, कान लगा! (सेला)9हे परमेश्‍वर, हे हमारी ढाल, दृष्टि कर;और अपने अभिषिक्त का मुख देख!10क्योंकि तेरे आँगनों में एक दिन और कहीं के हजार दिन से उत्तम है।दुष्टों के डेरों में वास करने सेअपने परमेश्‍वर के भवन की डेवढ़ी पर खड़ा रहना ही मुझे अधिक भावता है।11क्योंकि यहोवा परमेश्‍वर सूर्य और ढाल है;यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा;और जो लोग खरी चाल चलते हैं;उनसे वह कोई अच्छी वस्तु रख न छोड़ेगा\*।12हे सेनाओं के यहोवा,क्या ही धन्य वह मनुष्य है, जो तुझ पर भरोसा रखता है!

Chapter 85  
राष्ट्र के कल्याण के लिए प्रार्थनाप्रधान बजानेवालों के लिये : कोरहवंशियों का भजन  
  
1हे यहोवा, तू अपने देश पर प्रसन्‍न हुआ, याकूब को बँधुवाई से लौटा ले आया है।2तूने अपनी प्रजा के अधर्म को क्षमा किया है;और उसके सब पापों को ढाँप दिया है। (सेला)3तूने अपने रोष को शान्त किया है;और अपने भड़के हुए कोप को दूर किया है।4हे हमारे उद्धारकर्ता परमेश्‍वर, हमको पुनः स्थापित कर,और अपना क्रोध हम पर से दूर कर\*!5क्या तू हम पर सदा कोपित रहेगा?क्या तू पीढ़ी से पीढ़ी तक कोप करता रहेगा?6क्या तू हमको फिर न जिलाएगा,कि तेरी प्रजा तुझ में आनन्द करे?7हे यहोवा अपनी करुणा हमें दिखा,और तू हमारा उद्धार कर।8मैं कान लगाए रहूँगा कि परमेश्‍वर यहोवा क्या कहता है,वह तो अपनी प्रजा से जो उसके भक्त है, शान्ति की बातें कहेगा;परन्तु वे फिरके मूर्खता न करने लगें।9निश्चय उसके डरवैयों के उद्धार का समय निकट है\*,तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा।10करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं;धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया हैं।11पृथ्वी में से सच्चाई उगतीऔर स्वर्ग से धर्म झुकता है।12हाँ, यहोवा उत्तम वस्तुएँ देगा,और हमारी भूमि अपनी उपज देगी।13धर्म उसके आगे-आगे चलेगा,और उसके पाँवों के चिन्हों को हमारे लिये मार्ग बनाएगा।

Chapter 86  
विलाप और प्रार्थनादाऊद की प्रार्थना  
  
1हे यहोवा, कान लगाकर मेरी सुन ले,क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूँ।2मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं भक्त हूँ;तू मेरा परमेश्‍वर है, इसलिए अपने दास का,जिसका भरोसा तुझ पर है, उद्धार कर।3हे प्रभु, मुझ पर अनुग्रह कर,क्योंकि मैं तुझी को लगातार पुकारता रहता हूँ।4अपने दास के मन को आनन्दित कर,क्योंकि हे प्रभु, मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ।5क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है,और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभी के लिये तू अति करुणामय है।6हे यहोवा मेरी प्रार्थना की ओर कान लगा,और मेरे गिड़गिड़ाने को ध्यान से सुन।7संकट के दिन मैं तुझको पुकारूँगा,क्योंकि तू मेरी सुन लेगा।8हे प्रभु, देवताओं में से कोई भी तेरे तुल्य नहीं,और न किसी के काम तेरे कामों के बराबर हैं।9हे प्रभु, जितनी जातियों को तूने बनाया है,सब आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी,और तेरे नाम की महिमा करेंगी\*। (प्रका. 15:4)10क्योंकि तू महान और आश्चर्यकर्म करनेवाला है,केवल तू ही परमेश्‍वर है।11हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे सिखा, तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूँगा,मुझ को एक चित्त कर कि मैं तेरे नाम का भय मानूँ।12हे प्रभु, हे मेरे परमेश्‍वर, मैं अपने सम्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूँगा,और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूँगा।13क्योंकि तेरी करुणा मेरे ऊपर बड़ी है;और तूने मुझ को अधोलोक की तह में जाने से बचा लिया है।14हे परमेश्‍वर, अभिमानी लोग मेरे विरुद्ध उठ गए हैं,और उपद्रवियों का झुण्ड मेरे प्राण के खोजी हुए हैं,और वे तेरा कुछ विचार नहीं रखते।15परन्तु प्रभु दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्‍वर है,तू विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है।16मेरी ओर फिरकर मुझ पर अनुग्रह कर;अपने दास को तू शक्ति दे\*,और अपनी दासी के पुत्र का उद्धार कर।17मुझे भलाई का कोई चिन्ह दिखा,जिसे देखकर मेरे बैरी निराश हों,क्योंकि हे यहोवा, तूने आप मेरी सहायता कीऔर मुझे शान्ति दी है।

Chapter 87  
परमेश्‍वर का नगर सिय्योन की स्तुति मेंकोरहवंशियों का भजन  
  
1उसकी नींव पवित्र पर्वतों में है;2और यहोवा सिय्योन के फाटकों से याकूब के सारे निवासों से बढ़कर प्रीति रखता है।3हे परमेश्‍वर के नगर,तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं। (सेला)4मैं अपने जान-पहचानवालों से रहब और बाबेल की भी चर्चा करूँगा;पलिश्त, सोर और कूश को देखो:“यह वहाँ उत्‍पन्‍न हुआ था\*।”5और सिय्योन के विषय में यह कहा जाएगा,“इनमें से प्रत्येक का जन्म उसमें हुआ था।”और परमप्रधान आप ही उसको स्थिर रखे।6यहोवा जब देश-देश के लोगों के नाम लिखकर गिन लेगा, तब यह कहेगा,“यह वहाँ उत्‍पन्‍न हुआ था।” (सेला)7गवैये और नृतक दोनों कहेंगे,“हमारे सब सोते तुझी में पाए जाते हैं।”

Chapter 88  
हताशा में मदद के लिए प्रार्थना गीत;कोरहवंशियों का भजनप्रधान बजानेवाले के लिये : महलतलग्नोत राग में एज्रावंशी हेमान का मश्कील  
  
1हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्‍वर यहोवा,मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लाता आया हूँ।2मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचे,मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा!3क्योंकि मेरा प्राण क्लेश से भरा हुआ है,और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुँचा है।4मैं कब्र में पड़नेवालों में गिना गया हूँ;मैं बलहीन पुरुष के समान हो गया हूँ।5मैं मुर्दों के बीच छोड़ा गया हूँ,और जो घात होकर कब्र में पड़े हैं,जिनको तू फिर स्मरण नहीं करताऔर वे तेरी सहायता रहित हैं,उनके समान मैं हो गया हूँ।6तूने मुझे गड्ढे के तल ही में,अंधेरे और गहरे स्थान में रखा है।7तेरी जलजलाहट मुझी पर बनी हुई है\*,और तूने अपने सब तरंगों से मुझे दुःख दिया है। (सेला)8तूने मेरे पहचानवालों को मुझसे दूर किया है;और मुझ को उनकी दृष्टि में घिनौना किया है।मैं बन्दी हूँ और निकल नहीं सकता; (अय्यू.19:13, भजन 31:11, लूका 23:49)9दुःख भोगते-भोगते मेरी आँखें धुँधला गई।हे यहोवा, मैं लगातार तुझे पुकारता और अपने हाथ तेरी ओर फैलाता आया हूँ।10क्या तू मुर्दों के लिये अद्भुत काम करेगा?क्या मरे लोग उठकर तेरा धन्यवाद करेंगे? (सेला)11क्या कब्र में तेरी करुणा का,और विनाश की दशा में तेरी सच्चाई का वर्णन किया जाएगा?12क्या तेरे अद्भुत काम अंधकार में,या तेरा धर्म विश्वासघात की दशा में जाना जाएगा?13परन्तु हे यहोवा, मैंने तेरी दुहाई दी है;और भोर को मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचेगी।14हे यहोवा, तू मुझ को क्यों छोड़ता है?तू अपना मुख मुझसे क्यों छिपाता रहता है?15मैं बचपन ही से दुःखी वरन् अधमुआ हूँ,तुझ से भय खाते\* मैं अति व्याकुल हो गया हूँ।16तेरा क्रोध मुझ पर पड़ा है;उस भय से मैं मिट गया हूँ।17वह दिन भर जल के समान मुझे घेरे रहता है;वह मेरे चारों ओर दिखाई देता है।18तूने मित्र और भाईबन्धु दोनों को मुझसे दूर किया है;और मेरे जान-पहचानवालों को अंधकार में डाल दिया है।

Chapter 89  
राष्ट्रीय विपत्ति के समय स्तुतिगानएतान एज्रावंशी का मश्कील  
  
1मैं यहोवा की सारी करुणा के विषय सदा गाता रहूँगा;मैं तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बताता रहूँगा।2क्योंकि मैंने कहा, “तेरी करुणा सदा बनी रहेगी,तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर रखेगा।”3तूने कहा, “मैंने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है,मैंने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है,4‘मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा\*;और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी-पीढ़ी तक बनाए रखूँगा’।” (सेला)(यूह. 7:42, 2 शमू. 7:11-16)5हे यहोवा, स्वर्ग में तेरे अद्भुत काम की,और पवित्रों की सभा में तेरी सच्चाई की प्रशंसा होगी।6क्योंकि आकाशमण्डल में यहोवा के तुल्य कौन ठहरेगा?बलवन्तों के पुत्रों में से कौन है जिसके साथ यहोवा की उपमा दी जाएगी?7परमेश्‍वर पवित्र लोगों की गोष्ठी में अत्यन्त प्रतिष्ठा के योग्य,और अपने चारों ओर सब रहनेवालों से अधिक भययोग्य है। (2 थिस्सलु. 1:10, भजन 76:7,11)8हे सेनाओं के परमेश्‍वर यहोवा,हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन सामर्थी है?तेरी सच्चाई तो तेरे चारों ओर है!9समुद्र के गर्व को तू ही तोड़ता है;जब उसके तरंग उठते हैं, तब तू उनको शान्त कर देता है।10तूने रहब को घात किए हुए के समान कुचल डाला,और अपने शत्रुओं को अपने बाहुबल से तितर-बितर किया है। (लूका 1:51, यह 51:9)11आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है;जगत और जो कुछ उसमें है, उसे तू ही ने स्थिर किया है। (1 कुरि. 10:26, भजन 24:1-2)12उत्तर और दक्षिण को तू ही ने सिरजा;ताबोर और हेर्मोन तेरे नाम का जयजयकार करते हैं।13तेरी भुजा बलवन्त है;तेरा हाथ शक्तिमान और तेरा दाहिना हाथ प्रबल है।14तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है;करुणा और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती है।15क्या ही धन्य है वह समाज जो आनन्द के ललकार को पहचानता है;हे यहोवा, वे लोग तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं,16वे तेरे नाम के हेतु दिन भर मगन रहते हैं,और तेरे धर्म के कारण महान हो जाते हैं।17क्योंकि तू उनके बल की शोभा है,और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊँचा करेगा।18क्योंकि हमारी ढाल यहोवा की ओर से है,हमारा राजा इस्राएल के पवित्र की ओर से है।19एक समय तूने अपने भक्त को दर्शन देकर बातें की;और कहा, “मैंने सहायता करने का भार एक वीर पर रखा है,और प्रजा में से एक को चुनकर बढ़ाया है।20मैंने अपने दास दाऊद को लेकर,अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है। (प्रेरि. 13:22)21मेरा हाथ उसके साथ बना रहेगा,और मेरी भुजा उसे दृढ़ रखेगी।22शत्रु उसको तंग करने न पाएगा,और न कुटिल जन उसको दुःख देने पाएगा।23मैं उसके शत्रुओं को उसके सामने से नाश करूँगा,और उसके बैरियों पर विपत्ति डालूँगा।24परन्तु मेरी सच्चाई और करुणा उस पर बनी रहेंगी,और मेरे नाम के द्वारा उसका सींग ऊँचा हो जाएगा।25मैं समुद्र को उसके हाथ के नीचेऔर महानदों को उसके दाहिने हाथ के नीचे कर दूँगा।26वह मुझे पुकारकर कहेगा, ‘तू मेरा पिता है,मेरा परमेश्‍वर और मेरे उद्धार की चट्टान है।’ (1 पत. 1:17, प्रका. 21:7)27फिर मैं उसको अपना पहलौठा,और पृथ्वी के राजाओं पर प्रधान ठहराऊँगा। (प्रका. 1:5, प्रका. 17:18)28मैं अपनी करुणा उस पर सदा बनाए रहूँगा\*,और मेरी वाचा उसके लिये अटल रहेगी।29मैं उसके वंश को सदा बनाए रखूँगा,और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सर्वदा बनी रहेगी।30यदि उसके वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ेंऔर मेरे नियमों के अनुसार न चलें,31यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें,और मेरी आज्ञाओं को न मानें,32तो मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटें से,और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूँगा।33परन्तु मैं अपनी करुणा उस पर से न हटाऊँगा,और न सच्चाई त्याग कर झूठा ठहरूँगा।34मैं अपनी वाचा न तोड़ूँगा,और जो मेरे मुँह से निकल चुका है, उसे न बदलूँगा।35एक बार मैं अपनी पवित्रता की शपथ खा चुका हूँ;मैं दाऊद को कभी धोखा न दूँगा\*।36उसका वंश सर्वदा रहेगा,और उसकी राजगद्दी सूर्य के समान मेरे सम्मुख ठहरी रहेगी। (लूका 1:32-33)37वह चन्द्रमा के समान,और आकाशमण्डल के विश्वासयोग्य साक्षी के समान सदा बना रहेगा।” (सेला)38तो भी तूने अपने अभिषिक्त को छोड़ा और उसे तज दिया,और उस पर अति क्रोध किया है।39तूने अपने दास के साथ की वाचा को त्याग दिया,और उसके मुकुट को भूमि पर गिराकर अशुद्ध किया है।40तूने उसके सब बाड़ों को तोड़ डाला है,और उसके गढ़ों को उजाड़ दिया है।41सब बटोही उसको लूट लेते हैं,और उसके पड़ोसियों से उसकी नामधराई होती है।42तूने उसके विरोधियों को प्रबल किया;और उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है।43फिर तू उसकी तलवार की धार को मोड़ देता है,और युद्ध में उसके पाँव जमने नहीं देता।44तूने उसका तेज हर लिया है,और उसके सिंहासन को भूमि पर पटक दिया है।45तूने उसकी जवानी को घटाया,और उसको लज्जा से ढाँप दिया है। (सेला)46हे यहोवा, तू कब तक लगातार मुँह फेरे रहेगा,तेरी जलजलाहट कब तक आग के समान भड़की रहेगी।47मेरा स्मरण कर, कि मैं कैसा अनित्य हूँ,तूने सब मनुष्यों को क्यों व्यर्थ सिरजा है?48कौन पुरुष सदा अमर रहेगा?क्या कोई अपने प्राण को अधोलोक से बचा सकता है? (सेला)49हे प्रभु, तेरी प्राचीनकाल की करुणा कहाँ रही\*,जिसके विषय में तूने अपनी सच्चाई की शपथ दाऊद से खाई थी?50हे प्रभु, अपने दासों की नामधराई की सुधि ले;मैं तो सब सामर्थी जातियों का बोझ लिए रहता हूँ।51तेरे उन शत्रुओं ने तो हे यहोवा,तेरे अभिषिक्त के पीछे पड़कर उसकी नामधराई की है।52यहोवा सर्वदा धन्य रहेगा!आमीन फिर आमीन।

Chapter 90  
चौथा भागभजन 90—106अनन्त परमेश्‍वर और नश्वर मनुष्यपरमेश्‍वर के जन मूसा की प्रार्थना  
  
1हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है।2इससे पहले कि पहाड़ उत्‍पन्‍न हुए,या तूने पृथ्वी और जगत की रचना की,वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्‍वर है।3तू मनुष्य को लौटाकर मिट्टी में ले जाता है,और कहता है, “हे आदमियों, लौट आओ!”4क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं,जैसा कल का दिन जो बीत गया,या रात का एक पहर। (2 पत. 3:8)5तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है;वे स्वप्न से ठहरते हैं,वे भोर को बढ़नेवाली घास के समान होते हैं।6वह भोर को फूलती और बढ़ती है,और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है।7क्योंकि हम तेरे क्रोध से भस्म हुए हैं;और तेरी जलजलाहट से घबरा गए हैं।8तूने हमारे अधर्म के कामों को अपने सम्मुख,और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रखा है\*।9क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं,हम अपने वर्ष शब्द के समान बिताते हैं।10हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं,और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएँ,तो भी उनका घमण्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है;क्योंकि वह जल्दी कट जाती है, और हम जाते रहते हैं।11तेरे क्रोध की शक्ति कोऔर तेरे भय के योग्य तेरे रोष को कौन समझता है?12हमको अपने दिन गिनने की समझ दे\* कि हम बुद्धिमान हो जाएँ।13हे यहोवा, लौट आ! कब तक?और अपने दासों पर तरस खा!14भोर को हमें अपनी करुणा से तृप्त कर,कि हम जीवन भर जयजयकार और आनन्द करते रहें।15जितने दिन तू हमें दुःख देता आया,और जितने वर्ष हम क्लेश भोगते आए हैंउतने ही वर्ष हमको आनन्द दे।16तेरा काम तेरे दासों को,और तेरा प्रताप उनकी सन्तान पर प्रगट हो।17हमारे परमेश्‍वर यहोवा की मनोहरता हम पर प्रगट हो,तू हमारे हाथों का काम हमारे लिये दृढ़ कर,हमारे हाथों के काम को दृढ़ कर।

Chapter 91  
परमेश्‍वर हमारा रक्षक  
  
1जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे,वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।2मैं यहोवा के विषय कहूँगा, “वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है;वह मेरा परमेश्‍वर है, जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ”3वह तो तुझे बहेलिये के जाल से,और महामारी से बचाएगा\*;4वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा,और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा;उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।5तू न रात के भय से डरेगा,और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,6न उस मरी से जो अंधेरे में फैलती है,और न उस महारोग से जो दिन-दुपहरी में उजाड़ता है।7तेरे निकट हजार,और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे;परन्तु वह तेरे पास न आएगा।8परन्तु तू अपनी आँखों की दृष्टि करेगा\*और दुष्टों के अन्त को देखेगा।9हे यहोवा, तू मेरा शरणस्थान ठहरा है।तूने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है,10इसलिए कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी,न कोई दुःख तेरे डेरे के निकट आएगा।।11क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा,कि जहाँ कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।12वे तुझको हाथों हाथ उठा लेंगे,ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे। (मत्ती 4:6, लूका 4:10,11, इब्रा. 1:14)13तू सिंह और नाग को कुचलेगा,तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा।14उसने जो मुझसे स्नेह किया है, इसलिए मैं उसको छुड़ाऊँगा;मैं उसको ऊँचे स्थान पर रखूँगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।15जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूँगा;संकट में मैं उसके संग रहूँगा,मैं उसको बचाकर उसकी महिमा बढ़ाऊँगा।16मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूँगा,और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊँगा।

Chapter 92  
स्तुति का गीत भजनविश्राम के दिन के लिये गीत  
  
1यहोवा का धन्यवाद करना भला है,हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना;2प्रातःकाल को तेरी करुणा,और प्रति रात तेरी सच्चाई\* का प्रचार करना,3दस तारवाले बाजे और सारंगी पर,और वीणा पर गम्भीर स्वर से गाना भला है।4क्योंकि, हे यहोवा, तूने मुझ को अपने कामों से आनन्दित किया है;और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयजयकार करूँगा।5हे यहोवा, तेरे काम क्या ही बड़े है!तेरी कल्पनाएँ बहुत गम्भीर है; (प्रका. 15:3, रोमी 11:33,34)6पशु समान मनुष्य इसको नहीं समझता,और मूर्ख इसका विचार नहीं करता:7कि दुष्ट जो घास के समान फूलते-फलते हैं,और सब अनर्थकारी जो प्रफुल्लित होते हैं,यह इसलिए होता है, कि वे सर्वदा के लिये नाश हो जाएँ,8परन्तु हे यहोवा, तू सदा विराजमान रहेगा।9क्योंकि हे यहोवा, तेरे शत्रु, हाँ तेरे शत्रु नाश होंगे;सब अनर्थकारी तितर-बितर होंगे।10परन्तु मेरा सींग तूने जंगली सांड के समान ऊँचा किया है;तूने ताजे तेल से मेरा अभिषेक किया है।11मैं अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके,और उन कुकर्मियों का हाल मेरे विरुद्ध उठे थे, सुनकर सन्तुष्ट हुआ हूँ।12धर्मी लोग खजूर के समान फूले फलेंगे\*,और लबानोन के देवदार के समान बढ़ते रहेंगे।13वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर,हमारे परमेश्‍वर के आँगनों में फूले फलेंगे।14वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे,और रस भरे और लहलहाते रहेंगे,15जिससे यह प्रगट हो, कि यहोवा सच्चा है;वह मेरी चट्टान है, और उसमें कुटिलता कुछ भी नहीं।

Chapter 93  
परमेश्‍वर के राज्य की महिमा  
  
1यहोवा राजा है; उसने माहात्म्य का पहरावा पहना है;यहोवा पहरावा पहने हुए, और सामर्थ्य का फेटा बाँधे है।इस कारण जगत स्थिर है, वह नहीं टलने का।2हे यहोवा, तेरी राजगद्दी अनादिकाल से स्थिर है,तू सर्वदा से है।3हे यहोवा, महानदों का कोलाहल हो रहा है\*,महानदों का बड़ा शब्द हो रहा है,महानद गरजते हैं।4महासागर के शब्द से,और समुद्र की महातरंगों से,विराजमान यहोवा अधिक महान है।5तेरी चितौनियाँ अति विश्वासयोग्य हैं;हे यहोवा, तेरे भवन को युग-युग पवित्रता ही शोभा देती है।

Chapter 94  
परमेश्‍वर धर्मी का शरणस्थान  
  
1हे यहोवा, हे पलटा लेनेवाले परमेश्‍वर,हे पलटा लेनेवाले परमेश्‍वर, अपना तेज दिखा! (व्य. 32:35)2हे पृथ्वी के न्यायी, उठ;और घमण्डियों को बदला दे!3हे यहोवा, दुष्ट लोग कब तक,दुष्ट लोग कब तक डींग मारते रहेंगे?4वे बकते और ढिठाई की बातें बोलते हैं,सब अनर्थकारी बड़ाई मारते हैं।5हे यहोवा, वे तेरी प्रजा को पीस डालते हैं,वे तेरे निज भाग को दुःख देते हैं।6वे विधवा और परदेशी का घात करते,और अनाथों को मार डालते हैं;7और कहते हैं, “यहोवा न देखेगा,याकूब का परमेश्‍वर विचार न करेगा।”8तुम जो प्रजा में पशु सरीखे हो, विचार करो;और हे मूर्खों तुम कब बुद्धिमान बनोगे\*?9जिसने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता?जिसने आँख रची, क्या वह आप नहीं देखता?10जो जाति-जाति को ताड़ना देता, और मनुष्य को ज्ञान सिखाता है,क्या वह न सुधारेगा?11यहोवा मनुष्य की कल्पनाओं को तो जानता है कि वे मिथ्या हैं। (1 कुरि. 3:20)12हे यहोवा, क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसको तू ताड़ना देता है,और अपनी व्यवस्था सिखाता है,13क्योंकि तू उसको विपत्ति के दिनों में उस समय तक चैन देता रहता है,जब तक दुष्टों के लिये गड्ढा नहीं खोदा जाता\*।14क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को न तजेगा,वह अपने निज भाग को न छोड़ेगा; (रोमि.11:1,2)15परन्तु न्याय फिर धर्म के अनुसार किया जाएगा,और सारे सीधे मनवाले उसके पीछे-पीछे हो लेंगे।16कुकर्मियों के विरुद्ध मेरी ओर कौन खड़ा होगा?मेरी ओर से अनर्थकारियों का कौन सामना करेगा?17यदि यहोवा मेरा सहायक न होता,तो क्षण भर में मुझे चुपचाप होकर रहना पड़ता।18जब मैंने कहा, “मेरा पाँव फिसलने लगा है\*,”तब हे यहोवा, तेरी करुणा ने मुझे थाम लिया।19जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताएँ होती हैं,तब हे यहोवा, तेरी दी हुई शान्ति से मुझ को सुख होता है। (2 कुरि. 1:5)20क्या तेरे और दुष्टों के सिंहासन के बीच संधि होगी,जो कानून की आड़ में उत्पात मचाते हैं?21वे धर्मी का प्राण लेने को दल बाँधते हैं,और निर्दोष को प्राणदण्ड देते हैं।22परन्तु यहोवा मेरा गढ़,और मेरा परमेश्‍वर मेरी शरण की चट्टान ठहरा है।23उसने उनका अनर्थ काम उन्हीं पर लौटाया है,और वह उन्हें उन्हीं की बुराई के द्वारा सत्यानाश करेगा।हमारा परमेश्‍वर यहोवा उनको सत्यानाश करेगा।

Chapter 95  
स्तुतिगान  
  
1आओ हम यहोवा के लिये ऊँचे स्वर से गाएँ,अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें!2हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएँ,और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें।3क्योंकि यहोवा महान परमेश्‍वर है,और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है।4पृथ्वी के गहरे स्थान उसी के हाथ में हैं;और पहाड़ों की चोटियाँ भी उसी की हैं।5समुद्र उसका है, और उसी ने उसको बनाया,और स्थल भी उसी के हाथ का रचा है।6आओ हम झुककर दण्डवत् करें,और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें!7क्योंकि वही हमारा परमेश्‍वर है,और हम उसकी चराई की प्रजा,और उसके हाथ की भेड़ें हैं।भला होता, कि आज तुम उसकी बात सुनते! (निर्ग. 17:7)8अपना-अपना हृदय ऐसा कठोर मत करो, जैसा मरीबा में,व मस्सा के दिन जंगल में हुआ था,9जब तुम्हारे पुरखाओं ने मुझे परखा\*,उन्होंने मुझ को जाँचा और मेरे काम को भी देखा।10चालीस वर्ष तक मैं उस पीढ़ी के लोगों से रूठा रहा,और मैंने कहा, “ये तो भरमनेवाले मन के हैं,और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहचाना।”11इस कारण मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई किये मेरे विश्रामस्थान में कभी प्रवेश न करने पाएँगे\*। (इब्रा 3:7-19)

Chapter 96  
परमेश्‍वर सर्वो‍च्च राजा  
  
1यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ,हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा के लिये गाओ! (प्रका. 5:9, भजन 33:3)2यहोवा के लिये गाओ, उसके नाम को धन्य कहो;दिन प्रतिदिन उसके किए हुए उद्धार का शुभ समाचार सुनाते रहो।3अन्यजातियों में उसकी महिमा का,और देश-देश के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो\*।4क्योंकि यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है;वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है।5क्योंकि देश-देश के सब देवता तो मूरतें ही हैं;परन्तु यहोवा ही ने स्वर्ग को बनाया है।6उसके चारों ओर वैभव और ऐश्वर्य है;उसके पवित्रस्‍थान में सामर्थ्य और शोभा है।7हे देश-देश के कुल के लोगों, यहोवा का गुणानुवाद करो,यहोवा की महिमा और सामर्थ्य को मानो!8यहोवा के नाम की ऐसी महिमा करो जो उसके योग्य है;भेंट लेकर उसके आँगनों में आओ!9पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो;हे सारी पृथ्वी के लोगों उसके सामने काँपते रहो\*!10जाति-जाति में कहो, “यहोवा राजा हुआ है!और जगत ऐसा स्थिर है, कि वह टलने का नहीं;वह देश-देश के लोगों का न्याय खराई से करेगा।”11आकाश आनन्द करे, और पृथ्वी मगन हो;समुद्र और उसमें की सब वस्तुएँ गरज उठें;12मैदान और जो कुछ उसमें है, वह प्रफुल्लित हो;उसी समय वन के सारे वृक्ष जयजयकार करेंगे।13यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह आनेवाला है।वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है, वह धर्म से जगत का,और सच्चाई से देश-देश के लोगों का न्याय करेगा। (प्रेरि. 17:31)

Chapter 97  
परमेश्‍वर सर्वो‍च्च शासक  
  
1यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी मगन हो;और द्वीप जो बहुत से हैं, वह भी आनन्द करें! (प्रका. 19:7)2बादल और अंधकार उसके चारों ओर हैं;उसके सिंहासन का मूल धर्म और न्याय है।3उसके आगे-आगे आग चलती हुई\*उसके विरोधियों को चारों ओर भस्म करती है। (प्रका. 11:5)4उसकी बिजलियों से जगत प्रकाशित हुआ,पृथ्वी देखकर थरथरा गई है!5पहाड़ यहोवा के सामने,मोम के समान पिघल गए,अर्थात् सारी पृथ्वी के परमेश्‍वर के सामने।6आकाश ने उसके धर्म की साक्षी दी;और देश-देश के सब लोगों ने उसकी महिमा देखी है।7जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना करतेऔर मूरतों पर फूलते हैं, वे लज्जित हों;हे सब देवताओं तुम उसी को दण्डवत् करो।8सिय्योन सुनकर आनन्दित हुई,और यहूदा की बेटियाँ मगन हुई;हे यहोवा, यह तेरे नियमों के कारण हुआ।9क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है;तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है। (यूह. 3:31)10हे यहोवा के प्रेमियों, बुराई से घृणा करो;वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता\*,और उन्हें दुष्टों के हाथ से बचाता है।11धर्मी के लिये ज्योति,और सीधे मनवालों के लिये आनन्द बोया गया है।12हे धर्मियों, यहोवा के कारण आनन्दित हो;और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो!

Chapter 98  
उद्धार और न्याय के लिये स्तुतिगानभजन  
  
1यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ,क्योंकि उसने आश्चर्यकर्मों किए है!उसके दाहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उसके लिये उद्धार किया है!2यहोवा ने अपना किया हुआ उद्धार प्रकाशित किया,उसने अन्यजातियों की दृष्टि में अपना धर्म प्रगट किया है।3उसने इस्राएल के घराने पर की अपनी करुणाऔर सच्चाई की सुधि ली,और पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों ने हमारे परमेश्‍वर का किया हुआ उद्धार देखा है। (लूका 1:54, प्रेरि. 28:28)4हे सारी पृथ्वी\* के लोगों, यहोवा का जयजयकार करो;उत्साहपूर्वक जयजयकार करो, और भजन गाओ! (यशा. 44:23)5वीणा बजाकर यहोवा का भजन गाओ,वीणा बजाकर भजन का स्वर सुनाओं।6तुरहियां और नरसिंगे फूँक फूँककरयहोवा राजा का जयजयकार करो।7समुद्र और उसमें की सब वस्तुएँ गरज उठें;जगत और उसके निवासी महाशब्द करें!8नदियाँ तालियाँ बजाएँ;पहाड़ मिलकर जयजयकार करें।9यह यहोवा के सामने हो, क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है।वह धर्म से जगत का,और सच्चाई से देश-देश के लोगों का न्याय करेगा। (प्रेरि. 17:31)

Chapter 99  
पवित्रता के लिये स्तुतिगान  
  
1यहोवा राजा हुआ है; देश-देश के लोग काँप उठें!वह करूबों पर विराजमान है; पृथ्वी डोल उठे! (प्रका. 11:18, प्रका. 19:6)2यहोवा सिय्योन में महान है;और वह देश-देश के लोगों के ऊपर प्रधान है।3वे तेरे महान और भययोग्य नाम का धन्यवाद करें!वह तो पवित्र है।4राजा की सामर्थ्य न्याय से मेल रखती है,तू ही ने सच्चाई को स्थापित किया;न्याय और धर्म को याकूब में तू ही ने चालू किया है।5हमारे परमेश्‍वर यहोवा को सराहो;और उसके चरणों की चौकी के सामने दण्डवत् करो!वह पवित्र है!6उसके याजकों में मूसा और हारून,और उसके प्रार्थना करनेवालों में से शमूएल यहोवा को पुकारते थे\*, और वह उनकी सुन लेता था।7वह बादल के खम्भे में होकर उनसे बातें करता था;और वे उसकी चितौनियों और उसकी दी हुई विधियों पर चलते थे।8हे हमारे परमेश्‍वर यहोवा, तू उनकी सुन लेता था;तू उनके कामों का पलटा तो लेता थातो भी उनके लिये क्षमा करनेवाला परमेश्‍वर था।9हमारे परमेश्‍वर यहोवा को सराहो,और उसके पवित्र पर्वत पर दण्डवत् करो;क्योंकि हमारा परमेश्‍वर यहोवा पवित्र है!

Chapter 100  
परमेश्‍वर की स्तुति का गीतधन्यवाद का भजन  
  
1हे सारी पृथ्वी के लोगों, यहोवा का जयजयकार करो!2आनन्द से यहोवा की आराधना करो!जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!3निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्‍वर हैउसी ने हमको बनाया, और हम उसी के हैं;हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं\*।4उसके फाटकों में धन्यवाद,और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो,उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो!5क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये,और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

Chapter 101  
विश्वासयोग्य जीवन बिताने का संकल्पदाऊद का भजन  
  
1मैं करुणा और न्याय के विषय गाऊँगा;हे यहोवा, मैं तेरा ही भजन गाऊँगा।2मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूँगा।तू मेरे पास कब आएगा?मैं अपने घर में मन की खराई के साथ अपनी चाल चलूँगा;3मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊँगा\*।मैं कुमार्ग पर चलनेवालों के काम से घिन रखता हूँ;ऐसे काम में मैं न लगूँगा।4टेढ़ा स्वभाव मुझसे दूर रहेगा;मैं बुराई को जानूँगा भी नहीं।5जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली खाए,उसका मैं सत्यानाश करूँगा\*;जिसकी आँखें चढ़ी हों और जिसका मन घमण्डी है, उसकी मैं न सहूँगा।6मेरी आँखें देश के विश्वासयोग्य लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें;जो खरे मार्ग पर चलता है वही मेरा सेवक होगा।7जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा;जो झूठ बोलता है वह मेरे सामने बना न रहेगा।8प्रति भोर, मैं देश के सब दुष्टों का सत्यानाश किया करूँगा,ताकि यहोवा के नगर के सब अनर्थकारियों को नाश करूँ।

Chapter 102  
संकट में पड़े युवक की प्रार्थनादीन जन की उस समय की प्रार्थना जब वह दुःख का मारा अपने शोक की बातें यहोवा के सामने खोलकर कहता हो  
  
1हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन;मेरी दुहाई तुझ तक पहुँचे!2मेरे संकट के दिन अपना मुख मुझसे न छिपा ले;अपना कान मेरी ओर लगा;जिस समय मैं पुकारूँ, उसी समय फुर्ती से मेरी सुन ले!3क्योंकि मेरे दिन धुएँ के समान उड़े जाते हैं,और मेरी हड्डियाँ आग के समान जल गई हैं\*।4मेरा मन झुलसी हुई घास के समान सूख गया है;और मैं अपनी रोटी खाना भूल जाता हूँ।5कराहते-कराहते मेरी चमड़ी हड्डियों में सट गई है।6मैं जंगल के धनेश के समान हो गया हूँ,मैं उजड़े स्थानों के उल्लू के समान बन गया हूँ।7मैं पड़ा-पड़ा जागता रहता हूँ और गौरे के समान हो गया हूँजो छत के ऊपर अकेला बैठता है।8मेरे शत्रु लगातार मेरी नामधराई करते हैं,जो मेरे विरुद्ध ठट्ठा करते है,वह मेरे नाम से श्राप देते हैं।9क्योंकि मैंने रोटी के समान राख खाई और आँसू मिलाकर पानी पीता हूँ।10यह तेरे क्रोध और कोप के कारण हुआ है,क्योंकि तूने मुझे उठाया, और फिर फेंक दिया है।11मेरी आयु ढलती हुई छाया के समान है;और मैं आप घास के समान सूख चला हूँ।12परन्तु हे यहोवा, तू सदैव विराजमान रहेगा;और जिस नाम से तेरा स्मरण होता है,वह पीढ़ी से पीढ़ी तक बना रहेगा।13तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा;क्योंकि उस पर दया करने का ठहराया हुआ समय आ पहुँचा है\*।14क्योंकि तेरे दास उसके पत्थरों को चाहते हैं,और उसके खंडहरों की धूल पर तरस खाते हैं।15इसलिए जाति-जाति यहोवा के नाम का भय मानेंगी,और पृथ्वी के सब राजा तेरे प्रताप से डरेंगे।16क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को फिर बसाया है,और वह अपनी महिमा के साथ दिखाई देता है;17वह लाचार की प्रार्थना की ओर मुँह करता है,और उनकी प्रार्थना को तुच्छ नहीं जानता।18यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी,ताकि एक जाति जो उत्‍पन्‍न होगी, वह यहोवा की स्तुति करे।19क्योंकि यहोवा ने अपने ऊँचे और पवित्रस्‍थान से दृष्टि की;स्वर्ग से पृथ्वी की ओर देखा है,20ताकि बन्दियों का कराहना सुने,और घात होनेवालों के बन्धन खोले;21तब लोग सिय्योन में यहोवा के नाम का वर्णन करेंगे,और यरूशलेम में उसकी स्तुति की जाएगी;22यह उस समय होगा जब देश-देश,और राज्य-राज्य के लोग यहोवा की उपासना करने को इकट्ठे होंगे।23उसने मुझे जीवन यात्रा में दुःख देकर,मेरे बल और आयु को घटाया\*।24मैंने कहा, “हे मेरे परमेश्‍वर, मुझे आधी आयु में न उठा ले,तेरे वर्ष पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे!”25आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली,और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है।26वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा;और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा।तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह मिट जाएगा;27परन्तु तू वहीं है,और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।28तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी;और उनका वंश तेरे सामने स्थिर रहेगा।

Chapter 103  
परमेश्‍वर की दया के लिये स्तुतिगानदाऊद का भजन  
  
120 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह;और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!2हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह,और उसके किसी उपकार को न भूलना।3वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता,और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,4वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है\*,और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बाँधता है,5वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है,जिससे तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है।6यहोवा सब पिसे हुओं के लियेधर्म और न्याय के काम करता है।7उसने मूसा को अपनी गति,और इस्राएलियों पर अपने काम प्रगट किए। (भज. 147:19)8यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करुणामय है (भज. 86:15, भज. 145:8)9वह सर्वदा वाद-विवाद करता न रहेगा\*,न उसका क्रोध सदा के लिये भड़का रहेगा।10उसने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया,और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमको बदला दिया है।11जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है,वैसे ही उसकी करुणा उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है।12उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है,उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है।13जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है,वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।14क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है;और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है।15मनुष्य की आयु घास के समान होती है,वह मैदान के फूल के समान फूलता है,16जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता,और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है।17परन्तु यहोवा की करुणा उसके डरवैयों पर युग-युग,और उसका धर्म उनके नाती-पोतों पर भी प्रगट होता रहता है, (लूका 1:50)18अर्थात् उन पर जो उसकी वाचा का पालन करतेऔर उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं।19यहोवा ने तो अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थिर किया है,और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर है।20हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो,और उसके वचन को मानते\* और पूरा करते हो,उसको धन्य कहो!21हे यहोवा की सारी सेनाओं, हे उसके सेवकों,तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो!22हे यहोवा की सारी सृष्टि,उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो।हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!

Chapter 104  
सृष्टिकर्ता की स्तुति  
  
1हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा,तू अत्यन्त महान है!तू वैभव और ऐश्वर्य का वस्त्र पहने हुए है,2तू उजियाले को चादर के समान ओढ़े रहता है,और आकाश को तम्बू के समान ताने रहता है,3तू अपनी अटारियों की कड़ियाँ जल में धरता है,और मेघों को अपना रथ बनाता है,और पवन के पंखों पर चलता है,4तू पवनों को अपने दूत,और धधकती आग को अपने सेवक बनाता है। (इब्रा. 1:7)5तूने पृथ्वी को उसकी नींव पर स्थिर किया है,ताकि वह कभी न डगमगाए।6तूने उसको गहरे सागर से ढाँप दिया है जैसे वस्त्र से;जल पहाड़ों के ऊपर ठहर गया।7तेरी घुड़की से वह भाग गया;तेरे गरजने का शब्द सुनते ही, वह उतावली करके बह गया।8वह पहाड़ों पर चढ़ गया, और तराइयों के मार्ग से उस स्थान में उतर गयाजिसे तूने उसके लिये तैयार किया था।9तूने एक सीमा ठहराई जिसको वह नहीं लाँघ सकता है,और न लौटकर स्थल को ढाँप सकता है।10तू तराइयों में सोतों को बहाता है\*;वे पहाड़ों के बीच से बहते हैं,11उनसे मैदान के सब जीव-जन्तु जल पीते हैं;जंगली गदहे भी अपनी प्यास बुझा लेते हैं।12उनके पास आकाश के पक्षी बसेरा करते,और डालियों के बीच में से बोलते हैं। (मत्ती 13:32)13तू अपनी अटारियों में से पहाड़ों को सींचता है,तेरे कामों के फल से पृथ्वी तृप्त रहती है।14तू पशुओं के लिये घास,और मनुष्यों के काम के लिये अन्न आदि उपजाता है,और इस रीति भूमि से वह भोजन-वस्तुएँ उत्‍पन्‍न करता है15और दाखमधु जिससे मनुष्य का मन आनन्दित होता है,और तेल जिससे उसका मुख चमकता है,और अन्न जिससे वह सम्भल जाता है।16यहोवा के वृक्ष तृप्त रहते हैं,अर्थात् लबानोन के देवदार जो उसी के लगाए हुए हैं।17उनमें चिड़ियाँ अपने घोंसले बनाती हैं;सारस का बसेरा सनोवर के वृक्षों में होता है।18ऊँचे पहाड़ जंगली बकरों के लिये हैं;और चट्टानें शापानों के शरणस्थान हैं।19उसने नियत समयों के लिये चन्द्रमा को बनाया है\*;सूर्य अपने अस्त होने का समय जानता है।20तू अंधकार करता है, तब रात हो जाती है;जिसमें वन के सब जीव-जन्तु घूमते-फिरते हैं।21जवान सिंह अहेर के लिये गर्जते हैं,और परमेश्‍वर से अपना आहार माँगते हैं।22सूर्य उदय होते ही वे चले जाते हैंऔर अपनी माँदों में विश्राम करते हैं।23तब मनुष्य अपने काम के लियेऔर संध्या तक परिश्रम करने के लिये निकलता है।24हे यहोवा, तेरे काम अनगिनत हैं!इन सब वस्तुओं को तूने बुद्धि से बनाया है;पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से परिपूर्ण है।25इसी प्रकार समुद्र बड़ा और बहुत ही चौड़ा है,और उसमें अनगिनत जलचर जीव-जन्तु,क्या छोटे, क्या बड़े भरे पड़े हैं।26उसमें जहाज भी आते जाते हैं,और लिव्यातान भी जिसे तूने वहाँ खेलने के लिये बनाया है।27इन सब को तेरा ही आसरा है,कि तू उनका आहार समय पर दिया करे।28तू उन्हें देता है, वे चुन लेते हैं;तू अपनी मुट्ठी खोलता है और वे उत्तम पदार्थों से तृप्त होते हैं।29तू मुख फेर लेता है, और वे घबरा जाते हैं;तू उनकी साँस ले लेता है, और उनके प्राण छूट जाते हैंऔर मिट्टी में फिर मिल जाते हैं।30फिर तू अपनी ओर से साँस भेजता है, और वे सिरजे जाते हैं;और तू धरती को नया कर देता है\*।31यहोवा की महिमा सदा काल बनी रहे,यहोवा अपने कामों से आनन्दित होवे!32उसकी दृष्टि ही से पृथ्वी काँप उठती है,और उसके छूते ही पहाड़ों से धुआँ निकलता है।33मैं जीवन भर यहोवा का गीत गाता रहूँगा;जब तक मैं बना रहूँगा तब तक अपने परमेश्‍वर का भजन गाता रहूँगा।34मेरे सोच-विचार उसको प्रिय लगे,क्योंकि मैं तो यहोवा के कारण आनन्दित रहूँगा।35पापी लोग पृथ्वी पर से मिट जाएँ,और दुष्ट लोग आगे को न रहें!हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह!यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 105  
परमेश्‍वर और उसके लोग  
  
1यहोवा का धन्यवाद करो, उससे प्रार्थना करो,देश-देश के लोगों में उसके कामों का प्रचार करो!2उसके लिये गीत गाओ, उसके लिये भजन गाओ,उसके सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो!3उसके पवित्र नाम की बड़ाई करो;यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो!4यहोवा और उसकी सामर्थ्य को खोजो,उसके दर्शन के लगातार खोजी बने रहो!5उसके किए हुए आश्चर्यकर्मों को स्मरण करो,उसके चमत्कार और निर्णय स्मरण करो!6हे उसके दास अब्राहम के वंश,हे याकूब की सन्तान, तुम तो उसके चुने हुए हो!7वही हमारा परमेश्‍वर यहोवा है;पृथ्वी भर में उसके निर्णय होते हैं।8वह अपनी वाचा को सदा स्मरण रखता आया है,यह वही वचन है जो उसने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया है;9वही वाचा जो उसने अब्राहम के साथ बाँधी,और उसके विषय में उसने इसहाक से शपथ खाई, (लूका 1:72,73)10और उसी को उसने याकूब के लिये विधि करके,और इस्राएल के लिये यह कहकर सदा की वाचा करके दृढ़ किया,11“मैं कनान देश को तुझी को दूँगा, वह बाँट में तुम्हारा निज भाग होगा।”12उस समय तो वे गिनती में थोड़े थे, वरन् बहुत ही थोड़े,और उस देश में परदेशी थे।13वे एक जाति से दूसरी जाति में,और एक राज्य से दूसरे राज्य में फिरते रहे;14परन्तु उसने किसी मनुष्य को उन पर अत्याचार करने न दिया;और वह राजाओं को उनके निमित्त यह धमकी देता था,15“मेरे अभिषिक्तों को मत छुओं\*,और न मेरे नबियों की हानि करो!”16फिर उसने उस देश में अकाल भेजा,और अन्न के सब आधार को दूर कर दिया।17उसने यूसुफ नामक एक पुरुष को उनसे पहले भेजा था,जो दास होने के लिये बेचा गया था।18लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियाँ डालकर उसे दुःख दिया;वह लोहे की साँकलों से जकड़ा गया;19जब तक कि उसकी बात पूरी न हुईतब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।20तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया,और देश-देश के लोगों के स्वामी ने उसके बन्धन खुलवाए;21उसने उसको अपने भवन का प्रधानऔर अपनी पूरी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराया, (प्रेरि. 7:10)22कि वह उसके हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार नियंत्रित करेऔर पुरनियों को ज्ञान सिखाए।23फिर इस्राएल मिस्र में आया;और याकूब हाम के देश में रहा।24तब उसने अपनी प्रजा को गिनती में बहुत बढ़ाया,और उसके शत्रुओं से अधिक बलवन्त किया।25उसने मिस्रियों के मन को ऐसा फेर दिया,कि वे उसकी प्रजा से बैर रखने,और उसके दासों से छल करने लगे।26उसने अपने दास मूसा को,और अपने चुने हुए हारून को भेजा।27उन्होंने मिस्रियों के बीच उसकी ओर से भाँति-भाँति के चिन्ह,और हाम के देश में चमत्कार दिखाए।28उसने अंधकार कर दिया, और अंधियारा हो गया;और उन्होंने उसकी बातों को न माना।29उसने मिस्रियों के जल को लहू कर डाला,और मछलियों को मार डाला।30मेंढ़क उनकी भूमि में वरन् उनके राजा की कोठरियों में भी भर गए।31उसने आज्ञा दी, तब डांस आ गए,और उनके सारे देश में कुटकियाँ आ गईं।32उसने उनके लिये जलवृष्टि के बदले ओले,और उनके देश में धधकती आग बरसाई।33और उसने उनकी दाखलताओं और अंजीर के वृक्षों कोवरन् उनके देश के सब पेड़ों को तोड़ डाला।34उसने आज्ञा दी तब अनगिनत टिड्डियाँ, और कीड़े आए,35और उन्होंने उनके देश के सब अन्न आदि को खा डाला;और उनकी भूमि के सब फलों को चट कर गए।36उसने उनके देश के सब पहलौठों को,उनके पौरूष के सब पहले फल को नाश किया।37तब वह इस्राएल को सोना चाँदी दिलाकर निकाल लाया,और उनमें से कोई निर्बल न था।38उनके जाने से मिस्री आनन्दित हुए,क्योंकि उनका डर उनमें समा गया था।39उसने छाया के लिये बादल फैलाया,और रात को प्रकाश देने के लिये आग प्रगट की।40उन्होंने माँगा तब उसने बटेरें पहुँचाई,और उनको स्वर्गीय भोजन से तृप्त किया। (यूह. 6:31)41उसने चट्टान फाड़ी तब पानी बह निकला;और निर्जल भूमि पर नदी बहने लगी।42क्योंकि उसने अपने पवित्र वचनऔर अपने दास अब्राहम को स्मरण किया\*।43वह अपनी प्रजा को हर्षित करकेऔर अपने चुने हुओं से जयजयकार कराके निकाल लाया।44और उनको जाति-जाति के देश दिए;और वे अन्य लोगों के श्रम के फल के अधिकारी किए गए,45कि वे उसकी विधियों को मानें,और उसकी व्यवस्था को पूरी करें।यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 106  
परमेश्‍वर के लिये इस्राएल का अविश्वास  
  
1यहोवा की स्तुति करो! यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;और उसकी करुणा सदा की है!2यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता है,या उसका पूरा गुणानुवाद कौन सुना सकता है?3क्या ही धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते,और हर समय धर्म के काम करते हैं!4हे यहोवा, अपनी प्रजा पर की, प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर,मेरे उद्धार के लिये मेरी सुधि ले,5कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूँ,और तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित हो जाऊँ;और तेरे निज भाग के संग बड़ाई करने पाऊँ।6हमने तो अपने पुरखाओं के समान पाप किया है\*;हमने कुटिलता की, हमने दुष्टता की है!7मिस्र में हमारे पुरखाओं ने तेरे आश्चर्यकर्मों पर मन नहीं लगाया,न तेरी अपार करुणा को स्मरण रखा;उन्होंने समुद्र के किनारे, अर्थात् लाल समुद्र के किनारे पर बलवा किया।8तो भी उसने अपने नाम के निमित्त उनका उद्धार किया,जिससे वह अपने पराक्रम को प्रगट करे।9तब उसने लाल समुद्र को घुड़का और वह सूख गया;और वह उन्हें गहरे जल के बीच से मानो जंगल में से निकाल ले गया।10उसने उन्हें बैरी के हाथ से उबारा,और शत्रु के हाथ से छुड़ा लिया। (लूका 1:71)11और उनके शत्रु जल में डूब गए;उनमें से एक भी न बचा।12तब उन्होंने उसके वचनों का विश्वास किया;और उसकी स्तुति गाने लगे।13परन्तु वे झट उसके कामों को भूल गए;और उसकी युक्ति के लिये न ठहरे।14उन्होंने जंगल में अति लालसा कीऔर निर्जल स्थान में परमेश्‍वर की परीक्षा की। (1 कुरि 10:9)15तब उसने उन्हें मुँह माँगा वर तो दिया,परन्तु उनके प्राण को सूखा दिया।16उन्होंने छावनी में मूसा के,और यहोवा के पवित्र जन हारून के विषय में डाह की,17भूमि फट कर दातान को निगल गई,और अबीराम के झुण्ड को निगल लिया।18और उनके झुण्ड में आग भड़क उठी;और दुष्ट लोग लौ से भस्म हो गए।19उन्होंने होरेब में बछड़ा बनाया,और ढली हुई मूर्ति को दण्डवत् किया।20उन्होंने परमेश्‍वर की महिमा, को घास खानेवाले बैल की प्रतिमा से बदल डाला\*। (रोम. 1:23)21वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्‍वर को भूल गए,जिसने मिस्र में बड़े-बड़े काम किए थे।22उसने तो हाम के देश में आश्चर्यकर्मोंऔर लाल समुद्र के तट पर भयंकर काम किए थे।23इसलिए उसने कहा कि मैं इन्हें सत्यानाश कर डालतायदि मेरा चुना हुआ मूसा जोखिम के स्थान में उनके लिये खड़ा न होताताकि मेरी जलजलाहट को ठण्डा करे कहीं ऐसा न हो कि मैं उन्हें नाश कर डालूँ।24उन्होंने मनभावने देश को निकम्मा जाना,और उसके वचन पर विश्वास न किया।25वे अपने तम्बुओं में कुड़कुड़ाए,और यहोवा का कहा न माना।26तब उसने उनके विषय में शपथ खाई कि मैं इनको जंगल में नाश करूँगा,27और इनके वंश को अन्यजातियों के सम्मुख गिरा दूँगा,और देश-देश में तितर-बितर करूँगा। (भज. 44:11)28वे बालपोर देवता को पूजने लगे और मुर्दों को चढ़ाए हुए पशुओं का माँस खाने लगे।29यों उन्होंने अपने कामों से उसको क्रोध दिलाया,और मरी उनमें फूट पड़ी।30तब पीनहास ने उठकर न्यायदण्ड दिया,जिससे मरी थम गई।31और यह उसके लेखे पीढ़ी से पीढ़ी तक सर्वदा के लिये धर्म गिना गया।32उन्होंने मरीबा के सोते के पास भी यहोवा का क्रोध भड़काया,और उनके कारण मूसा की हानि हुई;33क्योंकि उन्होंने उसकी आत्मा से बलवा किया,तब मूसा बिन सोचे बोल उठा\*।34जिन लोगों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी,उनको उन्होंने सत्यानाश न किया,35वरन् उन्हीं जातियों से हिलमिल गएऔर उनके व्यवहारों को सीख लिया;36और उनकी मूर्तियों की पूजा करने लगे,और वे उनके लिये फंदा बन गई।37वरन् उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को पिशाचों के लिये बलिदान किया; (1 कुरि. 10:20)38और अपने निर्दोष बेटे-बेटियों का लहू बहायाजिन्हें उन्होंने कनान की मूर्तियों पर बलि किया,इसलिए देश खून से अपवित्र हो गया।39और वे आप अपने कामों के द्वारा अशुद्ध हो गए,और अपने कार्यों के द्वारा व्यभिचारी भी बन गए।40तब यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का,और उसको अपने निज भाग से घृणा आई;41तब उसने उनको अन्यजातियों के वश में कर दिया,और उनके बैरियों ने उन पर प्रभुता की।42उनके शत्रुओं ने उन पर अत्याचार किया,और वे उनके हाथों तले दब गए।43बारम्बार उसने उन्हें छुड़ाया,परन्तु वे उसके विरुद्ध बलवा करते गए,और अपने अधर्म के कारण दबते गए।44फिर भी जब-जब उनका चिल्लाना उसके कान में पड़ा,तब-तब उसने उनके संकट पर दृष्टि की!45और उनके हित अपनी वाचा को स्मरण करकेअपनी अपार करुणा के अनुसार तरस खाया,46और जो उन्हें बन्दी करके ले गए थे उन सबसे उन पर दया कराई।47हे हमारे परमेश्‍वर यहोवा, हमारा उद्धार कर,और हमें अन्यजातियों में से इकट्ठा कर ले,कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें,और तेरी स्तुति करते हुए तेरे विषय में बड़ाई करें।48इस्राएल का परमेश्‍वर यहोवाअनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य है!और सारी प्रजा कहे “आमीन!”यहोवा की स्तुति करो। (भज. 41:13)

Chapter 107  
पाँचवाँ भागभजन 107—150परमेश्‍वर के उद्धार के लिए धन्यवाद  
  
1यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;और उसकी करुणा सदा की है!2यहोवा के छुड़ाए हुए ऐसा ही कहें,जिन्हें उसने शत्रु के हाथ से दाम देकर छुड़ा लिया है,3और उन्हें देश-देश से,पूरब-पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से इकट्ठा किया है। (भज. 106:47)4वे जंगल में मरूभूमि के मार्ग पर भटकते फिरे,और कोई बसा हुआ नगर न पाया;5भूख और प्यास के मारे,वे विकल हो गए।6तब उन्होंने संकट में यहोवा की दुहाई दी,और उसने उनको सकेती से छुड़ाया;7और उनको ठीक मार्ग पर चलाया,ताकि वे बसने के लिये किसी नगर को जा पहुँचे।8लोग यहोवा की करुणा के कारण,और उन आश्चर्यकर्मों के कारण, जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें!9क्योंकि वह अभिलाषी जीव को सन्तुष्ट करता है,और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है। (लूका 1:53, यिर्म. 31:25)10जो अंधियारे और मृत्यु की छाया में बैठे,और दुःख में पड़े और बेड़ियों से जकड़े हुए थे,11इसलिए कि वे परमेश्‍वर के वचनों के विरुद्ध चले\*,और परमप्रधान की सम्मति को तुच्छ जाना।12तब उसने उनको कष्ट के द्वारा दबाया;वे ठोकर खाकर गिर पड़े, और उनको कोई सहायक न मिला।13तब उन्होंने संकट में यहोवा की दुहाई दी,और उसने सकेती से उनका उद्धार किया;14उसने उनको अंधियारे और मृत्यु की छाया में से निकाल लिया;और उनके बन्धनों को तोड़ डाला।15लोग यहोवा की करुणा के कारण,और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है,उसका धन्यवाद करें!16क्योंकि उसने पीतल के फाटकों को तोड़ा,और लोहे के बेंड़ों को टुकड़े-टुकड़े किया।17मूर्ख अपनी कुचाल,और अधर्म के कामों के कारण अति दुःखित होते हैं।18उनका जी सब भाँति के भोजन से मिचलाता है,और वे मृत्यु के फाटक तक पहुँचते हैं।19तब वे संकट में यहोवा की दुहाई देते हैं,और वह सकेती से उनका उद्धार करता है;20वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता\*और जिस गड्ढे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है। (भज. 147:15)21लोग यहोवा की करुणा के कारणऔर उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें!22और वे धन्यवाद-बलि चढ़ाएँ,और जयजयकार करते हुए, उसके कामों का वर्णन करें।23जो लोग जहाजों में समुद्र पर चलते हैं,और महासागर पर होकर व्यापार करते हैं;24वे यहोवा के कामों को,और उन आश्चर्यकर्मों को जो वह गहरे समुद्र में करता है, देखते हैं।25क्योंकि वह आज्ञा देता है, तब प्रचण्ड वायु उठकर तरंगों को उठाती है।26वे आकाश तक चढ़ जाते, फिर गहराई में उतर आते हैं;और क्लेश के मारे उनके जी में जी नहीं रहता;27वे चक्कर खाते, और मतवालों की भाँति लड़खड़ाते हैं,और उनकी सारी बुद्धि मारी जाती है।28तब वे संकट में यहोवा की दुहाई देते हैं,और वह उनको सकेती से निकालता है।29वह आँधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं।30तब वे उनके बैठने से आनन्दित होते हैं,और वह उनको मन चाहे बन्दरगाह में पहुँचा देता है।31लोग यहोवा की करुणा के कारण,और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है,उसका धन्यवाद करें।32और सभा में उसको सराहें,और पुरनियों के बैठक में उसकी स्तुति करें।33वह नदियों को जंगल बना डालता है,और जल के सोतों को सूखी भूमि कर देता है।34वह फलवन्त भूमि को बंजर बनाता है,यह वहाँ के रहनेवालों की दुष्टता के कारण होता है।35वह जंगल को जल का ताल,और निर्जल देश को जल के सोते कर देता है।36और वहाँ वह भूखों को बसाता है,कि वे बसने के लिये नगर तैयार करें;37और खेती करें, और दाख की बारियाँ लगाएँ,और भाँति-भाँति के फल उपजा लें।38और वह उनको ऐसी आशीष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं,और उनके पशुओं को भी वह घटने नहीं देता।39फिर विपत्ति और शोक के कारण,वे घटते और दब जाते हैं\*।40और वह हाकिमों को अपमान से लादकर मार्ग रहित जंगल में भटकाता है;41वह दरिद्रों को दुःख से छुड़ाकर ऊँचे पर रखता है,और उनको भेड़ों के झुण्ड के समान परिवार देता है।42सीधे लोग देखकर आनन्दित होते हैं;और सब कुटिल लोग अपने मुँह बन्द करते हैं।43जो कोई बुद्धिमान हो, वह इन बातों पर ध्यान करेगा;और यहोवा की करुणा के कामों पर ध्यान करेगा।

Chapter 108  
शत्रुओं पर विजय का आश्वासन गीतदाऊद का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर, मेरा हृदय स्थिर है;मैं गाऊँगा, मैं अपनी आत्मा से भी भजन गाऊँगा\*।2हे सारंगी और वीणा जागो!मैं आप पौ फटते जाग उठूँगा3हे यहोवा, मैं देश-देश के लोगों के मध्य में तेरा धन्यवाद करूँगा,और राज्य-राज्य के लोगों के मध्य में तेरा भजन गाऊँगा।4क्योंकि तेरी करुणा आकाश से भी ऊँची है,और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक है।5हे परमेश्‍वर, तू स्वर्ग के ऊपर हो!और तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर हो!6इसलिए कि तेरे प्रिय छुड़ाए जाएँ,तू अपने दाहिने हाथ से बचा ले और हमारी विनती सुन ले!7परमेश्‍वर ने अपनी पवित्रता में होकर कहा है,“मैं प्रफुल्लित होकर शेकेम को बाँट लूँगा,और सुक्कोत की तराई को नपवाऊँगा।8गिलाद मेरा है, मनश्शे भी मेरा है;और एप्रैम मेरे सिर का टोप है; यहूदा मेरा राजदण्ड है।9मोआब मेरे धोने का पात्र है,मैं एदोम पर अपना जूता फेंकूँगा, पलिश्त पर मैं जयजयकार करूँगा।”10मुझे गढ़वाले नगर में कौन पहुँचाएगा?एदोम तक मेरी अगुआई किसने की हैं?11हे परमेश्‍वर, क्या तूने हमको त्याग नहीं दिया\*?,और हे परमेश्‍वर, तू हमारी सेना के आगे-आगे नहीं चलता।12शत्रुओं के विरुद्ध हमारी सहायता कर,क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है!13परमेश्‍वर की सहायता से हम वीरता दिखाएँगे,हमारे शत्रुओं को वही रौंदेगा।

Chapter 109  
झूठे अभियोक्ता के विरुद्ध याचिकाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1हे परमेश्‍वर तू, जिसकी मैं स्तुति करता हूँ, चुप न रह!2क्योंकि दुष्ट और कपटी मनुष्यों ने मेरे विरुद्ध मुँह खोला है,वे मेरे विषय में झूठ बोलते हैं।3उन्होंने बैर के वचनों से मुझे चारों ओर घेर लिया है,और व्यर्थ मुझसे लड़ते हैं। (यूह. 15:25)4मेरे प्रेम के बदले में वे मेरी चुगली करते हैं,परन्तु मैं तो प्रार्थना में लौलीन रहता हूँ।5उन्होंने भलाई के बदले में मुझसे बुराई कीऔर मेरे प्रेम के बदले मुझसे बैर किया है।6तू उसको किसी दुष्ट के अधिकार में रख,और कोई विरोधी उसकी दाहिनी ओर खड़ा रहे।7जब उसका न्याय किया जाए, तब वह दोषी निकले,और उसकी प्रार्थना पाप गिनी जाए!8उसके दिन थोड़े हों,और उसके पद को दूसरा ले! (प्रेरि. 1:20)9उसके बच्चे अनाथ हो जाएँ,और उसकी स्त्री विधवा हो जाए!10और उसके बच्चे मारे-मारे फिरें, और भीख माँगा करे;उनको अपने उजड़े हुए घर से दूर जाकर टुकड़े माँगना पड़े!11महाजन फंदा लगाकर, उसका सर्वस्व ले ले\*;और परदेशी उसकी कमाई को लूट लें!12कोई न हो जो उस पर करुणा करता रहे,और उसके अनाथ बालकों पर कोई तरस न खाए!13उसका वंश नाश हो जाए,दूसरी पीढ़ी में उसका नाम मिट जाए!14उसके पितरों का अधर्म यहोवा को स्मरण रहे,और उसकी माता का पाप न मिटे!15वह निरन्तर यहोवा के सम्मुख रहे,वह उनका नाम पृथ्वी पर से मिटे!16क्योंकि वह दुष्ट, करुणा करना भूल गयावरन् दीन और दरिद्र को सताता थाऔर मार डालने की इच्छा से खेदित मनवालों के पीछे पड़ा रहता था।17वह श्राप देने से प्रीति रखता था, और श्राप उस पर आ पड़ा;वह आशीर्वाद देने से प्रसन्‍न न होता था,इसलिए आशीर्वाद उससे दूर रहा।18वह श्राप देना वस्त्र के समान पहनता था,और वह उसके पेट में जल के समानऔर उसकी हड्डियों में तेल के समान\* समा गया।19वह उसके लिये ओढ़ने का काम दे,और फेंटे के समान उसकी कटि में नित्य कसा रहे।20यहोवा की ओर से मेरे विरोधियों को,और मेरे विरुद्ध बुरा कहनेवालों को यही बदला मिले!21परन्तु हे यहोवा प्रभु, तू अपने नाम के निमित्त मुझसे बर्ताव कर;तेरी करुणा तो बड़ी है, इसलिए तू मुझे छुटकारा दे!22क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूँ,और मेरा हृदय घायल हुआ है\*।23मैं ढलती हुई छाया के समान जाता रहा हूँ;मैं टिड्डी के समान उड़ा दिया गया हूँ।24उपवास करते-करते मेरे घुटने निर्बल हो गए;और मुझ में चर्बी न रहने से मैं सूख गया हूँ।25मेरी तो उन लोगों से नामधराई होती है;जब वे मुझे देखते, तब सिर हिलाते हैं। (इब्रा. 10:12-13, लूका 20:42-43)26हे मेरे परमेश्‍वर यहोवा, मेरी सहायता कर!अपनी करुणा के अनुसार मेरा उद्धार कर!27जिससे वे जाने कि यह तेरा काम है,और हे यहोवा, तूने ही यह किया है!28वे मुझे कोसते तो रहें, परन्तु तू आशीष दे!वे तो उठते ही लज्जित हों, परन्तु तेरा दास आनन्दित हो! (1 कुरि. 4:12)29मेरे विरोधियों को अनादररूपी वस्त्र पहनाया जाए,और वे अपनी लज्जा को कम्बल के समान ओढ़ें!30मैं यहोवा का बहुत धन्यवाद करूँगा,और बहुत लोगों के बीच में उसकी स्तुति करूँगा।31क्योंकि वह दरिद्र की दाहिनी ओर खड़ा रहेगा,कि उसको प्राण-दण्ड देनेवालों से बचाए।

Chapter 110  
मसीह के शासनकाल की घोषणादाऊद का भजन  
  
1मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, “तू मेरे दाहिने ओर बैठ,जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूँ।” (इब्रा. 10:12-13, लूका 20:42-43)2तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा।तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर।3तेरी प्रजा के लोग तेरे पराक्रम के दिन स्वेच्छाबलि बनते हैं;तेरे जवान लोग पवित्रता से शोभायमान,और भोर के गर्भ से जन्मी हुई ओस के समान तेरे पास हैं।4यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा,“तू मलिकिसिदक की रीति पर सर्वदा का याजक है।” (इब्रा. 7:21, इब्रा. 7:17)5प्रभु तेरी दाहिनी ओर होकरअपने क्रोध के दिन राजाओं को चूर कर देगा। (भज. 143:5)6वह जाति-जाति में न्याय चुकाएगा, रणभूमि शवों से भर जाएगी;वह लम्बे चौड़े देशों के प्रधानों को चूर-चूर कर देगा7वह मार्ग में चलता हुआ नदी का जल पीएगाऔर तब वह विजय के बाद अपने सिर को ऊँचा करेगा।

Chapter 111  
परमेश्‍वर की सच्चाई और न्याय के लिये स्तुतिगान  
  
1यहोवा की स्तुति करो। मैं सीधे लोगों की गोष्ठी मेंऔर मण्डली में भी सम्पूर्ण मन से यहोवा का धन्यवाद करूँगा।2यहोवा के काम बड़े हैं,जितने उनसे प्रसन्‍न रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं। (भज. 143:5)3उसके काम वैभवशाली और ऐश्वर्यमय होते हैं,और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा।4उसने अपने आश्चर्यकर्मों का स्मरण कराया है;यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है। (भज. 86:5)5उसने अपने डरवैयों को आहार दिया है;वह अपनी वाचा को सदा तक स्मरण रखेगा।6उसने अपनी प्रजा को जाति-जाति का भाग देने के लिये,अपने कामों का प्रताप दिखाया है\*।7सच्चाई और न्याय उसके हाथों के काम हैं;उसके सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं,8वे सदा सर्वदा अटल रहेंगे,वे सच्चाई और सिधाई से किए हुए हैं।9उसने अपनी प्रजा का उद्धार किया है;उसने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है।उसका नाम पवित्र और भययोग्य है। (लूका 1:49,68)10बुद्धि का मूल यहोवा का भय है;जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं,उनकी समझ अच्छी होती है।उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी।

Chapter 112  
धर्मी व्यक्ति के लक्षण  
  
1यहोवा की स्तुति करो!क्या ही धन्य है वह पुरुष जो यहोवा का भय मानता है,और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्‍न रहता है!2उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा\*;सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी।3उसके घर में धन सम्पत्ति रहती है;और उसका धर्म सदा बना रहेगा।4सीधे लोगों के लिये अंधकार के बीच में ज्योति उदय होती है;वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है।5जो व्यक्ति अनुग्रह करता और उधार देता है,और ईमानदारी के साथ अपने काम करता है, उसका कल्याण होता है।6वह तो सदा तक अटल रहेगा;धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा।7वह बुरे समाचार से नहीं डरता;उसका हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है।8उसका हृदय सम्भला हुआ है, इसलिए वह न डरेगा,वरन् अपने शत्रुओं पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा।9उसने उदारता से दरिद्रों को दान दिया\*,उसका धर्म सदा बना रहेगा;और उसका सींग आदर के साथ ऊँचा किया जाएगा। (2 कुरि. 9:9)10दुष्ट इसे देखकर कुढ़ेगा;वह दाँत पीस-पीसकर गल जाएगा;दुष्टों की लालसा पूरी न होगी। (प्रेरि.7:54)

Chapter 113  
स्तुति के योग्य नाम  
  
1यहोवा की स्तुति करो!हे यहोवा के दासों, स्तुति करो,यहोवा के नाम की स्तुति करो!2यहोवा का नामअब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाएँ!3उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक,यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है।4यहोवा सारी जातियों के ऊपर महान है,और उसकी महिमा आकाश से भी ऊँची है।5हमारे परमेश्‍वर यहोवा के तुल्य कौन है?वह तो ऊँचे पर विराजमान है,6और आकाश और पृथ्वी पर,दृष्टि करने के लिये झुकता है।7वह कंगाल को मिट्टी पर से,और दरिद्र को घूरे पर से उठाकर ऊँचा करता है\*,8कि उसको प्रधानों के संग,अर्थात् अपनी प्रजा के प्रधानों के संग बैठाए। (अय्यू. 36:7)9वह बाँझ को घर में बाल-बच्चों की आनन्द करनेवाली माता बनाता है।यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 114  
फसह का गीत  
  
1जब इस्राएल ने मिस्र से, अर्थात् याकूब के घराने ने अन्य भाषावालों के मध्य से कूच किया,2तब यहूदा यहोवा का पवित्रस्‍थानऔर इस्राएल उसके राज्य के लोग हो गए।3समुद्र देखकर भागा,यरदन नदी उलटी बही। (भज. 77:16)4पहाड़ मेढ़ों के समान उछलने लगे,और पहाड़ियाँ भेड़-बकरियों के बच्चों के समान उछलने लगीं।5हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा?और हे यरदन तुझे क्या हुआ कि तू उलटी बही?6हे पहाड़ों, तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों के समान,और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़-बकरियों के बच्चों के समान उछलीं?7हे पृथ्वी प्रभु के सामने,हाँ, याकूब के परमेश्‍वर के सामने थरथरा। (भज. 96:9)8वह चट्टान को जल का ताल,चकमक के पत्थर को जल का सोता बना डालता है।

Chapter 115  
मूर्तियों की निरर्थकता और परमेश्‍वर की विश्वसनीयता  
  
1हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, वरन् अपने ही नाम की महिमा,अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर।2जाति-जाति के लोग क्यों कहने पाएँ,“उनका परमेश्‍वर कहाँ रहा?”3हमारा परमेश्‍वर तो स्वर्ग में हैं;उसने जो चाहा वही किया है।4उन लोगों की मूरतें\* सोने चाँदी ही की तो हैं,वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं।5उनके मुँह तो रहता है परन्तु वे बोल नहीं सकती;उनके आँखें तो रहती हैं परन्तु वे देख नहीं सकती।6उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकती;उनके नाक तो रहती हैं, परन्तु वे सूंघ नहीं सकती।7उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे स्पर्श नहीं कर सकती;उनके पाँव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकती;और उनके कण्ठ से कुछ भी शब्द नहीं निकाल सकती। (भज. 135:16-17)8जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले हैं;और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएँगे।9हे इस्राएल, यहोवा पर भरोसा रख!तेरा सहायक और ढाल वही है।10हे हारून के घराने, यहोवा पर भरोसा रख!तेरा सहायक और ढाल वही है।11हे यहोवा के डरवैयों, यहोवा पर भरोसा रखो!तुम्हारा सहायक और ढाल वही है।12यहोवा ने हमको स्मरण किया है; वह आशीष देगा;वह इस्राएल के घराने को आशीष देगा;वह हारून के घराने को आशीष देगा।13क्या छोटे क्या बड़े\*जितने यहोवा के डरवैये हैं, वह उन्हें आशीष देगा। (भज. 128:1)14यहोवा तुम को और तुम्हारे वंश को भी अधिक बढ़ाता जाए।15यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है,उसकी ओर से तुम आशीष पाए हो।16स्वर्ग तो यहोवा का है,परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।17मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं,वे तो यहोवा की स्तुति नहीं कर सकते,18परन्तु हम लोग यहोवा कोअब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहते रहेंगे।यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 116  
मृत्यु से बचाव के लिए धन्यवाद  
  
1मैं प्रेम रखता हूँ, इसलिए कि यहोवा ने मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है।2उसने जो मेरी ओर कान लगाया है,इसलिए मैं जीवन भर उसको पुकारा करूँगा।3मृत्यु की रस्सियाँ मेरे चारों ओर थीं;मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था;मुझे संकट और शोक भोगना पड़ा\*। (भज. 18:4-5)4तब मैंने यहोवा से प्रार्थना की,“हे यहोवा, विनती सुनकर मेरे प्राण को बचा ले!”5यहोवा करुणामय और धर्मी है;और हमारा परमेश्‍वर दया करनेवाला है।6यहोवा भोलों की रक्षा करता है;जब मैं बलहीन हो गया था, उसने मेरा उद्धार किया।7हे मेरे प्राण, तू अपने विश्रामस्थान में लौट आ;क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है।8तूने तो मेरे प्राण को मृत्यु से,मेरी आँख को आँसू बहाने से,और मेरे पाँव को ठोकर खाने से बचाया है।9मैं जीवित रहते हुए,अपने को यहोवा के सामने जानकर नित चलता रहूँगा।10मैंने जो ऐसा कहा है, इसे विश्वास की कसौटी पर कसकर कहा है,“मैं तो बहुत ही दुःखित हूँ;” (2 कुरि. 4:13)11मैंने उतावली से कहा,“सब मनुष्य झूठें हैं।” (रोम. 3:4)12यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं,उनके बदले मैं उसको क्या दूँ?13मैं उद्धार का कटोरा उठाकर,यहोवा से प्रार्थना करूँगा,14मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें, सभी की दृष्टि में प्रगट रूप में, उसकी सारी प्रजा के सामने पूरी करूँगा।15यहोवा के भक्तों की मृत्यु,उसकी दृष्टि में अनमोल है\*।16हे यहोवा, सुन, मैं तो तेरा दास हूँ;मैं तेरा दास, और तेरी दासी का पुत्र हूँ।तूने मेरे बन्धन खोल दिए हैं।17मैं तुझको धन्यवाद-बलि चढ़ाऊँगा,और यहोवा से प्रार्थना करूँगा।18मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें,प्रगट में उसकी सारी प्रजा के सामने19यहोवा के भवन के आँगनों में,हे यरूशलेम, तेरे भीतर पूरी करूँगा।यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 117  
स्तुति का भजन  
  
1हे जाति-जाति के सब लोगों, यहोवा की स्तुति करो!हे राज्य-राज्य के सब लोगों, उसकी प्रशंसा करो! (रोम. 15:11)2क्योंकि उसकी करुणा हमारे ऊपर प्रबल हुई है;और यहोवा की सच्चाई सदा की है\*यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 118  
विजय के लिये धन्यवाद  
  
1यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;और उसकी करुणा सदा की है!2इस्राएल कहे,उसकी करुणा सदा की है।3हारून का घराना कहे,उसकी करुणा सदा की है।4यहोवा के डरवैये कहे,उसकी करुणा सदा की है।5मैंने सकेती में परमेश्‍वर को पुकारा\*,परमेश्‍वर ने मेरी सुनकर, मुझे चौड़े स्थान में पहुँचाया।6यहोवा मेरी ओर है, मैं न डरूँगा।मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? (रोम. 8:31, इब्रा 13:6)7यहोवा मेरी ओर मेरे सहायक है;मैं अपने बैरियों पर दृष्टि कर सन्तुष्ट हूँगा।8यहोवा की शरण लेना,मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है।9यहोवा की शरण लेना,प्रधानों पर भी भरोसा रखने से उत्तम है।10सब जातियों ने मुझ को घेर लिया है;परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा।11उन्होंने मुझ को घेर लिया है, निःसन्देह, उन्होंने मुझे घेर लिया है;परन्तु यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा।12उन्होंने मुझे मधुमक्खियों के समान घेर लिया है,परन्तु काँटों की आग के समान वे बुझ गए;यहोवा के नाम से मैं निश्चय उन्हें नाश कर डालूँगा!13तूने मुझे बड़ा धक्का दिया तो था, कि मैं गिर पड़ूँ,परन्तु यहोवा ने मेरी सहायता की।14परमेश्‍वर मेरा बल और भजन का विषय है;वह मेरा उद्धार ठहरा है।15धर्मियों के तम्बुओं में जयजयकार और उद्धार की ध्वनि हो रही है,यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है,16यहोवा का दाहिना हाथ महान हुआ है,यहोवा के दाहिने हाथ से पराक्रम का काम होता है!17मैं न मरूँगा वरन् जीवित रहूँगा\*,और परमेश्‍वर के कामों का वर्णन करता रहूँगा।18परमेश्‍वर ने मेरी बड़ी ताड़ना तो की हैपरन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया। (2 कुरि. 6:9, इब्रा. 12:10-11)19मेरे लिये धर्म के द्वार खोलो,मैं उनमें प्रवेश करके यहोवा का धन्यवाद करूँगा।20यहोवा का द्वार यही है,इससे धर्मी प्रवेश करने पाएँगे। (यूह. 10:9)21हे यहोवा, मैं तेरा धन्यवाद करूँगा,क्योंकि तूने मेरी सुन ली है,और मेरा उद्धार ठहर गया है।22राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया थावही कोने का सिरा हो गया है। (1 पत. 2:4, लूका 20:17)23यह तो यहोवा की ओर से हुआ है,यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है।24आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है;हम इसमें मगन और आनन्दित हों।25हे यहोवा, विनती सुन, उद्धार कर!हे यहोवा, विनती सुन, सफलता दे!26धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है!हमने तुम को यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया है। (मत्ती 23:39, लूका 13:35, मर. 11:9-10 लूका 19:38)27यहोवा परमेश्‍वर है, और उसने हमको प्रकाश दिया है।यज्ञपशु को वेदी के सींगों से रस्सियों से बाँधो!28हे यहोवा, तू मेरा परमेश्‍वर है, मैं तेरा धन्यवाद करूँगा;तू मेरा परमेश्‍वर है, मैं तुझको सराहूँगा।29यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है;और उसकी करुणा सदा बनी रहेगी!

Chapter 119  
परमेश्‍वर की व्यवस्था की श्रेष्ठता पर ध्यानआलेफ1क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं,और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं!2क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चितौनियों को मानते हैं,और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं!3फिर वे कुटिलता का काम नहीं करते,वे उसके मार्गों में चलते हैं।4तूने अपने उपदेश इसलिए दिए हैं\*,कि हम उसे यत्न से माने।5भला होता कितेरी विधियों को मानने के लिये मेरी चालचलन दृढ़ हो जाए!6तब मैं तेरी सब आज्ञाओं की ओर चित्त लगाए रहूँगा,और मैं लज्जित न हूँगा।7जब मैं तेरे धर्ममय नियमों को सीखूँगा,तब तेरा धन्यवाद सीधे मन से करूँगा।8मैं तेरी विधियों को मानूँगा:मुझे पूरी रीति से न तज!व्यवस्था को माननाबेथ9जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे?तेरे वचन का पालन करने से।10मैं पूरे मन से तेरी खोज में लगा हूँ;मुझे तेरी आज्ञाओं की बाट से भटकने न दे!11मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है,कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।12हे यहोवा, तू धन्य है;मुझे अपनी विधियाँ सिखा!13तेरे सब कहे हुए नियमों का वर्णन,मैंने अपने मुँह से किया है।14मैं तेरी चितौनियों के मार्ग से,मानो सब प्रकार के धन से हर्षित हुआ हूँ।15मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा,और तेरे मार्गों की ओर दृष्टि रखूँगा।16मैं तेरी विधियों से सुख पाऊँगा;और तेरे वचन को न भूलूँगा।व्यवस्था में आनन्दगिमेल17अपने दास का उपकार कर कि मैं जीवित रहूँ,और तेरे वचन पर चलता रहूँ\*।18मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था कीअद्भुत बातें देख सकूँ।19मैं तो पृथ्वी पर परदेशी हूँ;अपनी आज्ञाओं को मुझसे छिपाए न रख!20मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारणहर समय खेदित रहता है।21तूने अभिमानियों को, जो श्रापित हैं, घुड़का है,वे तेरी आज्ञाओं से भटके हुए हैं।22मेरी नामधराई और अपमान दूर कर,क्योंकि मैं तेरी चितौनियों को पकड़े हूँ।23हाकिम भी बैठे हुए आपस में मेरे विरुद्ध बातें करते थे,परन्तु तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा।24तेरी चितौनियाँ मेरा सुखमूलऔर मेरे मंत्री हैं।व्यवस्था को मानने का संकल्पदाल्थ25मैं धूल में पड़ा हूँ;तू अपने वचन के अनुसार मुझ को जिला!26मैंने अपनी चालचलन का तुझ से वर्णन किया है और तूने मेरी बात मान ली है;तू मुझ को अपनी विधियाँ सिखा!27अपने उपदेशों का मार्ग मुझे समझा,तब मैं तेरे आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूँगा।28मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है;तू अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल!29मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर;और कृपा करके अपनी व्यवस्था मुझे दे।30मैंने सच्चाई का मार्ग चुन लिया है,तेरे नियमों की ओर मैं चित्त लगाए रहता हूँ।31मैं तेरी चितौनियों में लौलीन हूँ,हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे!32जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा,तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूँगा।समझ के लिये प्रार्थनाहे33हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग सिखा दे;तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूँगा।34मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूँगाऔर पूर्ण मन से उस पर चलूँगा।35अपनी आज्ञाओं के पथ में मुझ को चला,क्योंकि मैं उसी से प्रसन्‍न हूँ।36मेरे मन को लोभ की ओर नहीं,अपनी चितौनियों ही की ओर फेर दे।37मेरी आँखों को व्यर्थ वस्तुओं की ओर से फेर दे\*;तू अपने मार्ग में मुझे जिला।38तेरा वादा जो तेरे भय माननेवालों के लिये है,उसको अपने दास के निमित्त भी पूरा कर।39जिस नामधराई से मैं डरता हूँ, उसे दूर कर;क्योंकि तेरे नियम उत्तम हैं।40देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूँ;अपने धर्म के कारण मुझ को जिला।परमेश्‍वर की व्यवस्था पर भरोसावाव41हे यहोवा, तेरी करुणा और तेरा किया हुआ उद्धार,तेरे वादे के अनुसार, मुझ को भी मिले;42तब मैं अपनी नामधराई करनेवालों को कुछ उत्तर दे सकूँगा,क्योंकि मेरा भरोसा, तेरे वचन पर है।43मुझे अपने सत्य वचन कहने से न रोकक्योंकि मेरी आशा तेरे नियमों पर है।44तब मैं तेरी व्यवस्था पर लगातार,सदा सर्वदा चलता रहूँगा;45और मैं चौड़े स्थान में चला फिरा करूँगा,क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों की सुधि रखी है।46और मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के सामने भी करूँगा,और लज्जित न हूँगा; (रोम.1:16)47क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं के कारण सुखी हूँ,और मैं उनसे प्रीति रखता हूँ।48मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिनमें मैं प्रीति रखता हूँ, हाथ फैलाऊँगाऔर तेरी विधियों पर ध्यान करूँगा।परमेश्‍वर की व्यवस्था में आशाज़ैन49जो वादा तूने अपने दास को दिया है, उसे स्मरण कर,क्योंकि तूने मुझे आशा दी है।50मेरे दुःख में मुझे शान्ति उसी से हुई है,क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैंने जीवन पाया है।51अहंकारियों ने मुझे अत्यन्त ठट्ठे में उड़ाया है,तो भी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा।52हे यहोवा, मैंने तेरे प्राचीन नियमों को स्मरण करकेशान्ति पाई है।53जो दुष्ट तेरी व्यवस्था को छोड़े हुए हैं,उनके कारण मैं क्रोध से जलता हूँ।54जहाँ मैं परदेशी होकर रहता हूँ, वहाँ तेरी विधियाँ,मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं।55हे यहोवा, मैंने रात को तेरा नाम स्मरण किया,और तेरी व्यवस्था पर चला हूँ।56यह मुझसे इस कारण हुआ,कि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए था।व्यवस्था के प्रति भक्तिहेथ57यहोवा मेरा भाग है;मैंने तेरे वचनों के अनुसार चलने का निश्चय किया है।58मैंने पूरे मन से तुझे मनाया है;इसलिए अपने वादे के अनुसार मुझ पर दया कर।59मैंने अपनी चालचलन को सोचा,और तेरी चितौनियों का मार्ग लिया।60मैंने तेरी आज्ञाओं के मानने में विलम्ब नहीं, फुर्ती की है।61मैं दुष्टों की रस्सियों से बन्ध गया हूँ,तो भी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला।62तेरे धर्ममय नियमों के कारणमैं आधी रात को तेरा धन्यवाद करने को उठूँगा।63जितने तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों पर चलते हैं,उनका मैं संगी हूँ।64हे यहोवा, तेरी करुणा पृथ्वी में भरी हुई है;तू मुझे अपनी विधियाँ सिखा!व्यवस्था का महत्वटेथ65हे यहोवा, तूने अपने वचन के अनुसारअपने दास के संग भलाई की है।66मुझे भली विवेक-शक्ति और समझ दे,क्योंकि मैंने तेरी आज्ञाओं का विश्वास किया है।67उससे पहले कि मैं दुःखित हुआ, मैं भटकता था;परन्तु अब मैं तेरे वचन को मानता हूँ\*।68तू भला है, और भला करता भी है;मुझे अपनी विधियाँ सिखा।69अभिमानियों ने तो मेरे विरुद्ध झूठ बात गढ़ी है,परन्तु मैं तेरे उपदेशों को पूरे मन से पकड़े रहूँगा।70उनका मन मोटा हो गया है,परन्तु मैं तेरी व्यवस्था के कारण सुखी हूँ।71मुझे जो दुःख हुआ वह मेरे लिये भला ही हुआ है,जिससे मैं तेरी विधियों को सीख सकूँ।72तेरी दी हुई व्यवस्था मेरे लियेहजारों रुपयों और मुहरों से भी उत्तम है।व्यवस्था का न्याययोध73तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा गया हूँ;मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूँ।74तेरे डरवैये मुझे देखकर आनन्दित होंगे,क्योंकि मैंने तेरे वचन पर आशा लगाई है।75हे यहोवा, मैं जान गया कि तेरे नियम धर्ममय हैं,और तूने अपने सच्चाई के अनुसार मुझे दुःख दिया है।76मुझे अपनी करुणा से शान्ति दे,क्योंकि तूने अपने दास को ऐसा ही वादा दिया है।77तेरी दया मुझ पर हो, तब मैं जीवित रहूँगा;क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूँ।78अहंकारी लज्जित किए जाए, क्योंकि उन्होंने मुझे झूठ के द्वारा गिरा दिया है;परन्तु मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूँगा।79जो तेरा भय मानते हैं, वह मेरी ओर फिरें,तब वे तेरी चितौनियों को समझ लेंगे।80मेरा मन तेरी विधियों के मानने में सिद्ध हो,ऐसा न हो कि मुझे लज्जित होना पड़े।छुटकारे के लिये प्रार्थनाक़ाफ81मेरा प्राण तेरे उद्धार के लिये बैचेन है;परन्तु मुझे तेरे वचन पर आशा रहती है।82मेरी आँखें तेरे वादे के पूरे होने की बाट जोहते-जोहते धुंधली पड़ गईं है;और मैं कहता हूँ कि तू मुझे कब शान्ति देगा?83क्योंकि मैं धुएँ में की कुप्पी के समान हो गया हूँ,तो भी तेरी विधियों को नहीं भूला।84तेरे दास के कितने दिन रह गए हैं?तू मेरे पीछे पड़े हुओं को दण्ड कब देगा?85अहंकारी जो तेरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते,उन्होंने मेरे लिये गड्ढे खोदे हैं।86तेरी सब आज्ञाएँ विश्वासयोग्य हैं;वे लोग झूठ बोलते हुए मेरे पीछे पड़े हैं;तू मेरी सहायता कर!87वे मुझ को पृथ्वी पर से मिटा डालने ही पर थे,परन्तु मैंने तेरे उपदेशों को नहीं छोड़ा।88अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला,तब मैं तेरी दी हुई चितौनी को मानूँगा।व्यवस्था में विश्वासलामेध89हे यहोवा, तेरा वचन,आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।90तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है;तूने पृथ्वी को स्थिर किया, इसलिए वह बनी है।91वे आज के दिन तक तेरे नियमों के अनुसार ठहरे हैं;क्योंकि सारी सृष्टि तेरे अधीन है।92यदि मैं तेरी व्यवस्था से सुखी न होता,तो मैं दुःख के समय नाश हो जाता\*।93मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूँगा;क्योंकि उन्हीं के द्वारा तूने मुझे जिलाया है।94मैं तेरा ही हूँ, तू मेरा उद्धार कर;क्योंकि मैं तेरे उपदेशों की सुधि रखता हूँ।95दुष्ट मेरा नाश करने के लिये मेरी घात में लगे हैं;परन्तु मैं तेरी चितौनियों पर ध्यान करता हूँ।96मैंने देखा है कि प्रत्येक पूर्णता की सीमा होती है,परन्तु तेरी आज्ञा का विस्तार बड़ा और सीमा से परे है।व्यवस्था के प्रति प्रेममीम97आहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूँ!दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।98तू अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे अपने शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान करता है,क्योंकि वे सदा मेरे मन में रहती हैं।99मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूँ,क्योंकि मेरा ध्यान तेरी चितौनियों पर लगा है।100मैं पुरनियों से भी समझदार हूँ,क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को पकड़े हुए हूँ।101मैंने अपने पाँवों को हर एक बुरे रास्ते से रोक रखा है,जिससे मैं तेरे वचन के अनुसार चलूँ।102मैं तेरे नियमों से नहीं हटा,क्योंकि तू ही ने मुझे शिक्षा दी है।103तेरे वचन मुझ को कैसे मीठे लगते हैं,वे मेरे मुँह में मधु से भी मीठे हैं!104तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूँ,इसलिए मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूँ।व्यवस्था का प्रकाशनून105तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक,और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।106मैंने शपथ खाई, और ठान लिया हैकि मैं तेरे धर्ममय नियमों के अनुसार चलूँगा।107मैं अत्यन्त दुःख में पड़ा हूँ;हे यहोवा, अपने वादे के अनुसार मुझे जिला।108हे यहोवा, मेरे वचनों को स्वेच्छाबलि जानकर ग्रहण कर,और अपने नियमों को मुझे सिखा।109मेरा प्राण निरन्तर मेरी हथेली पर रहता है\*,तो भी मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया।110दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है,परन्तु मैं तेरे उपदेशों के मार्ग से नहीं भटका।111मैंने तेरी चितौनियों को सदा के लिये अपना निज भाग कर लिया है,क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण है।112मैंने अपने मन को इस बात पर लगाया है,कि अन्त तक तेरी विधियों पर सदा चलता रहूँ।व्यवस्था में सुरक्षासामेख113मैं दुचित्तों से तो बैर रखता हूँ,परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूँ।114तू मेरी आड़ और ढाल है;मेरी आशा तेरे वचन पर है।115हे कुकर्मियों, मुझसे दूर हो जाओ,कि मैं अपने परमेश्‍वर की आज्ञाओं को पकड़े रहूँ!116हे यहोवा, अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल, कि मैं जीवित रहूँ,और मेरी आशा को न तोड़!117मुझे थामे रख, तब मैं बचा रहूँगा,और निरन्तर तेरी विधियों की ओर चित्त लगाए रहूँगा!118जितने तेरी विधियों के मार्ग से भटक जाते हैं,उन सब को तू तुच्छ जानता है,क्योंकि उनकी चतुराई झूठ है।119तूने पृथ्वी के सब दुष्टों को धातु के मैल के समान दूर किया है;इस कारण मैं तेरी चितौनियों से प्रीति रखता हूँ।120तेरे भय से मेरा शरीर काँप उठता है,और मैं तेरे नियमों से डरता हूँ।परमेश्‍वर की व्यवस्था को माननाऐन121मैंने तो न्याय और धर्म का काम किया है;तू मुझे अत्याचार करनेवालों के हाथ में न छोड़।122अपने दास की भलाई के लिये जामिन हो,ताकि अहंकारी मुझ पर अत्याचार न करने पाएँ।123मेरी आँखें तुझ से उद्धार पाने,और तेरे धर्ममय वचन के पूरे होने की बाट जोहते-जोहते धुँधली पड़ गई हैं।124अपने दास के संग अपनी करुणा के अनुसार बर्ताव कर,और अपनी विधियाँ मुझे सिखा।125मैं तेरा दास हूँ, तू मुझे समझ देकि मैं तेरी चितौनियों को समझूँ।126वह समय आया है, कि यहोवा काम करे,क्योंकि लोगों ने तेरी व्यवस्था को तोड़ दिया है।127इस कारण मैं तेरी आज्ञाओं को सोने से वरन् कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हूँ।128इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को सब विषयों में ठीक जानता हूँ;और सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूँ।व्यवस्था पर चलने की इच्छापे129तेरी चितौनियाँ अद्भुत हैं,इस कारण मैं उन्हें अपने जी से पकड़े हुए हूँ।130तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है\*;उससे निर्बुद्धि लोग समझ प्राप्त करते हैं।131मैं मुँह खोलकर हाँफने लगा,क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं का प्यासा था।132जैसी तेरी रीति अपने नाम के प्रीति रखनेवालों से है,वैसे ही मेरी ओर भी फिरकर मुझ पर दया कर।133मेरे पैरों को अपने वचन के मार्ग पर स्थिर कर,और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे।134मुझे मनुष्यों के अत्याचार से छुड़ा ले,तब मैं तेरे उपदेशों को मानूँगा।135अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमका दे,और अपनी विधियाँ मुझे सिखा।136मेरी आँखों से आँसुओं की धारा बहती रहती है,क्योंकि लोग तेरी व्यवस्था को नहीं मानते।व्यवस्था का न्यायसांदे137हे यहोवा तू धर्मी है,और तेरे नियम सीधे हैं। (भज. 145:17)138तूने अपनी चितौनियों कोधर्म और पूरी सत्यता से कहा है।139मैं तेरी धुन में भस्म हो रहा हूँ,क्योंकि मेरे सतानेवाले तेरे वचनों को भूल गए हैं।140तेरा वचन पूरी रीति से ताया हुआ है,इसलिए तेरा दास उसमें प्रीति रखता है।141मैं छोटा और तुच्छ हूँ,तो भी मैं तेरे उपदेशों को नहीं भूलता।142तेरा धर्म सदा का धर्म है,और तेरी व्यवस्था सत्य है।143मैं संकट और सकेती में फँसा हूँ,परन्तु मैं तेरी आज्ञाओं से सुखी हूँ।144तेरी चितौनियाँ सदा धर्ममय हैं;तू मुझ को समझ दे कि मैं जीवित रहूँ।छुटकारे के लिये प्रार्थनाक़ाफ145मैंने सारे मन से प्रार्थना की है,हे यहोवा मेरी सुन!मैं तेरी विधियों को पकड़े रहूँगा।146मैंने तुझ से प्रार्थना की है, तू मेरा उद्धार कर,और मैं तेरी चितौनियों को माना करूँगा।147मैंने पौ फटने से पहले दुहाई दी;मेरी आशा तेरे वचनों पर थी।148मेरी आँखें रात के एक-एक पहर से पहले खुल गईं,कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूँ।149अपनी करुणा के अनुसार मेरी सुन ले;हे यहोवा, अपनी नियमों के रीति अनुसार मुझे जीवित कर।150जो दुष्टता की धुन में हैं, वे निकट आ गए हैं;वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं।151हे यहोवा, तू निकट है,और तेरी सब आज्ञाएँ सत्य हैं।152बहुत काल से मैं तेरी चितौनियों को जानता हूँ,कि तूने उनकी नींव सदा के लिये डाली है।सहायता के लिये विनतीरेश153मेरे दुःख को देखकर मुझे छुड़ा ले,क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को भूल नहीं गया।154मेरा मुकद्दमा लड़, और मुझे छुड़ा ले;अपने वादे के अनुसार मुझ को जिला।155दुष्टों को उद्धार मिलना कठिन है,क्योंकि वे तेरी विधियों की सुधि नहीं रखते।156हे यहोवा, तेरी दया तो बड़ी है;इसलिए अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला।157मेरा पीछा करनेवाले और मेरे सतानेवाले बहुत हैं,परन्तु मैं तेरी चितौनियों से नहीं हटता।158मैं विश्वासघातियों को देखकर घृणा करता हूँ;क्योंकि वे तेरे वचन को नहीं मानते।159देख, मैं तेरे उपदेशों से कैसी प्रीति रखता हूँ!हे यहोवा, अपनी करुणा के अनुसार मुझ को जिला।160तेरा सारा वचन सत्य ही है;और तेरा एक-एक धर्ममय नियम सदा काल तक अटल है।व्यवस्था के प्रति समर्पणशीन161हाकिम व्यर्थ मेरे पीछे पड़े हैं,परन्तु मेरा हृदय तेरे वचनों का भय मानता है\*। (भज. 119:23)162जैसे कोई बड़ी लूट पाकर हर्षित होता है,वैसे ही मैं तेरे वचन के कारण हर्षित हूँ।163झूठ से तो मैं बैर और घृणा रखता हूँ,परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूँ।164तेरे धर्ममय नियमों के कारण मैं प्रतिदिनसात बार तेरी स्तुति करता हूँ।165तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है;और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।166हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की आशा रखता हूँ;और तेरी आज्ञाओं पर चलता आया हूँ।167मैं तेरी चितौनियों को जी से मानता हूँ,और उनसे बहुत प्रीति रखता आया हूँ।168मैं तेरे उपदेशों और चितौनियों को मानता आया हूँ,क्योंकि मेरी सारी चालचलन तेरे सम्मुख प्रगट है।परमेश्‍वर से सहायता पाने की लालसाताव169हे यहोवा, मेरी दुहाई तुझ तक पहुँचे;तू अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे!170मेरा गिड़गिड़ाना तुझ तक पहुँचे;तू अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा ले।171मेरे मुँह से स्तुति निकला करे,क्योंकि तू मुझे अपनी विधियाँ सिखाता है।172मैं तेरे वचन का गीत गाऊँगा,क्योंकि तेरी सब आज्ञाएँ धर्ममय हैं।173तेरा हाथ मेरी सहायता करने को तैयार रहता है,क्योंकि मैंने तेरे उपदेशों को अपनाया है।174हे यहोवा, मैं तुझ से उद्धार पाने की अभिलाषा करता हूँ,मैं तेरी व्यवस्था से सुखी हूँ।175मुझे जिला, और मैं तेरी स्तुति करूँगा,तेरे नियमों से मेरी सहायता हो।176मैं खोई हुई भेड़ के समान भटका हूँ;तू अपने दास को ढूँढ़ ले,क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं को भूल नहीं गया।

Chapter 120  
परमेश्‍वर से मदद के लिए प्रार्थनायात्रा का गीत  
  
1संकट के समय मैंने यहोवा को पुकारा,और उसने मेरी सुन ली।2हे यहोवा, झूठ बोलनेवाले मुँह सेऔर छली जीभ से मेरी रक्षा कर।3हे छली जीभ,तुझको क्या मिले? और तेरे साथ और क्या अधिक किया जाए?4वीर के नोकीले तीरऔर झाऊ के अंगारे!5हाय, हाय, क्योंकि मुझे मेशेक में परदेशी होकर रहना पड़ाऔर केदार के तम्बुओं में बसना पड़ा है!6बहुत समय से मुझ को मेल के बैरियों के साथ बसना पड़ा है।7मैं तो मेल चाहता हूँ;परन्तु मेरे बोलते\* ही, वे लड़ना चाहते हैं!

Chapter 121  
परमेश्‍वर हमारा रक्षकयात्रा का गीत  
  
1मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर उठाऊँगा।मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी?2मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है,जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।3वह तेरे पाँव को टलने न देगा\*,तेरा रक्षक कभी न ऊँघेगा।4सुन, इस्राएल का रक्षक,न ऊँघेगा और न सोएगा।5यहोवा तेरा रक्षक है;यहोवा तेरी दाहिनी ओर तेरी आड़ है।6न तो दिन को धूप से,और न रात को चाँदनी से तेरी कुछ हानि होगी।7यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा;वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।8यहोवा तेरे आने-जाने मेंतेरी रक्षा अब से लेकर सदा तक करता रहेगा\*।

Chapter 122  
यरूशलेम की शान्ति के लिये प्रार्थनादाऊद की यात्रा का गीत  
  
1जब लोगों ने मुझसे कहा, “आओ, हम यहोवा के भवन को चलें,”तब मैं आनन्दित हुआ।2हे यरूशलेम, तेरे फाटकों के भीतर,हम खड़े हो गए हैं!3हे यरूशलेम, तू ऐसे नगर के समान बना है,जिसके घर एक दूसरे से मिले हुए हैं।4वहाँ यहोवा के गोत्र-गोत्र के लोग यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं;यह इस्राएल के लिये साक्षी है।5वहाँ तो न्याय के सिंहासन\*,दाऊद के घराने के लिये रखे हुए हैं।6यरूशलेम की शान्ति का वरदान माँगो,तेरे प्रेमी कुशल से रहें!7तेरी शहरपनाह के भीतर शान्ति,और तेरे महलों में कुशल होवे!8अपने भाइयों और संगियों के निमित्त,मैं कहूँगा कि तुझ में शान्ति होवे!9अपने परमेश्‍वर यहोवा के भवन के निमित्त,मैं तेरी भलाई का यत्न करूँगा।

Chapter 123  
परमेश्‍वर की दया के लिये प्रार्थनायात्रा का गीत  
  
1हे स्वर्ग में विराजमानमैं अपनी आँखें तेरी ओर उठाता हूँ!2देख, जैसे दासों की आँखें अपने स्वामियों के हाथ की ओर,और जैसे दासियों की आँखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती है,वैसे ही हमारी आँखें हमारे परमेश्‍वर यहोवा की ओर उस समय तक लगी रहेंगी,जब तक वह हम पर दया न करे।3हम पर दया कर, हे यहोवा, हम पर कृपा कर,क्योंकि हम अपमान से बहुत ही भर गए हैं।4हमारा जीव सुखी लोगों के उपहास से,और अहंकारियों के अपमान से\* बहुत ही भर गया है।

Chapter 124  
परमेश्‍वर अपने लोगों का रक्षकदाऊद की यात्रा का गीत  
  
1इस्राएल यह कहे,कि यदि हमारी ओर यहोवा न होता,2यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होताजब मनुष्यों ने हम पर चढ़ाई की,3तो वे हमको उसी समय जीवित निगल जाते\*,जब उनका क्रोध हम पर भड़का था,4हम उसी समय जल में डूब जातेऔर धारा में बह जाते;5उमड़ते जल में हम उसी समय ही बह जाते।6धन्य है यहोवा,जिसने हमको उनके दाँतों तले जाने न दिया!7हमारा जीव पक्षी के समान चिड़ीमार के जाल से छूट गया\*;जाल फट गया और हम बच निकले!8यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है,हमारी सहायता उसी के नाम से होती है।

Chapter 125  
परमेश्‍वर अपने लोगों का बलदाऊद की यात्रा का गीत  
  
1जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं,वे सिय्योन पर्वत के समान हैं,जो टलता नहीं, वरन् सदा बना रहता है।2जिस प्रकार यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं,उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारोंओर अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा\*।3दुष्टों का राजदण्ड धर्मियों के भाग पर बना न रहेगा,ऐसा न हो कि धर्मी अपने हाथ कुटिल काम की ओर बढ़ाएँ।4हे यहोवा, भलों काऔर सीधे मनवालों का भला कर!5परन्तु जो मुड़कर टेढ़े मार्गों में चलते हैं,उनको यहोवा अनर्थकारियों के संग निकाल देगा!इस्राएल को शान्ति मिले! (नीति. 2:15)

Chapter 126  
सिय्योन को हर्षित वापसीयात्रा का गीत  
  
1जब यहोवा सिय्योन में लौटनेवालों को लौटा ले आया,तब हम स्वप्न देखनेवाले से हो गए\*।2तब हम आनन्द से हँसनेऔर जयजयकार करने लगे;तब जाति-जाति के बीच में कहा जाता था,“यहोवा ने, इनके साथ बड़े-बड़े काम किए हैं।”3यहोवा ने हमारे साथ बड़े-बड़े काम किए हैं;और इससे हम आनन्दित हैं।4हे यहोवा, दक्षिण देश के नालों के समान,हमारे बन्दियों को लौटा ले आ!5जो आँसू बहाते हुए बोते हैं,वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे\*।6चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए,परन्तु वह फिर पूलियाँ लिए जयजयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा। (लूका 6:21)

Chapter 127  
परमेश्‍वर का आशीर्वादसुलैमान की यात्रा का गीत  
  
1यदि घर को यहोवा न बनाए,तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे,तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा।2तुम जो सवेरे उठते और देर करके विश्राम करतेऔर कठोर परिश्रम की रोटी खाते हो, यह सब तुम्हारे लिये व्यर्थ ही है;क्योंकि वह अपने प्रियों को यों ही नींद प्रदान करता है।3देखो, बच्चे यहोवा के दिए हुए भाग हैं\*,गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है।4जैसे वीर के हाथ में तीर,वैसे ही जवानी के बच्चे होते हैं।5क्या ही धन्य है वह पुरुष जिसने अपने तरकश को उनसे भर लिया हो!वह फाटक के पास अपने शत्रुओं से बातें करते संकोच न करेगा।

Chapter 128  
परमेश्‍वर का भय मानने की आशीषयात्रा का गीत  
  
1क्या ही धन्य है हर एक जो यहोवा का भय मानता है,और उसके मार्गों पर चलता है\*!2तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा;तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा।3तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी;तेरी मेज के चारों ओर तेरे बच्चे जैतून के पौधे के समान होंगे।4सुन, जो पुरुष यहोवा का भय मानता हो,वह ऐसी ही आशीष पाएगा।5यहोवा तुझे सिय्योन से आशीष देवे\*,और तू जीवन भर यरूशलेम का कुशल देखता रहे!6वरन् तू अपने नाती-पोतों को भी देखने पाए!इस्राएल को शान्ति मिले!

Chapter 129  
सिय्योन के शत्रुओं पर विजय का गीतयात्रा का गीत  
  
1इस्राएल अब यह कहे,“मेरे बचपन से लोग मुझे बार-बार क्लेश देते आए हैं,2मेरे बचपन से वे मुझ को बार-बार क्लेश देते तो आए हैं,परन्तु मुझ पर प्रबल नहीं हुए।3हलवाहों ने मेरी पीठ के ऊपर हल चलाया\*,और लम्बी-लम्बी रेखाएं की।”4यहोवा धर्मी है;उसने दुष्टों के फंदों को काट डाला है;5जितने सिय्योन से बैर रखते हैं,वे सब लज्जित हो, और पराजित होकर पीछे हट जाए!6वे छत पर की घास के समान हों,जो बढ़ने से पहले सूख जाती है;7जिससे कोई लवनेवाला अपनी मुट्ठी नहीं भरता\*,न पूलियों का कोई बाँधनेवाला अपनी अँकवार भर पाता है,8और न आने-जाने वाले यह कहते हैं,“यहोवा की आशीष तुम पर होवे!हम तुम को यहोवा के नाम से आशीर्वाद देते हैं!”

Chapter 130  
करुणामय परमेश्‍वरयात्रा का गीत  
  
1हे यहोवा, मैंने गहरे स्थानों में से तुझको पुकारा है!2हे प्रभु, मेरी सुन!तेरे कान मेरे गिड़गिड़ाने की ओर ध्यान से लगे रहें!3हे यहोवा, यदि तू अधर्म के कामों का लेखा ले,तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा?4परन्तु तू क्षमा करनेवाला है,जिससे तेरा भय माना जाए।5मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूँ,और मेरी आशा उसके वचन पर है;6पहरूए जितना भोर को चाहते हैं\*, हाँ,पहरूए जितना भोर को चाहते हैं,उससे भी अधिक मैं यहोवा को अपने प्राणों से चाहता हूँ।7इस्राएल, यहोवा पर आशा लगाए रहे!क्योंकि यहोवा करुणा करनेवालाऔर पूरा छुटकारा देनेवाला है।8इस्राएल को उसके सारे अधर्म के कामों से वही छुटकारा देगा। (भज. 131:3)

Chapter 131  
एक बच्चे सी आत्मादाऊद की यात्रा का गीत  
  
1हे यहोवा, न तो मेरा मन गर्व सेऔर न मेरी दृष्टि घमण्ड से भरी है;और जो बातें बड़ी और मेरे लिये अधिक कठिन हैं,उनसे मैं काम नहीं रखता।2निश्चय मैंने अपने मन को शान्त और चुप कर दिया है,जैसे दूध छुड़ाया हुआ बच्चा अपनी माँ की गोद में रहता है,वैसे ही दूध छुड़ाए हुए बच्चे के समान मेरा मन भी रहता है\*।3हे इस्राएल, अब से लेकर सदा सर्वदा यहोवा ही पर आशा लगाए रह!

Chapter 132  
मन्दिर के लिये प्रार्थनायात्रा का गीत  
  
1हे यहोवा, दाऊद के लिये उसकी सारी दुर्दशा को स्मरण कर;2उसने यहोवा से शपथ खाई,और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्नत मानी है,3उसने कहा, “निश्चय मैं उस समय तक अपने घर में प्रवेश न करूँगा,और न अपने पलंग पर चढूँगा;4न अपनी आँखों में नींद,और न अपनी पलकों में झपकी आने दूँगा,5जब तक मैं यहोवा के लिये एक स्थान,अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिये निवास स्थान न पाऊँ।” (प्रेरि. 7:46)6देखो, हमने एप्राता में इसकी चर्चा सुनी है,हमने इसको वन के खेतों में पाया है।7आओ, हम उसके निवास में प्रवेश करें,हम उसके चरणों की चौकी के आगे दण्डवत् करें!8हे यहोवा, उठकर अपने विश्रामस्थान मेंअपनी सामर्थ्य के सन्दूक\* समेत आ।9तेरे याजक धर्म के वस्त्र पहने रहें,और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें।10अपने दास दाऊद के लिये,अपने अभिषिक्त की प्रार्थना को अनसुनी न कर।11यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ खाई है और वह उससे न मुकरेगा:“मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्र को बैठाऊँगा। (2 शमू. 7:12, प्रेरि. 2:30)12यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालन करेंऔर जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊँगा, उस पर चलें,तो उनके वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग-युग बैठते चले जाएँगे।”13निश्चय यहोवा ने सिय्योन को चुना है,और उसे अपने निवास के लिये चाहा है।14“यह तो युग-युग के लिये मेरा विश्रामस्थान हैं;यहीं मैं रहूँगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है।15मैं इसमें की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूँगा;और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूँगा।16इसके याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहनाऊँगा,और इसके भक्त लोग ऊँचे स्वर से जयजयकार करेंगे।17वहाँ मैं दाऊद का एक सींग उगाऊँगा\*;मैंने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है। (लूका 1:69)18मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहनाऊँगा,परन्तु उसके सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।”

Chapter 133  
परमेश्‍वर के लोगों की एकतादाऊद की यात्रा का गीत  
  
1देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात हैकि भाई लोग आपस में मिले रहें!2यह तो उस उत्तम तेल के समान है,जो हारून के सिर पर डाला गया था\*,और उसकी दाढ़ी से बहकर,उसके वस्त्र की छोर तक पहुँच गया।3वह हेर्मोन की उस ओस के समान है,जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है!यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है।

Chapter 134  
स्तुति करने का आह्वानयात्रा का गीत  
  
1हे यहोवा के सब सेवकों, सुनो,तुम जो रात-रात को यहोवा के भवन में खड़े रहते हो\*,यहोवा को धन्य कहो। (प्रका. 19:5)2अपने हाथ पवित्रस्‍थान में उठाकर,यहोवा को धन्य कहो।3यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है,वह सिय्योन से तुझे आशीष देवे।

Chapter 135  
यहोवा महान है  
  
1यहोवा की स्तुति करो,यहोवा के नाम की स्तुति करो,हे यहोवा के सेवकों उसकी स्तुति करो, (भज. 113:1)2तुम जो यहोवा के भवन में,अर्थात् हमारे परमेश्‍वर के भवन के आँगनों में खड़े रहते हो!3यहोवा की स्तुति करो, क्योंकि वो भला है;उसके नाम का भजन गाओ, क्योंकि यह मनोहर है!4यहोवा ने तो याकूब को अपने लिये चुना है\*,अर्थात् इस्राएल को अपना निज धन होने के लिये चुन लिया है।5मैं तो जानता हूँ कि यहोवा महान है,हमारा प्रभु सब देवताओं से ऊँचा है।6जो कुछ यहोवा ने चाहाउसे उसने आकाश और पृथ्वी और समुद्रऔर सब गहरे स्थानों में किया है।7वह पृथ्वी की छोर से कुहरे उठाता है,और वर्षा के लिये बिजली बनाता है,और पवन को अपने भण्डार में से निकालता है।8उसने मिस्र में क्या मनुष्य क्या पशु,सब के पहलौठों को मार डाला!9हे मिस्र, उसने तेरे बीच में फ़िरौनऔर उसके सब कर्मचारियों के विरुद्ध चिन्ह और चमत्कार किए\*।10उसने बहुत सी जातियाँ नाश की,और सामर्थी राजाओं को,11अर्थात् एमोरियों के राजा सीहोन को,और बाशान के राजा ओग को,और कनान के सब राजाओं को घात किया;12और उनके देश को बाँटकर,अपनी प्रजा इस्राएल का भाग होने के लिये दे दिया।13हे यहोवा, तेरा नाम सदा स्थिर है,हे यहोवा, जिस नाम से तेरा स्मरण होता है,वह पीढ़ी-पीढ़ी बना रहेगा।14यहोवा तो अपनी प्रजा का न्याय चुकाएगा,और अपने दासों की दुर्दशा देखकर तरस खाएगा। (व्यव.32:36)15अन्यजातियों की मूरतें सोना-चाँदी ही हैं,वे मनुष्यों की बनाई हुई हैं।16उनके मुँह तो रहता है, परन्तु वे बोल नहीं सकती,उनके आँखें तो रहती हैं, परन्तु वे देख नहीं सकती,17उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकती,न उनमें कुछ भी साँस चलती है। (प्रका. 9:20)18जैसी वे हैं वैसे ही उनके बनानेवाले भी हैं;और उन पर सब भरोसा रखनेवाले भी वैसे ही हो जाएँगे!19हे इस्राएल के घराने, यहोवा को धन्य कह!हे हारून के घराने, यहोवा को धन्य कह!20हे लेवी के घराने, यहोवा को धन्य कह!हे यहोवा के डरवैयों, यहोवा को धन्य कहो!21यहोवा जो यरूशलेम में वास करता है,उसे सिय्योन में धन्य कहा जाए!यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 136  
परमेश्‍वर की करुणा सदा की है  
  
1यहोवा का धन्यवाद करो,क्योंकि वह भला है,और उसकी करुणा सदा की है।2जो ईश्वरों का परमेश्‍वर है, उसका धन्यवाद करो,उसकी करुणा सदा की है।3जो प्रभुओं का प्रभु है, उसका धन्यवाद करो,उसकी करुणा सदा की है।4उसको छोड़कर कोई बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म नहीं करता,उसकी करुणा सदा की है।5उसने अपनी बुद्धि से आकाश बनाया,उसकी करुणा सदा की है।6उसने पृथ्वी को जल के ऊपर फैलाया है,उसकी करुणा सदा की है।7उसने बड़ी-बड़ी ज्योतियाँ बनाईं,उसकी करुणा सदा की है।8दिन पर प्रभुता करने के लिये सूर्य को बनाया,उसकी करुणा सदा की है।9और रात पर प्रभुता करने के लिये चन्द्रमा और तारागण को बनाया,उसकी करुणा सदा की है।10उसने मिस्रियों के पहलौठों को मारा,उसकी करुणा सदा की है।11और उनके बीच से इस्राएलियों को निकाला,उसकी करुणा सदा की है।12बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से निकाल लाया,उसकी करुणा सदा की है।13उसने लाल समुद्र को विभाजित कर दिया,उसकी करुणा सदा की है।14और इस्राएल को उसके बीच से पार कर दिया,उसकी करुणा सदा की है;15और फ़िरौन को उसकी सेना समेत लाल समुद्र में डाल दिया,उसकी करुणा सदा की है।16वह अपनी प्रजा को जंगल में ले चला,उसकी करुणा सदा की है।17उसने बड़े-बड़े राजा मारे,उसकी करुणा सदा की है।18उसने प्रतापी राजाओं को भी मारा,उसकी करुणा सदा की है;19एमोरियों के राजा सीहोन को,उसकी करुणा सदा की है;20और बाशान के राजा ओग को घात किया,उसकी करुणा सदा की है।21और उनके देश को भाग होने के लिये,उसकी करुणा सदा की है;22अपने दास इस्राएलियों के भाग होने के लिये दे दिया,उसकी करुणा सदा की है।23उसने हमारी दुर्दशा में हमारी सुधि ली\*,उसकी करुणा सदा की है;24और हमको द्रोहियों से छुड़ाया है,उसकी करुणा सदा की है।25वह सब प्राणियों को आहार देता है\*,उसकी करुणा सदा की है।26स्वर्ग के परमेश्‍वर का धन्यवाद करो,उसकी करुणा सदा की है।

Chapter 137  
बन्धुवाई में इस्राएल का विलापगीत  
  
1बाबेल की नदियों के किनारे हम लोग बैठ गए,और सिय्योन को स्मरण करके रो पड़े!2उसके बीच के मजनू वृक्षों परहमने अपनी वीणाओं को टाँग दिया;3क्योंकि जो हमको बन्दी बनाकर ले गए थे,उन्होंने वहाँ हम से गीत गवाना चाहा,और हमारे रुलाने वालों ने हम से आनन्द चाहकर कहा,“सिय्योन के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत गाओ!”4हम यहोवा के गीत को,पराए देश में कैसे गाएँ?5हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊँ,तो मेरा दाहिना हाथ सूख जाए!6यदि मैं तुझे स्मरण न रखूँ,यदि मैं यरूशलेम को,अपने सब आनन्द से श्रेष्ठ न जानूँ,तो मेरी जीभ तालू से चिपट जाए!7हे यहोवा, यरूशलेम के गिराए जाने के दिन को एदोमियों के विरुद्ध स्मरण कर,कि वे कैसे कहते थे, “ढाओ! उसको नींव से ढा दो!”8हे बाबेल, तू जो जल्द उजड़नेवाली है,क्या ही धन्य वह होगा, जो तुझ से ऐसा बर्ताव करेगा\*जैसा तूने हम से किया है! (प्रका. 18:6)9क्या ही धन्य वह होगा, जो तेरे बच्चों को पकड़कर,चट्टान पर पटक देगा! (यशा. 13:16)

Chapter 138  
परमेश्‍वर की कृपा के लिए धन्यवाददाऊद का भजन  
  
1मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूँगा;देवताओं के सामने भी मैं तेरा भजन गाऊँगा।2मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूँगा,और तेरी करुणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम का धन्यवाद करूँगा;क्योंकि तूने अपने वचन को और अपने बड़े नाम को सबसे अधिक महत्व दिया है।3जिस दिन मैंने पुकारा, उसी दिन तूने मेरी सुन ली,और मुझ में बल देकर हियाव बन्धाया।4हे यहोवा, पृथ्वी के सब राजा तेरा धन्यवाद करेंगे\*,क्योंकि उन्होंने तेरे वचन सुने हैं;5और वे यहोवा की गति के विषय में गाएँगे,क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है।6यद्यपि यहोवा महान है, तो भी वह नम्र मनुष्य की ओर दृष्टि करता है;परन्तु अहंकारी को दूर ही से पहचानता है।7चाहे मैं संकट के बीच में चलूँ तो भी तू मुझे सुरक्षित रखेगा,तू मेरे क्रोधित शत्रुओं के विरुद्ध हाथ बढ़ाएगा,और अपने दाहिने हाथ से मेरा उद्धार करेगा।8यहोवा मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा\*;हे यहोवा, तेरी करुणा सदा की है।तू अपने हाथों के कार्यों को त्याग न दे।

Chapter 139  
परमेश्‍वर का सिद्ध ज्ञानप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, तूने मुझे जाँच कर जान लिया है। (रोम 8:27)2तू मेरा उठना और बैठना जानता है;और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।3मेरे चलने और लेटने की तू भली-भाँति छानबीन करता है,और मेरी पूरी चालचलन का भेद जानता है।4हे यहोवा, मेरे मुँह में ऐसी कोई बात नहींजिसे तू पूरी रीति से न जानता हो।5तूने मुझे आगे-पीछे घेर रखा है\*,और अपना हाथ मुझ पर रखे रहता है।6यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है;यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है।7मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊँ?या तेरे सामने से किधर भागूँ?8यदि मैं आकाश पर चढ़ूँ, तो तू वहाँ है!यदि मैं अपना खाट अधोलोक में बिछाऊँ तो वहाँ भी तू है!9यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूँ,10तो वहाँ भी तू अपने हाथ से मेरी अगुआई करेगा,और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।11यदि मैं कहूँ कि अंधकार में तो मैं छिप जाऊँगा,और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अंधेरा हो जाएगा,12तो भी अंधकार तुझ से न छिपाएगा, रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी;क्योंकि तेरे लिये अंधियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं।13तूने मेरे अंदरूनी अंगों को बनाया है;तूने मुझे माता के गर्भ में रचा।14मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, इसलिए कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूँ।तेरे काम तो आश्चर्य के हैं,और मैं इसे भली भाँति जानता हूँ। (प्रका. 15:3)15जब मैं गुप्त में बनाया जाता,और पृथ्वी के नीचे स्थानों में रचा जाता था,तब मेरी देह तुझ से छिपी न थीं।16तेरी आँखों ने मेरे बेडौल तत्व को देखा;और मेरे सब अंग जो दिन-दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहलेतेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।17मेरे लिये तो हे परमेश्‍वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं!उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है!18यदि मैं उनको गिनता तो वे रेतकणों से भी अधिक ठहरते।जब मैं जाग उठता हूँ, तब भी तेरे संग रहता हूँ।19हे परमेश्‍वर निश्चय तू दुष्ट को घात करेगा!हे हत्यारों, मुझसे दूर हो जाओ।20क्योंकि वे तेरे विरुद्ध बलवा करते और छल के काम करते हैं;तेरे शत्रु तेरा नाम झूठी बात पर लेते हैं।21हे यहोवा, क्या मैं तेरे बैरियों से बैर न रखूँ,और तेरे विरोधियों से घृणा न करूँ? (प्रका. 2:6)22हाँ, मैं उनसे पूर्ण बैर रखता हूँ;मैं उनको अपना शत्रु समझता हूँ।23हे परमेश्‍वर, मुझे जाँचकर जान ले!मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले!24और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं,और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुआई कर!

Chapter 140  
बचाव के लिए प्रार्थनाप्रधान बजानेवाले के लिये दाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मुझ को बुरे मनुष्य से बचा ले;उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर,2क्योंकि उन्होंने मन में बुरी कल्पनाएँ की हैं;वे लगातार लड़ाइयाँ मचाते हैं।3उनका बोलना साँप के काटने के समान है,उनके मुँह में नाग का सा विष रहता है। (सेला) (रोम 3:13, याकू. 3:8)4हे यहोवा, मुझे दुष्ट के हाथों से बचा ले;उपद्रवी पुरुष से मेरी रक्षा कर,क्योंकि उन्होंने मेरे पैरों को उखाड़ने की युक्ति की है।5घमण्डियों ने मेरे लिये फंदा और पासे लगाए,और पथ के किनारे जाल बिछाया है;उन्होंने मेरे लिये फंदे लगा रखे हैं। (सेला)6हे यहोवा, मैंने तुझ से कहा है कि तू मेरा परमेश्‍वर है;हे यहोवा, मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा!7हे यहोवा प्रभु, हे मेरे सामर्थी उद्धारकर्ता,तूने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा की है।8हे यहोवा, दुष्ट की इच्छा को पूरी न होने दे,उसकी बुरी युक्ति को सफल न कर, नहीं तो वह घमण्ड करेगा। (सेला)9मेरे घेरनेवालों के सिर पर उन्हीं का विचारा हुआ उत्पात पड़े!10उन पर अंगारे डाले जाएँ!वे आग में गिरा दिए जाएँ!और ऐसे गड्ढों में गिरें, कि वे फिर उठ न सके!11बकवादी पृथ्वी पर स्थिर नहीं होने का;उपद्रवी पुरुष को गिराने के लिये बुराई उसका पीछा करेगी।12हे यहोवा, मुझे निश्चय है कि तू दीन जन काऔर दरिद्रों का न्याय चुकाएगा।13निःसन्देह धर्मी तेरे नाम का धन्यवाद करने पाएँगे;सीधे लोग तेरे सम्मुख वास करेंगे।

Chapter 141  
पाप और पापियों से संरक्षणदाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मैंने तुझे पुकारा है; मेरे लिये फुर्ती कर!जब मैं तुझको पुकारूँ, तब मेरी ओर कान लगा!2मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्ध धूप\*,और मेरा हाथ फैलाना, संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे! (प्रका. 5:8, प्रका. 8:3,4, नीति. 3:25,1 पत. 3:6)3हे यहोवा, मेरे मुँह पर पहरा बैठा,मेरे होंठों के द्वार की रखवाली कर! (याकू. 1:26)4मेरा मन किसी बुरी बात की ओर फिरने न दे;मैं अनर्थकारी पुरुषों के संग,दुष्ट कामों में न लगूँ,और मैं उनके स्वादिष्ट भोजनवस्तुओं में से कुछ न खाऊँ!5धर्मी मुझ को मारे तो यह करुणा मानी जाएगी,और वह मुझे ताड़ना दे, तो यह मेरे सिर पर का तेल ठहरेगा;मेरा सिर उससे इन्कार न करेगा।दुष्ट लोगों के बुरे कामों के विरुद्ध मैं निरन्‍तर प्रार्थना करता रहूँगा।6जब उनके न्यायी चट्टान के ऊपर से गिराए गए,तब उन्होंने मेरे वचन सुन लिए; क्योंकि वे मधुर हैं।7जैसे भूमि में हल चलने से ढेले फूटते हैं\*,वैसे ही हमारी हड्डियाँ अधोलोक के मुँह पर छितराई गई हैं।8परन्तु हे यहोवा प्रभु, मेरी आँखें तेरी ही ओर लगी हैं;मैं तेरा शरणागत हूँ; तू मेरे प्राण जाने न दे!9मुझे उस फंदे से, जो उन्होंने मेरे लिये लगाया है,और अनर्थकारियों के जाल से मेरी रक्षा कर!10दुष्ट लोग अपने जालों में आप ही फँसें,और मैं बच निकलूँ।

Chapter 142  
अत्याचारी से राहत के लिए याचिकादाऊद का मश्कील, जब वह गुफा में था : प्रार्थना  
  
1मैं यहोवा की दुहाई देता,मैं यहोवा से गिड़गिड़ाता हूँ,2मैं अपने शोक की बातें उससे खोलकर कहता,मैं अपना संकट उसके आगे प्रगट करता हूँ।3जब मेरी आत्मा मेरे भीतर से व्याकुल हो रही थी\*,तब तू मेरी दशा को जानता था!जिस रास्ते से मैं जानेवाला था, उसी में उन्होंने मेरे लिये फंदा लगाया।4मैंने दाहिनी ओर देखा, परन्तु कोई मुझे नहीं देखता।मेरे लिये शरण कहीं नहीं रही, न मुझ को कोई पूछता है।5हे यहोवा, मैंने तेरी दुहाई दी है;मैंने कहा, तू मेरा शरणस्थान है,मेरे जीते जी तू मेरा भाग है।6मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन,क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है!जो मेरे पीछे पड़े हैं, उनसे मुझे बचा ले;क्योंकि वे मुझसे अधिक सामर्थी हैं।7मुझ को बन्दीगृह से निकाल\* कि मैं तेरे नाम का धन्यवाद करूँ!धर्मी लोग मेरे चारों ओर आएँगे;क्योंकि तू मेरा उपकार करेगा।

Chapter 143  
मार्गदर्शन और उद्धार के लिए प्रार्थनादाऊद का भजन  
  
1हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन;मेरे गिड़गिड़ाने की ओर कान लगा!तू जो सच्चा और धर्मी है, इसलिए मेरी सुन ले,2और अपने दास से मुकद्दमा न चला!क्योंकि कोई प्राणी तेरी दृष्टि में निर्दोष नहीं ठहर सकता। (रोम 3:20, 1 कुरि.4:4, गला 2:16)3शत्रु तो मेरे प्राण का गाहक हुआ है;उसने मुझे चूर करके मिट्टी में मिलाया है,और मुझे बहुत दिन के मरे हुओं के समान अंधेरे स्थान में डाल दिया है।4मेरी आत्मा भीतर से व्याकुल हो रही हैमेरा मन विकल है।5मुझे प्राचीनकाल के दिन स्मरण आते हैं,मैं तेरे सब अद्भुत कामों पर ध्यान करता हूँ,और तेरे हाथों के कामों को सोचता हूँ।6मैं तेरी ओर अपने हाथ फैलाए हूए हूँ;सूखी भूमि के समान मैं तेरा प्यासा हूँ। (सेला)7हे यहोवा, फुर्ती करके मेरी सुन ले;क्योंकि मेरे प्राण निकलने ही पर हैं!मुझसे अपना मुँह न छिपा, ऐसा न हो कि मैं कब्र में पड़े हुओं के समान हो जाऊँ।8प्रातःकाल को अपनी करुणा की बात मुझे सुना,क्योंकि मैंने तुझी पर भरोसा रखा है।जिस मार्ग पर मुझे चलना है, वह मुझ को बता दे,क्योंकि मैं अपना मन तेरी ही ओर लगाता हूँ।9हे यहोवा, मुझे शत्रुओं से बचा ले;मैं तेरी ही आड़ में आ छिपा हूँ।10मुझ को यह सिखा, कि मैं तेरी इच्छा कैसे पूरी करूँ, क्योंकि मेरा परमेश्‍वर तू ही है!तेरी भली आत्मा मुझ को धर्म के मार्ग में ले चले\*!11हे यहोवा, मुझे अपने नाम के निमित्त जिला!तू जो धर्मी है, मुझ को संकट से छुड़ा ले!12और करुणा करके मेरे शत्रुओं का सत्यानाश कर,और मेरे सब सतानेवालों का नाश कर डाल,क्योंकि मैं तेरा दास हूँ।

Chapter 144  
बचाव और समृद्धि के लिए प्रार्थनादाऊद का भजन  
  
1धन्य है यहोवा, जो मेरी चट्टान है,वह युद्ध के लिए मेरे हाथों कोऔर लड़ाई के लिए मेरी उँगलियों को अभ्यास कराता है।2वह मेरे लिये करुणानिधान और गढ़,ऊँचा स्थान और छुड़ानेवाला है,वह मेरी ढाल और शरणस्थान है,जो जातियों को मेरे वश में कर देता है।3हे यहोवा, मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुधि लेता है,या आदमी क्या है कि तू उसकी कुछ चिन्ता करता है?4मनुष्य तो साँस के समान है;उसके दिन ढलती हुई छाया के समान हैं।5हे यहोवा, अपने स्वर्ग को नीचा करके उतर आ!पहाड़ों को छू तब उनसे धुआँ उठेगा!6बिजली कड़काकर उनको तितर-बितर कर दे,अपने तीर चलाकर उनको घबरा दे!7अपना हाथ ऊपर से बढ़ाकर मुझे महासागर से उबार,अर्थात् परदेशियों के वश से छुड़ा।8उनके मुँह से तो झूठी बातें निकलती हैं,और उनके दाहिने हाथ से धोखे के काम होते हैं।9हे परमेश्‍वर, मैं तेरी स्तुति का नया गीत गाऊँगा;मैं दस तारवाली सारंगी बजाकर तेरा भजन गाऊँगा। (प्रका. 5:9, प्रका. 14:3)10तू राजाओं का उद्धार करता है,और अपने दास दाऊद को तलवार की मार से बचाता है।11मुझ को उबार और परदेशियों के वश से छुड़ा ले,जिनके मुँह से झूठी बातें निकलती हैं,और जिनका दाहिना हाथ झूठ का दाहिना हाथ है।12हमारे बेटे जवानी के समय पौधों के समान बढ़े हुए हों\*,और हमारी बेटियाँ उन कोनेवाले खम्भों के समान हों, जो महल के लिये बनाए जाएँ;13हमारे खत्ते भरे रहें, और उनमें भाँति-भाँति का अन्न रखा जाए,और हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में हजारों हजार बच्चे जनें;14तब हमारे बैल खूब लदे हुए हों;हमें न विघ्न हो और न हमारा कहीं जाना हो,और न हमारे चौकों में रोना-पीटना हो\*,15तो इस दशा में जो राज्य हो वह क्या ही धन्य होगा!जिस राज्य का परमेश्‍वर यहोवा है, वह क्या ही धन्य है!

Chapter 145  
परमेश्‍वर की महिमा और प्रेम का गीतदाऊद का भजन  
  
1हे मेरे परमेश्‍वर, हे राजा, मैं तुझे सराहूँगा,और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहता रहूँगा।2प्रतिदिन मैं तुझको धन्य कहा करूँगा,और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा करता रहूँगा।3यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है,और उसकी बड़ाई अगम है।4तेरे कामों की प्रशंसा और तेरे पराक्रम के कामों का वर्णन,पीढ़ी-पीढ़ी होता चला जाएगा।5मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा के प्रताप परऔर तेरे भाँति-भाँति के आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करूँगा।6लोग तेरे भयानक कामों की शक्ति की चर्चा करेंगे,और मैं तेरे बड़े-बड़े कामों का वर्णन करूँगा।7लोग तेरी बड़ी भलाई का स्मरण करके उसकी चर्चा करेंगे,और तेरे धर्म का जयजयकार करेंगे।8यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु,विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति करुणामय है।9यहोवा सभी के लिये भला है,और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है।10हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरा धन्यवाद करेगी,और तेरे भक्त लोग तुझे धन्य कहा करेंगे!11वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे,और तेरे पराक्रम के विषय में बातें करेंगे;12कि वे मनुष्यों पर तेरे पराक्रम के कामऔर तेरे राज्य के प्रताप की महिमा प्रगट करें।13तेरा राज्य युग-युग काऔर तेरी प्रभुता सब पीढि़यों तक बनी रहेगी।14यहोवा सब गिरते हुओं को संभालता है,और सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है।15सभी की आँखें तेरी ओर लगी रहती हैं,और तू उनको आहार समय पर देता है।16तू अपनी मुट्ठी खोलकर,सब प्राणियों को आहार से तृप्त करता है।17यहोवा अपनी सब गति में धर्मीऔर अपने सब कामों में करुणामय है\*। (प्रका. 15:3, प्रका. 16:5)18जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते है;उन सभी के वह निकट रहता है\*।19वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करता है,और उनकी दुहाई सुनकर उनका उद्धार करता है।20यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता,परन्तु सब दुष्टों को सत्यानाश करता है।21मैं यहोवा की स्तुति करूँगा,और सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहें।

Chapter 146  
उद्धारकर्ता परमेश्‍वर की स्तुति  
  
1यहोवा की स्तुति करो।हे मेरे मन यहोवा की स्तुति कर!2मैं जीवन भर यहोवा की स्तुति करता रहूँगा;जब तक मैं बना रहूँगा, तब तक मैं अपने परमेश्‍वर का भजन गाता रहूँगा।3तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना,न किसी आदमी पर, क्योंकि उसमें उद्धार करने की शक्ति नहीं।4उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा;उसी दिन उसकी सब कल्पनाएँ नाश हो जाएँगी\*।5क्या ही धन्य वह है,जिसका सहायक याकूब का परमेश्‍वर है,और जिसकी आशा अपने परमेश्‍वर यहोवा पर है।6वह आकाश और पृथ्वी और समुद्रऔर उनमें जो कुछ है, सब का कर्ता है;और वह अपना वचन सदा के लिये पूरा करता रहेगा। (प्रेरि. 4:24, प्रेरि. 14:15, प्रेरि. 17:24, प्रका.10:6, प्रका.14:7)7वह पिसे हुओं का न्याय चुकाता है;और भूखों को रोटी देता है।यहोवा बन्दियों को छुड़ाता है;8यहोवा अंधों को आँखें देता है।यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है;यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है।9यहोवा परदेशियों की रक्षा करता है;और अनाथों और विधवा को तो सम्भालता है\*;परन्तु दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा-मेढ़ा करता है।10हे सिय्योन, यहोवा सदा के लिये,तेरा परमेश्‍वर पीढ़ी-पीढ़ी राज्य करता रहेगा।यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 147  
सर्वशक्तिमान परमेश्‍वर की स्तुति  
  
1यहोवा की स्तुति करो!क्योंकि अपने परमेश्‍वर का भजन गाना अच्छा है;क्योंकि वह मनभावना है, उसकी स्तुति करना उचित है।2यहोवा यरूशलेम को फिर बसा रहा है;वह निकाले हुए इस्राएलियों को इकट्ठा कर रहा है।3वह खेदित मनवालों को चंगा करता है,और उनके घाव पर मरहम-पट्टी बाँधता है\*।4वह तारों को गिनता,और उनमें से एक-एक का नाम रखता है।5हमारा प्रभु महान और अति सामर्थी है;उसकी बुद्धि अपरम्पार है।6यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता है,और दुष्टों को भूमि पर गिरा देता है।7धन्यवाद करते हुए यहोवा का गीत गाओ;वीणा बजाते हुए हमारे परमेश्‍वर का भजन गाओ।8वह आकाश को मेघों से भर देता है,और पृथ्वी के लिये मेंह को तैयार करता है, और पहाड़ों पर घास उगाता है। (प्रेरि. 14:17)9वह पशुओं को और कौवे के बच्चों को जो पुकारते हैं,आहार देता है। (लूका 12:24)10न तो वह घोड़े के बल को चाहता है,और न पुरुष के बलवन्त पैरों से प्रसन्‍न होता है;11यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्‍न होता है\*,अर्थात् उनसे जो उसकी करुणा पर आशा लगाए रहते हैं।12हे यरूशलेम, यहोवा की प्रशंसा कर!हे सिय्योन, अपने परमेश्‍वर की स्तुति कर!13क्योंकि उसने तेरे फाटकों के खम्भों को दृढ़ किया है;और तेरे सन्तानों को आशीष दी है।14वह तेरी सीमा में शान्ति देता है,और तुझको उत्तम से उत्तम गेहूँ से तृप्त करता है।15वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है,उसका वचन अति वेग से दौड़ता है।16वह ऊन के समान हिम को गिराता है,और राख के समान पाला बिखेरता है।17वह बर्फ के टुकड़े गिराता है,उसकी की हुई ठण्ड को कौन सह सकता है?18वह आज्ञा देकर उन्हें गलाता है;वह वायु बहाता है, तब जल बहने लगता है।19वह याकूब को अपना वचन,और इस्राएल को अपनी विधियाँ और नियम बताता है।20किसी और जाति से उसने ऐसा बर्ताव नहीं किया;और उसके नियमों को औरों ने नहीं जाना।यहोवा की स्तुति करो। (रोम 3:2)

Chapter 148  
समस्त सृष्टि परमेश्‍वर की स्तुति करे  
  
1यहोवा की स्तुति करो!यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो,उसकी स्तुति ऊँचे स्थानों में करो!2हे उसके सब दूतों, उसकी स्तुति करो:हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति करो!3हे सूर्य और चन्द्रमा उसकी स्तुति करो,हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी स्तुति करो!4हे सबसे ऊँचे आकाशऔर हे आकाश के ऊपरवाले जल, तुम दोनों उसकी स्तुति करो।5वे यहोवा के नाम की स्तुति करें,क्योंकि उसने आज्ञा दी और ये सिरजे गए\*।6और उसने उनको सदा सर्वदा के लिये स्थिर किया है;और ऐसी विधि ठहराई है, जो टलने की नहीं।7पृथ्वी में से यहोवा की स्तुति करो,हे समुद्री अजगरों और गहरे सागर,8हे अग्नि और ओलों, हे हिम और कुहरे,हे उसका वचन माननेवाली प्रचण्ड वायु!9हे पहाड़ों और सब टीलों,हे फलदाई वृक्षों और सब देवदारों!10हे वन-पशुओं और सब घरेलू पशुओं,हे रेंगनेवाले जन्तुओं और हे पक्षियों!11हे पृथ्वी के राजाओं, और राज्य-राज्य के सब लोगों,हे हाकिमों और पृथ्वी के सब न्यायियों!12हे जवानों और कुमारियों,हे पुरनियों और बालकों!13यहोवा के नाम की स्तुति करो,क्योंकि केवल उसकी का नाम महान है;उसका ऐश्वर्य पृथ्वी और आकाश के ऊपर है।14और उसने अपनी प्रजा के लिये एक सींग ऊँचा किया है\*;यह उसके सब भक्तों के लियेअर्थात् इस्राएलियों के लिये और उसके समीप रहनेवाली प्रजा के लिये स्तुति करने का विषय है।यहोवा की स्तुति करो!

Chapter 149  
न्याय और उद्धार के लिए परमेश्‍वर की स्तुति  
  
1यहोवा की स्तुति करो!यहोवा के लिये नया गीत गाओ,भक्तों की सभा में उसकी स्तुति गाओ! (प्रका. 5:9 प्रका. 14:3)2इस्राएल अपने कर्ता के कारण आनन्दित हो,सिय्योन के निवासी अपने राजा के कारण मगन हों!3वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें,और डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएँ!4क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्‍न रहता है;वह नम्र लोगों का उद्धार करके उन्हें शोभायमान करेगा\*।5भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों;और अपने बिछौनों पर भी पड़े-पड़े जयजयकार करें।6उनके कण्ठ से परमेश्‍वर की प्रशंसा हो,और उनके हाथों में दोधारी तलवारें रहें,7कि वे जाति-जाति से पलटा ले सके;और राज्य-राज्य के लोगों को ताड़ना दें,8और उनके राजाओं को जंजीरों से,और उनके प्रतिष्ठित पुरुषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रखें\*,9और उनको ठहराया हुआ दण्ड देंगे!उसके सब भक्तों की ऐसी ही प्रतिष्ठा होगी।यहोवा की स्तुति करो।

Chapter 150  
प्रशंसा का एक भजन  
  
1यहोवा की स्तुति करो!परमेश्‍वर के पवित्रस्‍थान में उसकी स्तुति करो;उसकी सामर्थ्य से भरे हुए आकाशमण्डल मेंउसकी स्तुति करो!2उसके पराक्रम के कामों के कारणउसकी स्तुति करो\*;उसकी अत्यन्त बड़ाई के अनुसार उसकी स्तुति करो!3नरसिंगा फूँकते हुए उसकी स्तुति करो;सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो!4डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो;तारवाले बाजे और बाँसुरी बजाते हुएउसकी स्तुति करो!5ऊँचे शब्दवाली झाँझ बजाते हुएउसकी स्तुति करो;आनन्द के महाशब्दवाली झाँझ बजाते हुएउसकी स्तुति करो!6जितने प्राणी हैंसब के सब यहोवा की स्तुति करें\*!यहोवा की स्तुति करो!